राष्ट्रीय संस्करण
CopyRight - Jagran.com
वर्ष 3 अंक 6
मूल्य ₹6.00, नई दिल्ली, रविवार, 16 जून 2019
दैनिक जागरण
www.jagran.com
पृष्ठ 14

फिंच के शतक से ऑस्ट्रेलिया ने श्रीलंका को हराया
>> 12

महामुकाबले में टीम इंडिया की नजरें सातवें 'आसमान' पर

हम इस मैच के लिए बहुत ज्यादा भावुक और उत्साहित नहीं हो सकते हैं। हम इसे विश्व कप के बाकी मैचों की तरह ही लेंगे और मैंने टीम को यही कहा है।
-विराट कोहली, कप्तान

विश्व कप : पाक पर लगातार सातवीं जीत की आस

- 131 वनडे में भारत ने 54, पाक ने 73 जीते। चार बेनतीजा
- 6 बार विश्व कप में मुकाबला। सभी मैच भारत ने जीते
- 5 मैच इंग्लैंड में खेले गए, तीन भारत और दो पाक ने जीते
- 1 मैच मैनचेस्टर के ओल्ड ट्रैफर्ड में हुआ, भारत विजयी

वनडे रैंकिंग

भारत	पाकिस्तान
2	7

मौजूदा टीमों में सबसे ज्यादा

1230 रन बनाए हैं धौनी ने पाक के खिलाफ

486 रन बनाए हैं मोहम्मद हफीज ने भारत के खिलाफ

सरफराज अहमद, कप्तान ▶

क्रिकेट महाकुंभ
भारत vs पाकिस्तान
दोपहर 3:00 बजे से
स्थान : मैनचेस्टर
स्टार स्पोर्ट्स नेटवर्क

भारत और पाक मैच को लेकर क्रिकेट जगत में अलग माहौल है। मैं यही कहना चाहूंगा कि यह एक क्रिकेट मैच है और इसे उसी तरह लेना चाहिए।
-मिकी आर्थर, कोच, पाकिस्तान

विश्व कप में दैनिक जागरण

अभिषेक त्रिपाठी ● मैनचेस्टर

इस समय दुनिया में सिर्फ मैनचेस्टर ही ऐसा शहर है, जहां सब आसमान की ओर निहार रहे हैं। और जो इस शहर में नहीं हैं, वे अखबार, टेलीविजन और इंटरनेट सहित अपने सभी स्त्रोतों से पता करने में जुटे हैं कि मैनचेस्टर में रविवार को बारिश होगी या नहीं। आखिर ऐसा हो भी क्यों नहीं, यहां के ओल्ड ट्रैफर्ड मैदान पर भारत-पाकिस्तान के बीच विश्व कप का सबसे बड़ा मुकाबला जो खेला जाना है। ऐसे सभी लोगों से मैं सिर्फ यही कहना चाहूंगा कि अगर मौसम विभाग की मानें तो आसमान में घुमड़ते बादल आपकी उम्मीदों को कुछ हद तक गीला करेंगे, लेकिन मैच होने की पूरी संभावना है। अगर थोड़ी बहुत बारिश होती है तो ओवरों की संख्या में कटौती की जा सकती है। इस सबके बीच विराट एंड कंपनी की नजरें पाक को विश्व कप में लगातार सातवीं बार हराकर सातवें आसमान पर पहुंचने पर हैं।

आम मुकाबला नहीं यह: कप्तान विराट कोहली ने मैच से पहले कहा कि हम अन्य मैच की तरह ही इसमें भी खेलेंगे, लेकिन सबको पता है यह आम मुकाबला नहीं है। दो साल पहले ओवल स्टेडियम में चैंपियंस ट्रॉफी के फाइनल में पाक ने भारत को हराया था। उसके बाद भी विराट ने यही कहा था कि यह एक मैच था, जिसमें उन्होंने अच्छा प्रदर्शन किया और हम हार गए। लेकिन मैदान से निकलते ही भारतीय प्रशंसकों को लूजर-लूजर के नारे झेलने पड़े थे। इसलिए कोई शक नहीं कि रविवार को जब यहां भारत-पाकिस्तान के प्रशंसक जुटेंगे तो 14 डिग्री सेल्सियस तापमान के बावजूद फिजाएं गर्म होंगी और उसका ताप दोनों देशों के सुदूर गांवों तक महसूस किया जाएगा।

भारतीय टीम है मजबूत : इसमें कोई शक नहीं कि टीम इंडिया, पाक के मुकाबले काफी मजबूत है। विराट सेना दक्षिण अफ्रीका और ऑस्ट्रेलिया को हराकर आई है, जबकि सरफराज अहमद की टीम को वेस्टइंडीज और ऑस्ट्रेलिया से हार का सामना करना पड़ा है। हालांकि उसने दुनिया की नंबर-1 इंग्लिश टीम को पराजित किया है। दोनों टीमों का एक-एक मैच बारिश के कारण नहीं हुआ। तटस्थ होकर दोनों टीमों का आकलन करूं तो कह सकता हूं कि मैच में भारत की जीत की संभावनाएं ज्यादा हैं। तो आप अपनी सीट की बेल्ट बांध लें, टेलीविजन और केबल कनेक्शन चेक कर लें, खाने का इंतजाम कर लें और महामुकाबले में भारत का समर्थन करने के लिए तैयार हो जाएं।

पूरी कवरेज >> पेज 12

लोकतंत्र के प्रहरी
आपातकाल के 44 साल

छह साल बिना मुकदमा जेल में बंद रहे बाबू लाल मानव

गाजीपुर : आपातकाल के दौर का जिक्र होते ही बाबू लाल मानव का चेहरा गुस्से से लाल हो जाता है। उस समय सिर्फ सरकार के फैसले का विरोध उनके लिए किस कदर कष्टकारी था, कल्पना कर पाना भी मुश्किल है। न सिर्फ शारीरिक सितम सहना पड़ा, बल्कि मानसिक वेदना और ताड़ना से भी दो-चार होना पड़ा। ● पेज 13

पिता को नमन
फादर्स डे पर विशेष

पंक्चर जोड़ पिता ने दौड़ाई बच्चों के भविष्य की गाड़ी

हमीरपुर : पिता, जीवनदाता हैं और पालनहार भी। धूप में वह छांव हैं तो मन हारने पर विश्वास भी। मुसीबतों की बारिश में समाधान का छाता भी वही हैं। जब कदम डगमगाए तो सहारा बनकर साथ खड़े हुए और भटक गए तो सही राह दिखाई...। आज 'फादर्स डे' पर 'पिता' के समर्पण को समर्पित जागरण विशेष। ● पेज 13

न्यूज गैलरी

राज-नीति ▶ पृष्ठ 3

आतंकवाद एशिया में सबसे गंभीर खतरा : जयशंकर

दुशांबे : विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने कहा कि आतंकवाद एशिया में लोगों के लिए 'सबसे गंभीर खतरा' बना हुआ है। आतंकवादियों और उनकी हरकतों से पीड़ितों को एक ही नजर से नहीं देखा जाना चाहिए। विदेश मंत्री ने ताजिकिस्तान की राजधानी में एक सम्मेलन के दौरान यह बात कही।

नेशनल न्यूज ▶ पृष्ठ 5

डॉक्टर की आत्महत्या से रोहतक पीजीआइ में उबाल

रोहतक : पंडित बीडी शर्मा हेल्थ यूनिवर्सिटी में पीजी डॉक्टर ओमकार के आत्महत्या के बाद उपजा आक्रोश थमने का नाम नहीं ले रहा। यूजी व पीजी डॉक्टर दूसरे दिन भी हड़ताल पर रहे, जिससे मरीजों को परेशानी हुई। पीजीआइ प्रबंधन और डॉक्टरों के बीच सहमति नहीं बन सकी है। लगातार दूसरे दिन हड़ताल के कारण वार्ड, इमरजेंसी और ट्रॉमा सेंटर लगभग खाली पड़े हुए हैं।

अंतरराष्ट्रीय ▶ पृष्ठ 11

हांगकांग में विवादित प्रत्यर्पण कानून पर रोक

हांगकांग : हांगकांग की नेता कैरी लैम ने विवादित प्रत्यर्पण कानून को अनिश्चित समय के लिए टाल दिया है। इस कानून में आरोपितों व संदिग्धों को मुकदमा चलाने के लिए सीधे चीन प्रत्यर्पित करने का प्रावधान था। कई लोग प्रस्तावित कानून को हांगकांग की स्वायत्तता पर खतरा मान रहे हैं।

केंद्र ने ममता से मांगा हिंसा का हिसाब

सख्त रुख ▶ जारी की एक और एडवाइजरी, हिंसा रोकने में विफल रहने का आरोप

2016 के बाद राजनीतिक और चुनावी हिंसा पर जताई गंभीर चिंता

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

लोकसभा चुनाव नतीजों के बाद भी पश्चिम बंगाल की राजनीति गरमाई हुई है। आने वाले दिनों में यह और तल्ख हो सकती है। केंद्रीय गृह मंत्रालय ने लगातार जारी हिंसा के बीच पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी की सरकार पर कानून का शासन लागू करने और आम आदमी को सुरक्षा का अहसास देने में विफल रहने का आरोप लगाया है। राज्य के हालात पर चिंता जताते हुए गृह मंत्रालय ने 2016 से अभी तक हुई राजनीतिक हिंसा और उसके लिए जिम्मेदार लोगों के खिलाफ की गई कार्रवाई का ब्योरा देने को कहा है।

पिछले हफ्ते हिंसा रोकने और दोषी अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई सुनिश्चित करने की एडवाइजरी जारी करने के बाद गृह मंत्रालय ने पश्चिम बंगाल सरकार को नई एडवाइजरी जारी की है। इसमें पश्चिम बंगाल में 2016 के बाद राजनीतिक और चुनावी हिंसा पर गंभीर चिंता जताई गई है। गृह मंत्रालय के अनुसार, 2016 में राज्य में राजनीतिक हिंसा की 509 घटनाएं दर्ज की गई थीं जो 2018 में बढ़कर दोगुने से अधिक 1035 हो गईं। इस साल अभी तक 773 हिंसक घटनाएं हो चुकी हैं। हिंसक घटनाओं की बढ़ती संख्या के अनुपात में उसमें मारे जाने वालों की संख्या भी बढ़ती जा रही है। जहां 2016 में राजनीतिक हिंसा में 36 लोग मारे गए थे, 2018 में मरने वालों की संख्या 96 पहुंच गई। इस साल अभी तक 26 लोग चुनावी हिंसा में मारे जा चुके हैं।

अमित शाह — जागरण आर्काइव

गृह मंत्रालय ने साफ संकेत दिए हैं कि पश्चिम बंगाल में हो रही राजनीतिक हिंसा को लेकर वह मूकदर्शक बना नहीं रह सकता। वह राज्य के ताजा हालात को बहुत गंभीरता से ले रहा है। केंद्रीय गृह मंत्रालय ने राज्य सरकार से यह बताने को कहा है कि राजनीतिक हिंसा रोकने के लिए क्या-क्या कदम उठाए गए हैं। साथ ही यह भी बताने को कहा गया है कि अभी तक हुई हिंसक घटनाओं के लिए जिम्मेदार लोगों की पहचान कर उनके खिलाफ क्या कार्रवाई की गई है। मालूम हो कि चुनाव के वक्त भी पश्चिम बंगाल ही अकेला ऐसा राज्य था जहां हिंसा हुई थी।

बंगाल में हिंसा का दौर जारी, चार की हत्या

कोलकाता : लोस चुनाव से पहले पंचायत प्रधान एवं तृणमूल नेता की हत्या के बाद से सियासी हिंसा की आग में सुलग रहा बंगाल का डोमकल एक बार फिर दहल उठा। बदमाशों ने एक मकान पर धावा बोलकर पंचायत प्रधान के बेटे, बड़े भाई और पड़ोसी की हत्या कर दी। वहीं, खानाकुल में एक अन्य की हत्या कर दी गई। (पूरी खबर पेज-4 पर)

ममता बोलीं, उप्र और गुजरात के लिए जारी करें एडवाइजरी

कोलकाता, जेएनएन : केंद्र की ओर से पश्चिम बंगाल को एक और एडवाइजरी जारी किए जाने से मुख्यमंत्री ममता बनर्जी एक बार फिर बिफर गईं। शनिवार को राज्य सचिवालय में उन्होंने कहा, 'दिल्ली में बैठे-बैठे केंद्र सरकार केवल एडवाइजरी जारी करती रहती है। एडवाइजरी ही जारी करनी है तो उत्तर प्रदेश और गुजरात के लिए जारी करें क्योंकि वहां कानून और स्वास्थ्य व्यवस्था की स्थिति सबसे ज्यादा खराब है। बंगाल की स्थिति काफी बेहतर है। लोकतंत्र में कभी-कभी हड़ताल कर दी जाती है। ममता ने कहा, 'केंद्र के पास अंतरराष्ट्रीय, सुरक्षा और वित्त के अलावा कोई खास काम नहीं है, इसलिए बड़ी-बड़ी बातें करता है। हम केंद्र की एडवाइजरी को लेकर चिंतित नहीं हैं क्योंकि यहां की स्थिति बेहतर है।' मालूम हो कि केंद्र की ओर से जारी पिछली एडवाइजरी पर प्रतिक्रिया देते हुए ममता ने केंद्र और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह पर बदले की भावना से काम करने और राज्य को बदनाम करने का आरोप लगाया था।

पांच लाख करोड़ डॉलर की अर्थव्यवस्था मुमकिन : पीएम

नई दिल्ली में शनिवार को नीति आयोग की पांचवी बैठक की अध्यक्षता करते प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी। साथ में रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, नितिन गडकरी (दोनों बाएं), नीति आयोग के उपाध्यक्ष राजीव कुमार और गृह मंत्री अमित शाह (दोनों दाएं)। प्रेट्र

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

- मोदी ने नीति आयोग की गवर्निंग काउंसिल को किया संबोधित
- कृषि क्षेत्र में संरचनात्मक सुधारों पर भी दिया बल

भारत के लिए अगले पांच साल में पांच लाख करोड़ डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने का लक्ष्य चुनौतीपूर्ण है लेकिन राज्यों के संजीदा प्रयासों से इसे हासिल किया जा सकता है। इसको हासिल करने के लिए राज्यों को अपनी क्षमताओं को पहचानते हुए जिला स्तर पर जीडीपी के लक्ष्य ऊपर रखकर इसकी शुरुआत करनी होगी।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को नीति आयोग की गवर्निंग काउंसिल की बैठक में राज्यों के मुख्यमंत्रियों व केंद्र शासित क्षेत्रों के उप-राज्यपालों और चुनिंदा केंद्रीय मंत्रियों की उपस्थिति में यह बात कही। वहीं जम्मू कश्मीर के राज्यपाल ने बैठक में भाग लिया।

नीति आयोग की गवर्निंग काउंसिल की यह पांचवीं बैठक थी। मोदी ने बैठक के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए कहा कि 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास' के मंत्र को पूरा करने में नीति आयोग को अहम भूमिका निभानी होगी। उन्होंने गरीबी, बेरोजगारी, सूखा, बाढ़, प्रदूषण, भ्रष्टाचार और हिंसा के विरुद्ध सामूहिक लड़ाई का आह्वान किया। हाल में संपन्न आम चुनावों को विश्व की सबसे बड़ी लोकतांत्रिक कवायद करार देते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि अब प्रत्येक व्यक्ति को भारत के विकास के लिए कार्य करने का वक्त है। प्रधानमंत्री ने कहा, '2024 तक भारत को पांच लाख करोड़ डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने का लक्ष्य चुनौतीपूर्ण है लेकिन इसे हासिल किया जा सकता है।' उल्लेखनीय है कि मार्च 2019 के अंत तक अनुमानित भारतीय अर्थव्यवस्था 2.75 लाख करोड़ डॉलर की हो चुकी है।

पांच सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाएं

देश	अर्थव्यवस्था
अमेरिका	19.48
चीन	12.27
जापान	4.8
जर्मनी	3.69
भारत	2.65

(आंकड़े लाख करोड़ डॉलर में)

स्रोत : विश्व बैंक, जीडीपी से संबंधित आंकड़े 2017 के। लेकिन भारत की अर्थव्यवस्था 2019 की शुरुआत में ही 2.75 लाख करोड़ डॉलर हो चुकी है।

मोदी ने राज्यों से उनकी क्षमताओं को पहचानने और जिला स्तर पर जीडीपी के लक्ष्य ऊपर रखने की दिशा में काम करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि गवर्निंग काउंसिल के इस मंच पर मौजूद सभी सदस्यों का एक साझा लक्ष्य 2022 तक नए भारत का निर्माण करना है। उन्होंने कहा कि अल्पावधि और दीर्घकालिक लक्ष्य हासिल करने के लिए सामूहिक जिम्मेदारी पर फोकस होना चाहिए।

सूखे से निपटने को पीएम की 'पर ड्रॉप, मोर क्रॉप' की रणनीति पेज>>3

बिहार में लू लगने से 60 लोगों की मौत

जागरण न्यूज नेटवर्क, गया

- औरंगाबाद में 34, गया में 12, नवादा में 14 लोगों की गई जान
- दिन के करीब दो बजे शुरू हुआ औरंगाबाद में मौत का सिलसिला

आग बरसाती तेज धूप में शनिवार को बिहार के मगध प्रमंडल में 60 लोगों की मौत हो गई। इनमें से 34 अकेले औरंगाबाद के हैं। लू से गया जिले के 12 और नवादा के 14 लोगों की मौत हो गई। शेखपुरा और चतरा के भी एक-एक व्यक्ति की मगध मेडिकल कॉलेज अस्पताल में मौत हो गई। हालांकि, इन दोंनों की लू से मौत होने की पुष्टि नहीं हो पाई है।

औरंगाबाद की घटना ने हर किसी को हिला कर रख दिया। जिले में गर्मी और लू से इतनी बड़ी संख्या में मौत की घटना पहली बार हुई है। बिहार के किसी एक जिले में एक दिन में लू से इतनी मौत कभी नहीं हुई।

औरंगाबाद के सिविल सर्जन डॉ. सुरेंद्र प्रसाद ने लू से 25 लोगों के मरने की पुष्टि की है। हालांकि उन्होंने माना कि इससे ज्यादा मौतें हुई हैं, वे मृतकों का पता लगा रहे हैं। दरअसल, कई लोग शव लेकर अस्पताल से जा चुके थे। वहीं, मगध प्रमंडल के क्षेत्रीय स्वास्थ्य उप निदेशक डॉ. विजय कुमार ने 32 लोगों की मौत की पुष्टि कर दी है। देर रात मगध मेडिकल अस्पताल में औरंगाबाद के दो और लोगों की मौत हो गई। उन्होंने भी कहा कि यह संख्या अभी और बढ़ सकती है। विभिन्न जगहों के करीब डेढ़ दर्जन मरीज मेडिकल कॉलेज लाए गए हैं। डॉक्टरों की टीम अलर्ट हो गई है।

वहीं, जिलाधिकारी अभिषेक सिंह ने देर रात तक गया के 12 लोगों की मौत की पुष्टि की। कइयों का अस्पताल में इलाज चल रहा है। नवादा में भी 14 लोगों की मौत हुई है। इनमें एक की मौत मेडिकल कॉलेज में हुई। नवादा सदर अस्पताल में भी डेढ़ दर्जन मरीज भर्ती हैं।

वहीं, औरंगाबाद में मौत का यह सिलसिला करीब दो बजे दिन से शुरू हुआ। अस्पताल में एक के बाद एक मरीज आते गए। डॉक्टरों ने बताया कि अधिसंख्य मृत अवस्था में ही लाए गए थे। घटना का कारण लू ही है या कहीं कोई वायरल अटैक या फूड प्वाइजनिंग तो नहीं, इस सवाल पर कहा कि यह लू से ही मौत है। वैसे, डॉक्टर हर केस का निरीक्षण कर रहे हैं। क्षेत्रीय स्वास्थ्य उपनिदेशक ने विभागीय प्रधान सचिव को इस त्रासदी से अवगत करा दिया है।

गर्मी ने तोड़ा 53 साल का रिकॉर्ड : राजधानी पटना में शनिवार को गर्मी ने 53 सालों का रिकॉर्ड तोड़ दिया है। शनिवार को यहां अधिकतम तापमान 45.8 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया। इससे पहले नौ जून 1966 को पटना का अधिकतम तापमान 46.6 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया था।

(पूरी खबर पेज-5 पर)

ममता ने मानीं सारी शर्तें, पर हड़ताली डॉक्टर झुकने को तैयार नहीं

जागरण न्यूज नेटवर्क, नई दिल्ली : पश्चिम बंगाल में कोलकाता के नीलरतन सरकार (एनआरएस) मेडिकल कॉलेज अस्पताल में जूनियर डॉक्टरों से मारपीट के विरोध में प्रदेश में पांचवें और देशभर के कई राज्यों में दूसरे दिन भी हड़ताल जारी रही। इस बीच इलाज के अभाव में एक और बच्चे की मौत हो गई। इलाज नहीं मिलने से अब तक बंगाल में छह लोगों की मौत हो चुकी है। दूसरी ओर बंगाल में लगातार चरमरा रही स्वास्थ्य सेवा को पटरी पर लाने के लिए मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने हड़ताली डॉक्टरों की सारे शर्तें मान ली हैं, पर डॉक्टर झुकने को तैयार नहीं। उन्होंने काम पर लौटने की ममता बनर्जी की अपील ठुकरा दी। इससे पहले मुख्य सचिव मलय डे ने नोटिस जारी कर उनकी 10 सूत्री मांगें पूरी करने की बात कही।

(पूरी खबर पेज-5 पर)

छह साल बाद

इस साल सिर्फ 36 दिनों में दर्शनों के लिए केदारनाथ पहुंच चुके हैं 6.32 लाख यात्री, जाहिर है तीर्थयात्रियों की संख्या के लिहाज से नया रिकॉर्ड बनने वाला है। अच्छी बात यह है कि प्रधानमंत्री के ड्रीम प्रोजेक्ट के तहत प्रस्तावित निर्माण कार्य भी तेज हो गए हैं...

आपदा से उबरे केदारनाथ में रचा जा रहा इतिहास

बृजेश भट्ट, रुद्रप्रयाग

उत्तराखंड के केदारनाथ में छह साल पहले 15 जून 2013 को आई त्रासदी का दुख अब सिर्फ यादों में रह गया है, क्योंकि केदारपुरी की तस्वीर पूरी तरह बदल गई है। इसका पूरा श्रेय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को जाता है। उन्होंने ही केदारपुरी का पुनर्निर्माण ड्रीम प्रोजेक्ट के तहत शुरू कराया। यही कारण है कि आपदा के बाद शुरुआती दो साल में जरूर यात्रियों की संख्या कम हुई, लेकिन 2019 में यात्रा शुरू होने के बाद सिर्फ 36 दिन में ही यात्रियों की संख्या 6.32 लाख से अधिक पहुंच चुकी है। सरकार की ओर से जुटाई गई व्यवस्थाओं का ही नतीजा है कि इस बार धाम में पहुंचने वाले यात्री नया रिकॉर्ड बनाने की ओर अग्रसर हैं। इससे यात्रा से जुड़े हजारों व्यापारियों के चेहरे खिले हुए हैं।

तबाही के बाद शायद ही किसी को उम्मीद रही होगी कि इतनी जल्दी केदारनाथ यात्रा पुरानी रंगत में लौट पाएगी, लेकिन आपदा के बाद केदारपुरी में जिस तेजी से बुनियादी सुविधाएं मुहैया कराई गई, वह अपने आप में एक अनूठा उदाहरण है। आपदा में गौरीकुंड हाइवे रुद्रप्रयाग से लेकर गौरीकुंड तक कई स्थानों पर पूरी तरह बह गया था, लेकिन अब इस हाइवे को ऑलवेदर रोड के तहत बनाया जा रहा है। फिलहाल हाइवे की कटिंग का कार्य पूरा हो चुका है। इससे लोगों में केदारनाथ जाने का उत्साह और भी बढ़ गया है।

रुद्रप्रयाग स्थित विश्व प्रसिद्ध केदारनाथ धाम छह साल में पूरी तरह बदल चुका है। केदारनाथ मंदिर के ठीक सामने तैयार किया गया पैदल मार्ग, जो 200 मीटर लंबा व 25 मीटर चौड़ा है। जागरण

यात्रा पड़ावों पर किए शानदार इंतजाम : केदारनाथ समेत पैदल मार्ग के यात्रा पड़ावों पर यात्रियों के ठहरने के लिए पर्याप्त इंतजाम किए गए हैं। धाम में यात्रियों के लिए शानदार कॉटेज बनाए गए हैं। इसके अलावा तीर्थ पुरोहितों के लिए भी 210 भवनों का निर्माण कराया गया है। जबकि नए यात्रा मार्ग के दस किमी हिस्से में भीमबली से लेकर केदारनाथ तक कई छोटे बाजार विकसित किए गए हैं। ऐसे में यह पहला मौका है, जब केदारनाथ में पूरी रात मंदिर दर्शनों के लिए खुला है।

... लेकिन कायम है सिस्टम की सुस्ती

त्रासदी के छह साल बाद भी सिस्टम की सुस्ती साफ झलक रही है। यात्रियों की भीड़ को रेगुलेट करने की दिशा में कोई ठोस पहल नहीं हुई है। इसके साथ ही फोटोमीट्रिक पंजीकरण की व्यवस्था भी हिचकोले खा रही है। ऋषिकेश से रोटेशन में जा रहे यात्रियों का तो पंजीकरण हो रहा है, लेकिन इससे कहीं ज्यादा यात्री बगैर पंजीकरण के सीधे केदारनाथ पहुंच रहे हैं।

केदारनाथ धाम में पहुंचने वाले यात्रियों की संख्या

वर्ष	कुल यात्री
2019	6,32,576 (14 जून तक)
2018	7,32,390
2017	4,71,235
2016	3,49,123
2015	1,59,340
2014	39,500

पीएम के ड्रीम प्रोजेक्ट के तहत हुए कार्य

- मंदाकिनी नदी पर घाट और चबूतरे
- केदारनाथ मंदिर परिसर का चौड़ीकरण और मंदिर के ठीक सामने 200 मीटर लंबे रास्ते का निर्माण
- तीर्थ पुरोहितों के लिए 210 भवन
- धाम में 400 मीटर लंबा आस्था पथ
- केदारनाथ धाम से जुड़ी गरुड़चट्टी
- यात्रियों के रहने के लिए कॉटेज

43.4 डिग्री सेल्सियस अधिकतम तापमान दर्ज हुआ शनिवार को राजधानी में। यह सामान्य से चार डिग्री अधिक रहा। न्यूनतम तापमान 27.8 डिग्री सेल्सियस दर्ज हुआ। मौसम विभाग के मुताबिक, रविवार को दिल्ली के कई इलाकों में धूल भरी आंधी चल सकती है।

www.jagran.com राष्ट्रीय संस्करण
दैनिक जागरण
रविवार 16 जून 2019

नीति आयोग की बैठक में केंद्र से मांगा पूर्ण राज्य का दर्जा

फिर उठाया मुद्दा ▶ केजरीवाल ने कहा, दशकों से उठती रही है मांग

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली

मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने नीति अयोग की बैठक में केंद्र सरकार से दिल्ली के लिए पूर्ण राज्य का दर्जा मांगा है। केजरीवाल ने कहा कि दिल्ली के लिए पूर्ण राज्य जरूरी है। यमुना किनारे झील बनाने की योजना के लिए भी सहायता मांगी गई।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में शनिवार को नई दिल्ली में संपन्न हुई नीति आयोग की बैठक में दिल्ली के मुख्यमंत्री केजरीवाल ने फिर एक बार राजधानी को पूर्ण राज्य का दर्जा दिए जाने की मांग उठाई। उन्होंने कहा कि दिल्ली को पूर्ण राज्य का दर्जा दिए जाने की मांग कई दशकों से उठती रही है। लेकिन केंद्र सरकार ने इस मांग को नकार दिया, जबकि पूर्ण राज्य के बिना दिल्ली का अधिकार अधूरा है। दिल्ली की जनता पूर्ण राज्य चाहती है। उन्होंने कहा कि इस मामले में उस

अरविंद केजरीवाल। फाइल फोटो

फार्मूला पर विचार किया जा सकता है, जिसमें दिल्ली को पूर्ण राज्य मिलने पर केंद्र को भी कोई असुविधा नहीं होगी।

इसके अलावा सीएम ने केंद्रीय करों में दिल्ली को उसकी उचित हिस्सेदारी नहीं दिए जाने पर भी नाराजगी जताई। उन्होंने कहा कि 14वें वित्त आयोग की सिफारिशों के अनुसार दिल्ली को केंद्रीय करों में 42 प्रतिशत हिस्सेदारी मिलनी चाहिए, लेकिन दिल्ली को केवल 325 करोड़ रुपये ही मिलते हैं। इस मांग को भी दिल्ली सरकार लगातार उठा रही है। दिल्ली से केंद्र को करों से करीब एक लाख 60 हजार करोड़ का राजस्व मिलता है।

मुख्यमंत्री ने राजधानी में जलापूर्ति को और बढ़ाने के लिए भी केंद्र सरकार से सहयोग की अपील की। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार यमुना के बाढ़ क्षेत्र में पानी के प्राकृतिक रूप से भंडारण हेतु मेगा प्रोजेक्ट स्थापित करने की दिशा में दिल्ली सरकार का सहयोग करे। उन्होंने कहा कि इस प्रोजेक्ट के लिए आइआइटी दिल्ली से अध्ययन कराया है। इसमें यह बात सामने आई है कि एक साल के बाढ़ के पानी को संरक्षित कर लेने पर दो साल तक दिल्ली में पानी की कमी नहीं होगी। दिल्ली सरकार ने यमुना के बाढ़ क्षेत्र में करीब पांच किलोमीटर झील बनाने की योजना बनाई है।

हाई कोर्ट के आदेश के बाद उलझन में डीयू प्रशासन

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली : दिल्ली हाई कोर्ट के शुक्रवार को आए आदेश के बाद डीयू प्रशासन उलझन में है। शनिवार को दिनभर डीयू के अधिकारी एक-दूसरे से हाई कोर्ट के आदेश पर विचार-विमर्श करते रहे। कई बैठकें भी अधिकारियों के बीच हुईं। सूत्रों से प्राप्त जानकारी के अनुसार शनिवार देर शाम को डीयू के कुलपति प्रोफेसर योगेश त्यागी के साथ दाखिला समिति के कई सदस्यों की बैठक हुई, जिसमें कोर्ट के आदेश पर मंथन चला।

कोर्ट ने शुक्रवार को इकोनॉमिक्स व बीकॉम ऑनर्स पाठ्यक्रमों की पात्रता मानदंड बदले जाने के मामले में सुनवाई करते हुए डीयू प्रशासन को आदेश दिया है कि इन पाठ्यक्रमों में पुराने मानदंड के अनुसार ही इस वर्ष भी दाखिले होंगे। साथ ही 22 जून तक स्नातक पाठ्यक्रमों का पंजीकरण भी बढ़ाने का आदेश दिया था।

डीयू के कई शिक्षकों ने उम्मीद जताई है कि 22 जून तक पंजीकरण की तिथि बढ़ाने के कारण कटऑफ की तारीख भी बदल सकती है। डीयू के पिछले नोटिस के तहत 20 जून को पहली कटऑफ की तारीख निर्धारित थी, लेकिन अब इसे बदला जाएगा। पहली कटऑफ जून के आखिरी हफ्ते में जारी हो सकती है।

पुलिस ने बरामद कीं सौ मोटरसाइकिलें

संवाद सहयोगी, दनकौर

बाइक बोट कंपनी के मालिक संजय भाटी से पूछताछ के बाद पुलिस ने शनिवार देर रात उसके पैतृक गांव चीती स्थित कार्यालय से 100 नई मोटर साइकिलें बरामद की हैं। संजय भाटी पांच दिन की पुलिस रिमांड पर है। पूछताछ के दौरान ही पुलिस ने संजय भाटी से राज उगलवाया। शनिवार देर रात चीती गांव में बाइक बोट कंपनी के कार्यालय में छापा मारकर 100 नई मोटर साइकिलें बरामद की हैं। वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों के आदेश पर सभी मोटरसाइकिलों को पुलिस लाइन भेज दिया गया है।

एसआइटी ग्रेटर नोएडा और दनकौर पुलिस की संयुक्त छापेमारी में शनिवार देर शाम गांव में गर्वित इन्नोवेटिव प्रमोटर्स लिमिटेड कंपनी के पंजीकृत कार्यालय पर छापा मारा गया। कार्यालय का ताला लगा था। पुलिस ने अधिकारियों के आदेश पर ताला तोड़कर कार्यालय के गोदाम में रखी बाइक बोट की 100 नई मोटर साइकिल, बैंक के चैकों से भरे पांच बड़े बैग, जले हुए कंप्यूटर और दस्तावेज व बगैर जले दस्तावेज बरामद किए। पुलिस जांच में यह बात सामने आई है कि साजिश के तहत बाइक बोट के कंपनी कार्यालय में आग लगाई गई थी। सभी सामान को एक ट्रक में भरकर पुलिस लाइन भेजा गया है। मामले की जांच एसआइटी और दादरी पुलिस कर रही है। दादरी कोतवाली में इस संबंध में गर्वित इन्नोवेटिव प्राइवेट लिमिटेड कंपनी के मालिक संजय भाटी के खिलाफ 33 मुकदमे दर्ज हैं। पंजीकृत कार्यालय दनकौर कोतवाली क्षेत्र में होने के कारण दनकौर पुलिस भी छापामार कार्रवाई में साथ रही।

बाइक बोट घोटाला

▶ संजय भाटी से पूछताछ के बाद पुलिस ने कार्यालय पर मारा छापा

यह है मामला : बाइक बोट के मालिक संजय भाटी द्वारा एक पोंजी स्कीम के तहत करीब आठ लाख लोगों के साथ धोखाधड़ी करने का अनुमान है। इस स्कीम का जाल दिल्ली, उत्तर प्रदेश व हरियाणा समेत अन्य कई राज्यों में फैला था। गौरतलब है कि दनकौर कोतवाली क्षेत्र के चिती गांव निवासी संजय भाटी जीआइपीएल बाइक बोट के नाम से पोंजी स्कीम चलाता था। इसके तहत एक वर्ष में निवेशकों का पैसा दो गुना करने का प्रावधान था। इस धंधे की शुरुआत करीब तीन वर्ष पहले मेरठ से हुई थी। इस स्कीम में पुराने निवेशक को नए निवेशक जोड़ने पर प्रति बाइक तीन हजार रुपये का प्रलोभन दिया गया था। आरोपितों के झांसे में आकर बड़ी संख्या में लोग ठगे गए।

खून-पसीने की कमाई गंवा चुके निवेशक 18 को करेंगे प्रदर्शन

जासं, दादरी : अपने खून-पसीने की कमाई गंवा चुके हजारों निवेशक पिछले 15 दिन से जारचा कोतवाली क्षेत्र के कोट गांव स्थित बाइक बोट कंपनी के कार्यालय पर धरने पर बैठे हैं। अपनी रकम वापस करने की मांग को लेकर धरने पर बैठे निवेशकों ने निर्णय लिया है कि यदि कंपनी ने उनकी मेहनत की कमाई शीघ्र वापस नहीं की तो हजारों निवेशक 18 जून को विशाल धरना प्रदर्शन करेंगे। यदि जिला प्रशासन व पुलिस ने उनकी मदद नहीं की तो 21 जून को आत्महत्या करेंगे। लोगों ने बताया कि तीन दिन पहले भी एक निवेशक ने कोट नहर में छलांग लगाकर आत्महत्या करने का प्रयास किया था।

ज्ञात हो कि बाइक बोट कंपनी कार्यालय पर सैकड़ों निवेशक अपनी रकम वापसी की मांग को लेकर पिछले 15 दिन से धरने पर बैठे हैं। शनिवार को विशाल धरना प्रदर्शन व आत्महत्या की धमकी भरा वीडियो सोशल मीडिया वायरल हुआ है जिसमें कहा गया है कि 18 जून को देश भर के निवेशक दादरी कोट गांव पहुंचकर धरना प्रदर्शन करेंगे और 21 जून को धरने पर बैठा एक निवेशक आत्मदाह करेगा।

न्यूज गैलरी

गुरुग्राम में स्पेन की युवती से दुष्कर्म, आरोपित गिरफ्तार

गुरुग्राम : फेसबुक पर 23 वर्षीय स्पेनिश युवती से दोस्ती कर हाउस पार्टी में उसके साथ दुष्कर्म की घटना सामने आई है। घटना शुक्रवार रात डीएलएफ फेज-एक की है। पुलिस ने आरोपित को गिरफ्तार कर लिया है, जो मूलतः आनंद विहार, दिल्ली का निवासी है और इन दिनों डीएलएफ फेज-1 में किरायेदार है। युवती स्पेन से एक माह पहले गुरुग्राम की एक कंपनी में इंटर्नशिप के लिए पहुंची थी। वह किराये के एक घर की तलाश में थी। वहीं, अंजनेय अपना एक कमरा किराये पर देना चाहता था। उसने फेसबुक पर पोस्ट डाला जिसमें उसका फोन नंबर भी था। युवती ने उस नंबर पर फोन किया तो अंजनेय ने उसे शुक्रवार रात को आयोजित हाउस पार्टी में बुला लिया। युवती का आरोप है कि इसी पार्टी में अंजनेय ने उसके साथ दुष्कर्म किया। युवती अपने चेकअप के लिए सेक्टर-10 स्थित सरकारी अस्पताल पहुंची और वहीं से पुलिस को घटना की जानकारी दी। (जासं)

सुशील शर्मा मामले में सुप्रीम कोर्ट जाएगी दिल्ली सरकार

नई दिल्ली : तंदूर हत्याकांड के दोषी सुशील कुमार शर्मा की रिहाई को दिल्ली सरकार सुप्रीम कोर्ट में चुनौती देगी। गृहमंत्री सत्येंद्र जैन ने अपने विभाग से शर्मा को रिहाई के लिए दिल्ली हाई कोर्ट के पिछले साल के आदेश को चुनौती देते हुए विशेष अवकाश याचिका दायर करने को कहा है। पूर्व कांग्रेस नेता शर्मा को जुलाई 1995 में गिरफ्तार किया गया था। उसे अपनी पत्नी नैना साहनी को मारने और शव काटकर तंदूर में जलाने का दोषी ठहराया गया था। सूत्र ने बताया कि प्रक्रिया के अनुसार फैसले के 90 दिनों के भीतर विशेष याचिका दायर की जानी चाहिए। इस मामले में गृह विभाग की योजना है कि एसएलपी के साथ देरी के कारणों का विवरण देते हुए आवेदन किया जाए, ताकि शर्मा को फिर से सलाखों के पीछे पहुंचाया जा सके। शर्मा को हाई कोर्ट ने दिसंबर 2018 में रिहाई दे दी थी। (जासं)

छत्तीसगढ़ से लाकर दिल्ली में 40 हजार में बेची किशोरी

फरीदाबाद : छत्तीसगढ़ से काम के बहाने लाकर 14 वर्षीय किशोरी को 40 हजार रुपये में दिल्ली में बेचे जाने का मामला चाइल्ड वेलफेयर कमेटी (सीडब्ल्यूसी) के सामने आया है। कुछ दिन पहले सेक्टर-8 थाना पुलिस को 14 वर्षीय किशोरी सड़क पर लावारिस घूमते मिली थी। पुलिस ने उसे सीडब्ल्यूसी को सौंप दिया। सीडब्ल्यूसी ने एक संस्था के माध्यम से उसका इलाज कराया। किशोरी ने बताया कि गीता नाम की महिला उसे छत्तीसगढ़ से काम दिलाने के बहाने लाई थी और दिल्ली के तिलक नगर में एक कोठी में 40 हजार रुपये में बेच दिया। कोठी में उसको बंधक बना लिया गया। मौका पाकर किशोरी भाग निकली और पुलिस को मिली। (जासं)

मुफ्त नहीं, स्वच्छ वातावरण वाली दिल्ली चाहिए : तिवारी

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली

दिल्ली भाजपा के अध्यक्ष मनोज तिवारी ने भाजपा के ओबीसी मोर्चा की चुनाव समीक्षा बैठक को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि लोकसभा चुनाव में दिल्ली की सातों सीटों पर प्रचंड जीत भारत की संस्कृति, परंपरा व युवाओं के सपनों की जीत है। कार्यकर्ताओं द्वारा बूथ पर की गई मेहनत का परिणाम हमें विजय के रूप में मिला है।

प्रदेश कार्यालय में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मनोज तिवारी ने कहा कि मेट्रोमैन ई श्रीधरन के मुताबिक मेट्रो की मुफ्त सवारी से देश के विभिन्न शहरों में चल रही मेट्रो व्यवस्था पूरी तरह से चरमरा जाएगी। हर शहर में मेट्रो में मुफ्त यात्रा की मांग उठने लगी है। अभी तक राजनीति से दूर रही मेट्रो राजनीति की भेंट चढ़ जाएगी।

उन्होंने कहा कि दिल्ली में भीषण गर्मी का प्रकोप दिन-प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है। परिणामस्वरूप पानी की समस्या ने विकराल रूप धारण कर लिया है। लेकिन मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल केवल राजनीति कर दिल्ली के लोगों के साथ धोखा कर रहे हैं। केजरीवाल सरकार ने टैंकर माफियाओं से साठगांठ की हुई है इसलिए टैंकर माफिया पर कोई कार्रवाई नहीं हो रही।

अगर दिल्ली परिवहन निगम (डीटीसी) की बात करें तो केजरीवाल सरकार बनने के दौरान 6800 बसें थीं, लेकिन अब 3800 ही बची हैं। केजरीवाल ने बीते साढ़े चार वर्ष में एक भी नई बस नहीं खरीदी है। ऐसे में महिलाओं के लिए बसों में मुफ्त यात्रा की परिकल्पना कैसे सार्थक होगी। उन्होंने कहा कि लोगों को मुफ्त नहीं, बल्कि स्वच्छ वातावरण वाली दिल्ली चाहिए। प्रदेश संगठन महामंत्री सिद्धार्थन ने कहा कि लोकसभा की तर्ज पर विधानसभा में भी पूर्ण बहुमत की सरकार बनानी होगी। इसके लिए लोगों से जनसंपर्क करके जुड़ाव रखना होगा। ओबीसी मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष गौरव खारी ने कहा कि विधानसभा चुनाव में भाजपा की सरकार बनाने में ओबीसी मोर्चा के कार्यकर्ताओं का भी अहम योगदान होगा।

दिल्ली प्रदेश भाजपा मुख्यालय में ओबीसी मार्चा की ओर से आयोजित चुनाव समीक्षा बैठक में प्रदेश अध्यक्ष मनोज तिवारी का अभिनंदन करते कार्यकर्ता। फोटो : सौजन्य भाजपा

श्रीधरन के पत्र पर संजय सिंह ने दिया जवाब

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली : दिल्ली मेट्रो में महिलाओं को मुफ्त यात्रा उपलब्ध कराने के फैसले के विरोध में शुक्रवार को मेट्रोमैन ई श्रीधरन के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को लिखे गए पत्र के बाद आम आदमी पार्टी (आप) ने अपना पक्ष रखा है। आप के नेता व राज्यसभा सदस्य संजय सिंह ने कहा है कि ई श्रीधरन एक सम्मानीय व्यक्ति हैं। लेकिन इस योजना को लेकर उनके मन में कुछ दुविधा है। वह इसके फायदे पूरी तरह से समझ नहीं पाए हैं।

उन्होंने कहा कि दिल्ली मेट्रो की वर्तमान क्षमता 40 लाख यात्री प्रतिदिन है, जबकि अभी वह 25 लाख यात्रियों को ही ले जा रही है, जो इसकी क्षमता से 15 लाख कम है। मुफ्त यात्रा योजना लागू हो जाने पर करीब तीन लाख महिलाओं के प्रतिदिन यात्रा करने का अनुमान है। इसके बाद भी मेट्रो की पूरी यात्री क्षमता का प्रयोग नहीं हो पाएगा। सिंह ने कहा कि ऐसे लोग जो यह कह रहे हैं कि मेट्रो में भीड़ बढ़ जाएगी, उनकी यह बहस बिल्कुल बेबुनियाद है। लोग यह भी कह रहे हैं कि मुफ्त यात्रा से दिल्ली मेट्रो का राजस्व कैसे बढ़ेगा, तो मैं बता देना चाहता हूं कि इस योजना के लिए दिल्ली सरकार मेट्रो को पैसे देगी। इससे डीएमआरसी का राजस्व बढ़ेगा। उन्होंने कहा कि यह योजना महिला सुरक्षा के लिहाज से भी महत्वपूर्ण है क्योंकि अभी महिलाएं टैक्सियों का सहारा लेती हैं।

कारोबारी के नाबालिग बेटे की कार ने नाना-नाती को कुचला

जागरण संवाददाता, फरीदाबाद

▶ घर के बाहर नाती को लेकर चारपाई पर बैठे थे 50 वर्षीय रमेश

▶ कार में दो नाबालिग दोस्तों संग मस्ती के लिए निकला था आरोपित

दोस्तों संग मस्ती करने निकले कारोबारी के नाबालिग बेटे की तेज रफ्तार कार ने शनिवार सुबह बाईपास पर सड़क किनारे प्रेमनगर झुग्गी में कहर बरपाया। कार चालक ने घर के बाहर चारपाई पर बैठे नाना और नाती को कुचल डाला। इससे दोनों की मौत हो गई। कार में सवार चालक सहित तीन किशोर को मामूली चोटें आई हैं। मृतकों के परिजनों ने घटना के विरोध में थाने में हंगामा किया। पोस्टमार्टम के बाद उन्होंने शव रखकर सेक्टर-18 में जाम लगा दिया। बाद में पुलिस ने उन्हें समझाकर जाम खुलवाया।

पुलिस के अनुसार रमेश (50) स्वीपर का काम करते थे। उनका घर बाईपास किनारे प्रेमनगर झुग्गियों में है। बेटी विजयरानी ससुराल से कुछ दिन पहले ही मायके आई थी। रमेश रात को झुग्गी के बाहर चारपाई पर सोए थे। सुबह करीब छह बजे नाती विहान (4) के जागने पर वह उसे गोद में लेकर चारपाई पर बैठे गए। इसी दौरान बल्लभगढ़ की तरफ से आई तेज रफ्तार होंडा अमेज कार चारपाई पर बैठे रमेश और विहान को रौंदते हुए आगे ऑटो से टकराकर रुकी। शोर सुनकर लोग घरों से बाहर निकले तो देखा कि रमेश और विहान लहूलुहान पड़े थे। लोगों ने कार से तीनों किशोरों को भी बाहर निकाला। ओल्ड फरीदाबाद थाना पुलिस ने तीनों किशोरों को हिरासत में लेकर थाने पहुंचाया। रमेश व विहान को अस्पताल लेकर गए। डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। कार सवार चालक सहित तीनों लड़कों की उम्र 16 के आस-पास है। वे दसवीं कक्षा के छात्र हैं। कार सेक्टर-7 निवासी एक टाइल्स कारोबारी की है। उसका दिल्ली में टाइल्स का शोरूम है। उसका बेटा ही कार चला रहा था। साथ बैठा एक किशोर सेक्टर-14, जबकि दूसरा सेक्टर-16 निवासी है। उनके पिता भी कारोबारी हैं। वे कार लेकर सेक्टर-28 में अपने चौथे दोस्त को लेने जा रहे थे। इसी दौरान हादसा हो गया।

> पूछताछ में कार चला रहे किशोर ने अपनी उम्र 16 साल एक महीना बताई। साथ बैठे किशोरों में एक ने 15 साल नौ महीना और दूसरे ने 16 साल तीन महीने बताई है। परिजनों से इनके कागजात मंगाए, जिनसे उम्र की पुष्टि हुई। सभी को जुवेनाइल जस्टिस बोर्ड के समक्ष पेश किया जाएगा।
>
> **-सब इंस्पेक्टर वीरपाल, प्रभारी, ओल्ड फरीदाबाद थाना**

सीए के छात्र की अपहरण के बाद हत्या, फिरौती भी वसूली

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली

शकरपुर इलाके से चार्टर्ड अकाउंटेंट (सीए) के छात्र की अपहरण के बाद 18 मई को हत्या कर दी गई। अब एक आरोपित की गिरफ्तारी के बाद हत्या के राज से परदा उठा है। पता चला कि हत्या से पहले छात्र के परिजनों से फिरौती भी वसूली गई। मृतक की पहचान चंदन झा (28) के रूप में हुई है। गिरफ्तार आरोपित अंकित चंदन की कैब का ही चालक है।

मूलरूप से मधुबनी, बिहार निवासी चंदन शकरपुर के स्कूल ब्लॉक इलाके में किराये के मकान में रहते थे। वह सीए अंतिम वर्ष की पढ़ाई कर रहे थे। घर खर्च के लिए उन्होंने एक स्विफ्ट डिजायर कार को ओला और उबर में कैब के रूप में लगाया हुआ था। अंकित उनके यहां चालक था। 15 मई को अंकित चंदन के पास अपना वेतन लेने गया था। चंदन ने उसे चार और पांच हजार रुपये के दो चेक दे दिए। इसके बाद चंदन ने अंकित को कहा कि वह उसे गाजीपुर सीएनजी पंप तक छोड़ देंगे। वहां पहुंचने पर अंकित चंदन को बहुआपुरा गांव, कौशांबी, गाजियाबाद में रहने वाले श्याम के घर ले गया। वहां पार्टी करने के बाद दोनों ने उन्हें बंधक बना लिया। आरोपितों ने चंदन से उनकी मां को फिरौती के लिए फोन कराया था। अगले दिन चंदन के दोस्त अखिलेश को भी फोन कराया गया। लेकिन दोनों जगह से पैसे का इंतजाम नहीं हो पाया। इसके बाद दिल्ली में ही रहने वाले चंदन के जीजा हरि नारायण को फोन किया गया। उन्होंने 17 मई को 1,62,000 रुपये आरोपितों के खाते में डाल दिए। आरोपितों ने रात आठ बजे तक चंदन को छोड़ने की कही थी, लेकिन छोड़ा नहीं। 18 मई को तड़के 4:30 बजे चंदन को कहीं चलने की बात कहकर आरोपित कार में लेकर निकल गए। अंकित कार चला रहा था। चंदन साथ वाली सीट पर थे। श्याम पीछे बैठा था। उसी दौरान श्याम ने रस्सी से चंदन का गला घोंट दिया। इसके बाद शव को गौतमबुद्ध नगर में फेंककर फरार हो गए। आरोपितों ने कार को भी मोदीनगर के पास गंगनहर में फेंक दिया। पुलिस ने कार भी बरामद कर ली है। इधर, 15 मई को चंदन की बहन कविता ने शकरपुर थाने में अपहरण की सूचना दे दी थी। पुलिस केस दर्ज कर मामले की जांच करती रही। शुक्रवार को आखिरकार पुलिस ने अंकित को पकड़ा। उससे सख्ती से पूछताछ की तो सारा मामला खुल गया। पुलिस टीम परिवार को लेकर नोएडा पहुंची तो पता चला कि शिनाख्त नहीं होने के कारण गौतमबुद्ध नगर पुलिस शव का अंतिम संस्कार कर चुकी है।

फैक्ट्री में लगी आग, झुलसने से एक कर्मचारी की मौत

जागरण संवाददाता, ग्रेटर नोएडा : सूरजपुर साइट बी स्थित पीजी इलेक्ट्रो प्लास्ट फैक्ट्री में शार्ट सर्किट से आग लग गई। फायर विभाग के 12 वाहनों ने लगभग सात घंटे की मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया। आग की चपेट में आने से एक कर्मचारी की मौत हो गई। आग के कारण फैक्ट्री में रखा लाखों रुपये का माल जलकर राख हो गया।

साइट बी में स्थित पीजी इलेक्ट्रो प्लास्ट फैक्ट्री में एलजी व सैमसंग के लिए प्लास्टिक पार्ट्स बनाए जाते हैं। फैक्ट्री चार मंजिल की है। रात में करीब सवा दो बजे फैक्ट्री के दूसरे फ्लोर में आग लग गई। उस समय लगभग ढाई सौ कर्मचारी काम कर रहे थे। आग लगते ही कर्मचारियों में भगदड़ मच गई। लोगों ने घटना की सूचना फायर विभाग को दी। कर्मचारियों ने फैक्ट्री में लगे उपकरणों से आग पर काबू पाने का प्रयास किया, लेकिन सफल नहीं हुए। कुछ देर में आग तीसरे फ्लोर तक पहुंच गई। सूचना के बाद मौके पर पहुंची दमकल कर्मियों ने आग पर काबू पाने का प्रयास शुरू किया। बड़ी आग को देखते हुए मौके पर दस फायर वाहन बुलाए गए। कर्मचारियों ने लगभग सात घंटे की मशक्कत के बाद सुबह साढ़े नौ बजे तक आग पर काबू पाया। आग बुझाने के बाद कर्मचारी जब तीसरे फ्लोर पर पहुंचे तो एक व्यक्ति झुलसा पड़ा था। पास जाकर देखा गया तो उसकी मौत हो चुकी थी। मृतक की पहचान प्रशांत शाक्य (19) के रूप में हुई है।

सामाजिक सुरक्षा के लिए बुजुर्गों ने किया मार्च...

विश्व बुजुर्ग दुर्व्यवहार रोकथाम जागरूकता दिवस पर बुजुर्गों ने युवाओं के साथ जंतर-मंतर पर शांतिपूर्ण मार्च किया। कंफेडरेशन ऑफ सीनियर सिटीजन एसोसिएशन ऑफ दिल्ली की गवर्निंग बॉडी के चेयरमैन जेआर गुप्ता ने कहा कि आज के समय में बुजुर्गों के साथ उनके बच्चे दुर्व्यवहार करते हैं, जो शर्मनाक है। इस मार्च का उद्देश्य केंद्र, दिल्ली सरकार और पुलिस का ध्यान इस ओर केंद्रित करना है। बुजुर्गों का कहना था कि केंद्र सरकार की ओर से बुजुर्गों को आर्थिक व सामाजिक सुरक्षा देने के लिए वर्ष 1999 में आई पॉलिसी को अब तक लागू नहीं किया गया। ध्रुव कुमार

तैयारी

25 वातानुकूलित लग्जरी बसें कराई जाएंगी उपलब्ध, ई-गाइड की मिलेगी सुविधा और बसों का टिकट 500 से घटाकर 100 रुपये किया जाएगा

हाईटेक होगी दिल्ली की हो-हो बस सेवा

वीके शुक्ला, नई दिल्ली

हो-हो (होप ऑन होप ऑफ) बस सेवा में दिल्ली पर्यटन एवं परिवहन विकास निगम (डीटीटीडीसी) नई जान डालेगा। दिल्ली में पर्यटकों को घुमाने के लिए अब 25 वातानुकूलित लग्जरी बसें उपलब्ध कराई जाएंगी। पर्यटकों को दिल्ली दिखाने के लिए तीन रूट बनाए जाएंगे। इनसे करीब 50 स्मारक व अन्य विशेष स्थान जोड़े जाएंगे। बसों में ई-गाइड उपलब्ध होंगे। बसों का टिकट 500 से घटाकर 100 रुपये किया जाएगा।

बता दें कि दिल्ली में पिछले कई साल से हो हो बस सेवा चल रही है। दिल्ली पर्यटन एवं परिवहन विकास निगम इसे पर्यटकों की सुविधा के लिए चला रहा है। इस बस में टिकट लेकर आप प्रमुख स्मारकों व अन्य महत्वपूर्ण स्थानों पर जा सकते हैं। सरकार की योजना यह थी कि पर्यटक दिल्ली आने पर इन बसों के माध्यम से राजधानी का भ्रमण कर सकें। मगर यह योजना सफल नहीं हो पाई। इसके चलते इस सेवा की बसें लगातार हटाई जाती रही हैं। अब केवल छह बसें इस सेवा में चल रही हैं। मगर इनमें भी पर्यटकों की संख्या बेहद कम रहती है। दिल्ली सरकार इस सुविधा को सुधारने का प्रयास करती रही है। इसके तहत जनवरी 2017 में इन बसों के टिकट दिल्ली सरकार ने कार्यक्रमों की ऑनलाइन बुकिंग करने वाली वेबसाइट बुक माई शो से ऑनलाइन उपलब्ध कराने की भी व्यवस्था की है। बावजूद इसके इस सेवा की स्थिति में सुधार नहीं हो सका है।

हो-हो बस। फाइल फोटो

डीटीटीडीसी ने अब इस सेवा के सुधार के लिए बड़ी योजना बनाई है। डीटीटीडीसी का कहना है कि इस योजना को शुरू करने का मकसद पैसा कमाना नहीं, बल्कि पर्यटकों को सुविधा पहुंचाना है। अब इन बसों का किराया 500 रुपये से घटाकर एक सौ किया जाएगा। जो 25 नई लग्जरी बसें इस सेवा में उतारी जाएंगी, उनमें मुफ्त में ई-गाइड की सुविधा उपलब्ध होगी। बस जिस भी स्मारक या अन्य विशेष स्थान पर पहुंचेगी, उससे पहले ही पर्यटकों को उसके बारे में हिंदी और अंग्रेजी में जानकारी दी जाएगी। हर सीट के साथ ईयर फोन की भी सुविधा होगी। इसके साथ ही गाइड भी उपलब्ध कराए जाएंगे जो पर्यटकों के साथ होंगे। हो हो बसों के लिए अलग से बस स्टॉप बनाए जाएंगे। पर्यटकों के लिए तीनों रूटों पर 20-20 मिनट में बस मिलना सुनिश्चित होगा। एक टिकट का इस सेवा की एक रूट की दूसरी बसों में भी उपयोग किया जा सकेगा।

डीटीटीडीसी के प्रबंध निदेशक शूरबीर सिंह कहते हैं कि हम जल्द ही इस योजना को बेहतर बनाने जा रहे हैं। सरकार चाहती है कि इस योजना को इस तरह अमल में लाया जाए कि अधिक से अधिक लोग इसका इस्तेमाल कर सकें।

एनएसयूआइ की पूर्व अध्यक्ष अमृता धवन के साथ दिल्ली कैंट में लूट

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली : कार का टायर पंक्चर होने का झांसा देकर एनएसयूआइ की पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष अमृता धवन से बाइक सवारों ने 60 हजार रुपये लूट लिए। अमृता डूसू की अध्यक्ष रहने के साथ ही विकासपुरी में पार्षद भी रह चुकी हैं।

अमृता धवन ने पुलिस को बताया कि शुक्रवार को वह कार से धौलाकुआं स्थित बेस अस्पताल के किनारे वाली सड़क से विकासपुरी लौट रही थीं। अस्पताल के गेट के सामने स्कूटी सवार दो लड़कों ने इशारा करके बताया कि कार का टायर पंक्चर है। कार से उतरकर वह टायर देखने लगीं। इस बीच विपरीत दिशा से आए दो लड़कों ने कार के सामने बाइक खड़ी कर दी। टायर देखने के बाद अमृता जब अपनी कार में बैठने लगीं, उसी समय बाइक सवार एक लड़के ने सीट पर रखे बैग को उठा लिया। अमृता ने बदमाश से बैग छीनने का प्रयास किया, लेकिन वह सफल नहीं हो सकीं। दोनों बदमाश धौलाकुआं की ओर भाग गए।

प्रवेश परीक्षा के मामले में जेएनयू प्रशासन को घेर रहा छात्र संघ

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू) में इन दिनों छात्र संघ व प्रशासन के बीच फिर गहमागहमी का माहौल है। जेएनयू छात्र संघ की तरफ से प्रशासन पर 27 से 30 मई के दौरान हुई प्रवेश परीक्षाओं के प्रश्न पत्रों को लेकर कई गंभीर आरोप लगाए जा रहे हैं। एक हफ्ते में छात्र संघ ने दो प्रेसवार्ता कर अपनी बात स्पष्ट करते हुए प्रवेश परीक्षा के प्रश्न पत्रों को दूसरी वेबसाइट से कॉपी करने का आरोप लगाया है। शनिवार को छात्र संघ ने विश्वविद्यालय परिसर में एक बार फिर प्रेसवार्ता कर आरोप लगाया कि सेंटर फॉर इकोनॉमिक स्टडीज एंड प्लानिंग (सीइएसपी) के एमए व एमफिल और बीए के विदेशी भाषाओं की प्रवेश परीक्षा के प्रश्न पत्रों को दूसरी वेबसाइट से कॉपी करके पेस्ट किया है। इससे पहले छात्र संघ ने गुरुवार को भी आरोप लगाए थे।

शनिवार को हुई प्रेसवार्ता में छात्र संघ अध्यक्ष एन साईं बालाजी, उपाध्यक्ष सारिका चौधरी, महासचिव एजाज अहमद राथर और संयुक्त सचिव अमूथा जयादीप मौजूद थे। बालाजी ने आरोप लगाया कि बीए व एमए की विदेशी भाषाओं की प्रवेश परीक्षा, इकोनॉमिक्स के एमए व एमफिल की प्रवेश परीक्षा व कई अन्य पाठ्यक्रमों में 2015 के यूजीसी नेट परीक्षा के प्रश्न पत्रों में मौजूद सवालों को कॉपी करके शामिल किया गया। एमए हिंदी, यूरोपियन स्टडीज के एमफिल प्रोग्राम की प्रवेश परीक्षाओं के प्रश्न पत्र भी 50 फीसद एक बुक व अन्य वेबसाइट से कॉपी किए गए हैं। इस मामले में मानव संसाधन विकास मंत्रालय, विवि के चांसलर को भी पत्र लिखेंगे और मांग करेंगे कि इस मामले की न्यायिक जांच की जाए। साथ ही कुलपति के खिलाफ कार्रवाई की मांग करेंगे। वहीं, प्रशासन के अधिकारियों ने कहा कि छात्र संघ की तरफ से लगातार विश्वविद्यालय की छवि को धूमिल करने का प्रयास किया जा रहा है। उनके आरोप बेबुनियाद हैं।

400 रुपये प्रतिमाह बुजुर्गों को पेंशन देने का एलान किया है बिहार सरकार। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की अगुआई वाली सरकार देश में पहली सरकार है जो 60 वर्ष से ज्यादा आयु वाले सभी बुजुर्गों को पेंशन देने जा रही है।

शाह ने नक्सलवाद से निपटने के लिए राज्यों को दिया मंत्र

आश्वासन ▸ गृह मंत्री ने नीति आयोग की गवर्निंग काउंसिल की बैठक में कहा, फंडिंग से लेकर क्षमता बढ़ाने तक राज्यों के साथ चट्टान की तरह खड़ा रहेगा केंद्र

हरिकिशन शर्मा, नई दिल्ली

नक्सलवाद को नेस्तनाबूद करने के लिए केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने राज्यों को आठ सूत्री मंत्र दिया है। शाह ने वामपंथी अतिवाद से निपटने के लिए फंडिंग से लेकर क्षमता निर्माण तक हर संभव मदद राज्यों को मुहैया कराने का आश्वासन भी दिया है। उन्होंने कहा है कि नक्सलवादी हिंसा को खत्म करने के लिए मोदी सरकार हर तरह की मदद देगी और राज्यों के साथ चट्टान की तरह खड़ी रहेगी।

शाह ने शनिवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में हुई नीति आयोग की गवर्निंग काउंसिल की बैठक में राज्यों के मुख्यमंत्रियों की मौजूदगी में यह बात कही। सूत्रों के मुताबिक, शाह ने कहा कि वामपंथी अतिवाद (एलडब्ल्यूई) के खिलाफ लड़ाई अब महत्वपूर्ण चरण में है और सुनियोजित प्रयासों से इस समस्या को तुच्छ स्तर तक लाया जा सकता है। इसे समयबद्ध तरीके से समाप्त करने के लिए एक दृढ़ प्रयास की आवश्यकता है।

इस बीच बैठक की जानकारी देते हुए नीति आयोग के सीईओ अमिताभ कांत ने कहा कि गृह मंत्री ने राज्यों को फंडिंग से लेकर इंटेलिजेंस, समन्वय और क्षमता निर्माण तक हर तरह की मदद मुहैया कराने का आश्वासन दिया है और कहा है कि वामपंथी अतिवाद के खात्मे के लिए मोदी सरकार राज्यों के साथ चट्टान की तरह खड़ी रहेगी।

नीति आयोग की गवर्निंग काउंसिल की बैठक में शाह का यह बयान इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि काउंसिल के एजेंडे में जो पांच विषय थे उनमें सुरक्षा संबंधी मुद्दे खासकर वामपंथी अतिवाद से प्रभावित जिलों के विषय विशेष रूप से शामिल थे। कांत ने बताया कि गृह मंत्री ने अपने भाषण में कहा कि राज्यों के विशेष बलों को एसआइबी की तरह क्षमता निर्माण की जरूरत है ताकि वे खुफिया सूचना आधारित अभियान चलाने में सक्षम हो सकें। इसके अलावा उन्होंने राज्यों को मुख्य क्षेत्रों में सुरक्षा की कमी को भरने के लिए सुरक्षा बलों की तत्काल तैनाती करने, विशेष बलों तथा राज्य सशस्त्र बलों का अधिकाधिक प्रयोग करने, एक राज्य से दूसरे राज्य के बीच सहयोग करने और वामपंथी अतिवादी संगठनों के कार्यकर्ताओं की संपत्तियों को जब्त करने के लिए सीआइडी में अलग शाखा बनाने को कहा। साथ ही एलडब्ल्यूई से प्रभावित जिलों में स्थिर कार्यकाल वाले डीएम और एसपी जैसे सक्षम अधिकारी तैनात करने को कहा।

राज्यों को केंद्र से मिले 41 लाख करोड़ रुपये : बैठक में वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कहा कि विगत चार वर्षों में राज्यों को केंद्रीय करों में हिस्सेदारी के रूप में भारी भरकम 41 लाख करोड़ रुपये मिले हैं। इससे पूर्व 2011-12 से 2014-15 तक राज्यों को 20 लाख करोड़ रुपये मिले थे। खास बात यह है कि राज्यों को गत चार वर्षों में 20 लाख करोड़ रुपये केंद्र प्रायोजित योजनाओं और कार्यक्रमों के रूप में गए हैं।

नई दिल्ली में नीति आयोग की पांचवी बैठक की अध्यक्षता करते प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी। साथ में हैं रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, नीति आयोग के उपाध्यक्ष राजीव कुमार और गृह मंत्री अमित शाह व अन्य। एएनआइ

सीआरपीएफ वापस बुलाने के आदेश को रद करे सरकार : योगी

हरिकिशन शर्मा, नई दिल्ली

उत्तर प्रदेश सरकार ने नक्सलवाद से प्रभावित राज्य के सोनभद्र व चंदौली जिलों से केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) की कंपनियों को वापस बुलाने संबंधी केंद्रीय गृह मंत्रालय के आदेश को रद करने की मांग की है। राज्य के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शनिवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में हुई नीति आयोग की गवर्निंग काउंसिल की बैठक में यह मुद्दा उठाया।

सूत्रों के मुताबिक, योगी ने कहा कि उत्तर प्रदेश के नक्सलवाद प्रभावित सोनभद्र व चंदौली जिलों में तैनात सीआरपीएफ की तीन-तीन कंपनियों की वापसी का आदेश केंद्रीय गृह मंत्रालय ने जारी किया है। क्षेत्र में नक्सली गतिविधियों पर अंकुश लगाने के लिए इनकी नितांत आवश्यकता है। इसलिए केंद्र सरकार से आग्रह है कि सीआरपीएफ की इन छह कंपनियों को वापस बुलाने के आदेश को रद करने पर विचार किया जाए।

नीति आयोग की गवर्निंग काउंसिल में योगी का यह मुद्दा उठाना इसलिए अहम है क्योंकि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बैठक के उद्घाटन भाषण में नक्सलवाद की समस्या का जिक्र किया था। पीएम ने कहा था कि देश के कई आस्पिरेशनल जिले नक्सलवादी हिंसा से प्रभावित हैं। नक्सलवाद के खिलाफ लड़ाई अब निर्णायक चरण में है और हिंसा से कड़ाई से निपटा जाएगा। इसके अलावा केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह भी पदेन सदस्य के तौर पर काउंसिल की बैठक में शामिल थे। इसलिए माना जा रहा है कि राज्य की इस मांग पर जल्द विचार किया जा सकता है। इसके अलावा योगी ने सूखा राहत के नियमों में बदलाव की मांग भी की। उन्होंने कहा कि किसानों को सूखाग्रस्त क्षेत्रों में फसल क्षति मुआवजा तभी दिया जाता है जब खेती का नुकसान कम से कम 33 फीसद हुआ हो। इसके चलते बहुत से किसान राहत पाने से वंचित रह जाते हैं। इसलिए इस सीमा को कम कर 20 फीसद किया जाए। उन्होंने कहा कि टिकाऊ खेती के लिए मिट्टी में आर्गेनिक कार्बन का समुचित स्तर बनाए रखने के लिए एक नया 'आर्गेनिक मैटर मिशन' शुरू किया जाए।

मुख्यमंत्री ने सार्वजनिक वितरण प्रणाली के तहत खाद्यान्न की डोर स्टेप डिलीवरी के लिए सरकार द्वारा तय 65 रुपये प्रति क्विंटल की दर को बढ़ाकर 100 रुपये प्रति क्विंटल करने की मांग भी की। योगी ने बताया कि खाद्यान्न वितरण व्यवस्था में ई-पॉस मशीनों के इस्तेमाल से राज्य को प्रतिमाह ग्रामीण क्षेत्रों में 100 करोड़ रुपये और शहरी क्षेत्रों में 20 करोड़ रुपये की सब्सिडी की बचत हो रही है। इसके अलावा योगी ने प्रदेश सरकार के कार्यक्रमों और उपलब्धियों का विवरण भी काउंसिल के समक्ष रखा।

शनिवार को नीति आयोग की बैठक से पहले उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने प्रधानमंत्री मोदी से मुलाकात की। एएनआइ

सूखे से निपटने को पीएम की 'पर ड्रॉप, मोर क्रॉप' की रणनीति

प्रथम पृष्ठ से आगे

देश के कई राज्यों में सूखे जैसे हालात के मद्देनजर प्रधानमंत्री मोदी ने 'पर ड्रॉप, मोर क्रॉप' की रणनीति से इस समस्या को नियंत्रित करने की जरूरत पर बल दिया। उन्होंने कहा कि सरकार ने जल शक्ति मंत्रालय का गठन किया है जो पानी के मुद्दे पर समन्वित नीति प्रदान करेगा। राज्यों को भी जल संरक्षण और प्रबंधन की दिशा में विभिन्न प्रयासों को एक जगह जोड़ने का काम करना चाहिए। साथ ही उन्होंने जल प्रबंधन और संरक्षण के लिये मॉडल बिल्डिंग बॉयलॉज की तर्ज पर नियम-कानून बनाने की जरूरत पर भी बल दिया।

आय और रोजगार बढ़ाने के लिए निर्यात क्षेत्र महत्वपूर्ण: उन्होंने कृषि क्षेत्र में संरचनात्मक सुधारों की जरूरत बताते हुए कहा कि कारपोरेट निवेश को बढ़ाने, लॉजिस्टिक मजबूत बनाने और समुचित मार्केट सपोर्ट प्रदान करने की जरूरत है। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि आय और रोजगार बढ़ाने के लिए निर्यात क्षेत्र महत्वपूर्ण है। राज्यों को निर्यात को बढ़ावा देने पर फोकस करना चाहिए। जिन राज्यों ने अभी तक आयुष्मान भारत योजना को लागू नहीं किया है, उनसे शीघ्र ही इस योजना को लागू करने की अपील भी प्रधानमंत्री ने की।

आतंकवाद एशिया में सबसे गंभीर खतरा : जयशंकर

ताजिकिस्तान की राजधानी दुशांबे में सीआइसीए के सम्मेलन से इतर विदेश मंत्री एस जयशंकर से बांग्लादेश के उनके समकक्ष एके अब्दुल मोमेन ने मुलाकात की। एएनआइ

▸ **सीआइसीए के सम्मेलन में विदेश मंत्री ने कहा, आतंकियों और पीड़ितों को एक ही नजर से देखना सही नहीं**

दुशांबे, प्रेट्र/एएनआइ : विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने कहा कि आतंकवाद एशिया में लोगों के लिए 'सबसे गंभीर खतरा' बना हुआ है। आतंकवादियों और उनकी हरकतों से पीड़ितों को एक ही नजर से नहीं देखा जाना चाहिए। विदेश मंत्री ने शनिवार को ताजिकिस्तान की राजधानी में एशिया में संवाद एवं विश्वास बहाली (सीआइसीए) के पांचवें सम्मलेन को संबोधित करते हुए कहा कि सीआइसीए के सदस्य देश आतंकवाद से पीड़ित हैं। इस सम्मेलन में भाग लेने के लिए विदेश मंत्री शुक्रवार को दुशांबे पहुंचे।

जयशंकर ने ट्वीट किया है, 'आतंकवाद सबसे गंभीर खतरा है जिसका हम एशिया में सामना कर रहे हैं। सीआइसीए सदस्य देश इसके पीड़ित हैं और इसलिए यह स्पष्ट होना चाहिए कि आतंकवादियों और उनकी हरकतों से पीड़ितों को एक ही नजर से नहीं देखा जाए।' विदेश मंत्री की टिप्पणी से एक दिन पहले शुक्रवार को किर्गिस्तान की राजधानी बिश्केक में एससीओ शिखर सम्मेलन को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आतंकवाद को प्रोत्साहन और सहायता देने वाले और धन मुहैया करने वाले देशों की आलोचना की थी। उन्होंने परोक्ष रूप से पाकिस्तान की ओर इशारा करते हुए कहा था कि ऐसे देशों को जवाबदेह ठहराया जाए।

सीआइसीए एक अखिल एशिया मंच है जो एशिया में सहयोग बढ़ाता है और शांति, सुरक्षा एवं स्थिरता को प्रोत्साहन देता है। इस सम्मेलन से पहले जयशंकर का ताजिकिस्तान के राष्ट्रपति इमोमाली रहमान ने स्वागत किया।

जयशंकर ने कहा कि सीआइसीए ने हमेशा आतंकवाद और कट्टरता से मुकाबले के लिए मजबूत प्रतिबद्धता दिखाई है। एशिया ने आतंकवाद से मुकाबला करने के लिए समग्र रणनीति अपनाई है। उन्होंने कहा, 'भारत द्वारा अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद पर समग्र प्रस्ताव (सीसीआइटी) को अंतिम रूप देने का प्रस्ताव आज कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण है और इस संबंध में हम आपका समर्थन चाहते हैं।' विदेश मंत्री ने कहा कि अफगानिस्तान में भारत अफगान नीत और खुद अफगान द्वारा शांति एवं सुलह प्रक्रिया का समर्थन करता है। उन्होंने कहा कि सभी कोशिशों और प्रक्रियाओं में वहां की वैध रूप से निर्वाचित सरकार के साथ ही अफगान समाज के सभी तबकों को अवश्य ही शामिल किया जाए।

ताजिकिस्तान के राष्ट्रपति के राष्ट्रपति से मिले जयशंकर : विदेश मंत्री ने सम्मेलन से इतर ताजिकिस्तान के राष्ट्रपति इमोमाली रहमान से मुलाकात की। एक दिन पहले शुक्रवार को उन्होंने बांग्लादेश और बहरीन के विदेश मंत्रियों से मुलाकात की थी।

ईरान के विदेश मंत्री, वियतनाम के उपराष्ट्रपति से की द्विपक्षीय वार्ता: विदेश मंत्री ने अपने ईरानी समकक्ष और वियतनाम के उपराष्ट्रपति के साथ द्विपक्षीय वार्ता की। इस दौरान आपसी हितों के मुद्दे और क्षेत्रीय घटनाक्रम पर चर्चा हुई।

नीति आयोग की बैठक से पहले मनमोहन सिंह ने दिया मुख्यमंत्रियों को गुरु ज्ञान

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

▸ **पंजाब के मुख्यमंत्री अमरिंदर सिंह तबीयत खराब होने के कारण बैठक में नहीं हो सके शामिल**

नीति आयोग की संचालन परिषद की बैठक से पहले कांग्रेस शासित राज्यों के मुख्यमंत्रियों ने भूतपूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह से मुलाकात की और बैठक के एजेंडे और मुद्दों पर उनसे गुरु ज्ञान लिया। जानकरी के मुताबिक इस बैठक में जीडीपी के आकंड़ों से लेकर राज्यों में सूखे, किसानों और आदिवासी समाज की स्थिति जैसे मुद्दों पर चर्चा की गई। इसके अलावा सूखी नदियों को पुनर्जीवित करने पर भी चर्चा की गई।

कांग्रेस कार्यालय में हुई इस बैठक में मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री कमलनाथ, राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत, छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल, पुडुचेरी के मुख्यमंत्री वी. नारायणसामी के अलावा कर्नाटक में कांग्रेस-जदएस सरकार का नेतृत्व कर रहे मुख्यमंत्री एचडी कुमारस्वामी भी शामिल हुए। पंजाब के मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिंदर सिंह तबियत खराब होने की वजह से बैठक में शामिल नहीं हो पाए।

मालूम हो कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में शनिवार को नीति आयोग की गवर्निंग काउंसिल की पांचवी बैठक संपन्न हुई। इसमें देश में सूखे की स्थिति, कृषि क्षेत्र का संकट और नक्सलवाद प्रभावित जिलों जैसे मुद्दों पर चर्चा की गई। बैठक के एजेंडे में रेन-वाटर हार्वेस्टिंग, आकांक्षी जिला कार्यक्रम और कृषि क्षेत्र में संरचनात्मक सुधारों को भी शामिल किया गया था। राष्ट्रपति भवन में संपन्न हुई इस बैठक में राज्यों के मुख्यमंत्री, केंद्र शासित प्रदेशों के राज्यपाल, कई केंद्रीय मंत्री और सरकार के वरिष्ठ अधिकारियों ने शिरकत की। राष्ट्रपति भवन पहुंचने से पहले मुख्यमंत्री भूपेश बघेल, वी. नारायणसामी और एचडी कुमारस्वामी ने प्रधानमंत्री से अलग से मुलाकात भी की।

आयोग की बैठक में भाग लेने पहुंचे कांग्रेस के इन नेताओं को इससे पहले शुक्रवार रात कमलनाथ ने अपने दिल्ली निवास पर रात्रिभोज पर बुलाया था। लेकिन वहां भी पंजाब के मुख्यमंत्री अमरिंदर सिंह नहीं पहुंचे थे।

ममता समेत तीन सीएम रहे बैठक से दूर

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली : पश्चिम बंगाल में भाजपा और तृणमूल कांग्रेस के बीच चल रहे राजनीतिक रण का सीधा असर राजधानी दिल्ली में संपन्न हुई नीति आयोग की पहली बैठक में भी देखने को मिला। नई सरकार के गठन के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में बुलाई गई नीति आयोग की पहली ही बैठक में पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी नदारद रहीं। ममता ने बैठक में आने से यह कहते हुए साफ इन्कार कर दिया कि नीति आयोग के पास राज्यों की योजनाओं के समर्थन के लिए वित्तीय अधिकार नहीं हैं। ऐसे में इस तरह की बैठक की कवायद बेकार है। ममता के अलावा पंजाब के सीएम कैप्टन अमरिंदर सिंह तबीयत खराब होने के चलते बैठक से गायब रहे, जबकि तेलंगाना के सीएम चंद्रशेखर राव सिंचाई योजना के उद्घाटन से जुड़ी तैयारियों के चलते नहीं आए।

पहली चंपी बगैर बंद हो गई रेलवे की मसाज सेवा

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

सुमित्रा महाजन फाइल

पूर्व लोकसभा अध्यक्ष सुमित्रा महाजन व भाजपा सांसद शंकर लालवानी ने किया था विरोध

विरोध के बाद रेलवे ने ट्रेनों में मालिश सेवा शुरू करने का इरादा छोड़ दिया है। पश्चिम रेलवे ने बाकायदा बयान जारी कर उक्त प्रस्ताव को रद किए जाने की जानकारी दी।

गौरतलब है कि पश्चिम रेलवे ने कुछ रोज पहले यात्रियों को ट्रेन के भीतर मालिश या मसाज सेवा प्रदान करने की योजना का एलान किया था। साथ ही मसाज सेवा की दरें और ट्रेनों की सूची भी जारी की थी। इस सेवा की शुरुआत इंदौर से होनी थी, लेकिन आम जनता के अलावा इंदौर के विशिष्ट लोगों ने ही इस सेवा के औचित्य पर सवाल खड़े कर दिए।

मसाज सेवा पर पहला विरोध इंदौर के मौजूदा भाजपा सांसद शंकर लालवानी ने जताया था और रेलमंत्री पीयूष गोयल को पत्र लिखा था। पत्र में उन्होंने 'भारतीय संस्कृति के मानकों' का हवाला देते हुए मसाज सेवा को 'स्तरहीन' बताया था और जन भावनाओं के अनुसार इस पर पुनर्विचार करने का अनुरोध किया था।

लालवानी के बाद सुमित्रा महाजन ने भी गोयल को चिट्ठी लिखी और प्रस्ताव के बारे में अपनी आशंकाओं और जिज्ञासाओं से उन्हें अवगत कराया। उन्होंने जानना चाहा था कि क्या रतलाम डिवीजन की प्रस्तावित योजना को मंत्रालय ने मंजूरी दी है? इस प्रकार की मालिश सुविधा के लिए चलती रेलगाड़ी में किस तरह की व्यवस्था की जाएगी, क्योंकि इससे यात्रियों, विशेषकर महिलाओं की सुरक्षा एवं सहजता के संबंध में कुछ प्रश्न हो सकते हैं। उन्होंने पूछा था कि क्या इंदौर रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म पर मसाज पार्लर खोले जाने का भी कोई प्रस्ताव है?

प्रस्ताव के तहत पश्चिम रेलवे की 39 ट्रेनों में मसाज सेवा शुरू करने की योजना थी। इसमें पहचानपत्र युक्त प्रशिक्षित वर्दीधारी सेवकों द्वारा यात्रियों के सिर और पैरों की मालिश का प्रावधान था। बीस मिनट की प्रत्येक मसाज सेवा के लिए यात्री से 300 रुपये का शुल्क वसूला जाना था।

रिलायंस ग्रुप ने कांग्रेसी नेताओं के खिलाफ मानहानि मामले वापस लिए

राज्य ब्यूरो, अहमदाबाद

▸ **अन्य मीडिया घरानों और नेताओं के खिलाफ भी मामले वापस लेगा ग्रुप**

लोकसभा चुनाव से पहले राफेल सौदे के मामले में अनिल अंबानी के रिलायंस ग्रुप ने अपने खिलाफ बयानबाजी को लेकर कांग्रेस नेताओं व एसोसिएट जर्नल के खिलाफ दायर मानहानि केस वापस ले लिए हैं। अन्य मीडिया संस्थानों के विरुद्ध भी केस वापस लिए जाने के संकेत हैं।

गत माह रिलायंस ग्रुप ने अहमदाबाद सिटी सिविल एवं सत्र कोर्ट में कांग्रेस नेताओं के खिलाफ दायर मानहानि के मामले वापस लेने की घोषणा की थी। शुक्रवार को उनके वकील हर्षद पारेख ने कोर्ट में अर्जी दाखिल कर कांग्रेस प्रवक्ता रणदीप सुरजेवाला, कांग्रेस नेता ओमान चांडी, कांग्रेस की पूर्व नेता प्रियंका चतुर्वेदी, कांग्रेस प्रवक्ता व बिहार प्रभारी शक्तिसिंह गोहिल, पूर्व मुख्यमंत्री अशोक चव्हाण, नेशनल हेराल्ड अखबार के प्रकाशक एसोसिएट जर्नल के खिलाफ आरोप वापस ले लिए।

कांग्रेस नेताओं के वकील पंकज चांपानेरी ने बताया कि रिलायंस ग्रुप के वकील ने कोर्ट को बताया कि वह मानहानि मामले में केस को आगे नहीं बढाना चाहते हैं।

अनिल अंबानी जागरण आर्काइव

चांपानेरी ने कहा कि कांग्रेस के अन्य नेता संजय निरुपम, सुनील जाखड़, आम आदमी पार्टी के सांसद संजय सिंह, टाइम्स समूह के तीन समाचार पत्र, दी वायर, ब्लुमबर्ग क्विंट, दी सिटीजन, डीएनए, दी ट्रिब्यून, एनडीटीवी, द वीक समूहों के पत्रकार व मीडिया समूहों के खिलाफ भी अगली सुनवाई में केस वापस लिए जा सकते हैं। राफेल सौदे को लेकर आई मीडिया रिपोर्ट व बयानों के बाद रिलायंस ग्रुप ने मानहानि के मामले दायर किए थे।

अलग-अलग लुक में दिखे मोदी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अपने डिफरेंट लुक को लेकर हमेशा चर्चा में रहते हैं। उनकी खासियत है कि जिस देश में जाते हैं, वहां की कल्चर में खुद को ढाल लेते हैं। बिश्केक में शनिवार को प्रधानमंत्री ने किर्गिस्तानी पारंपरिक हैट 'कलपाक' और कोट 'चापान' पहना तो उनकी स्टाइल से प्रभावित किर्गिस्तान के राष्ट्रपति सूरोन्बे जिन्बेकोव ने उन्हें इस अंदाज में बधाई दी। दिल्ली पहुंचने पर कर्नाटक के मुख्यमंत्री एचडी कुमारस्वामी ने उनका पारंपरिक मैसूर 'पेटा' पहनाकर स्वागत किया। इसे पगड़ी भी कहा जाता है। एनएनआइ

कह के रहेंगे

माधव जोशी

बदला नजारा

पूर्व प्रधानमंत्री का राज्यसभा कार्यकाल समाप्त, फिलहाल कांग्रेस के पास इतना संख्या बल नहीं कि वह उन्हें किसी राज्य से उच्च सदन भेज सके

तीस साल बाद पहली बार बजट सत्र में नहीं दिखेंगे मनमोहन

नई दिल्ली, एएनआइ : पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह का राज्यसभा का कार्यकाल शुक्रवार को खत्म हो गया। उच्च सदन के लगभग 30 साल तक सदस्य रहे देश के जानेमाने अर्थशास्त्री सिंह इस बार संसद के बजट सत्र में भाग नहीं ले पाएंगे।

2008 के मंदी के दौर में देश को आर्थिक संकट से उबारने वाले सिंह संसद के अपने लगभग तीस साल के कार्यकाल में पहली बार उच्च सदन में मौजूद नहीं रहेंगे। सिंह 1991 में पहली बार असम से राज्यसभा सदस्य चुने गए थे। इस बार राज्य विधानसभा में कांग्रेस सदस्यों की संख्या इतनी नहीं है कि वे उन्हें फिर से राज्यसभा के लिए भेज सकें। बता दें कि असम विधानसभा में कांग्रेस के 25 सदस्य हैं जबकि उन्हें निर्वाचित करने के लिए 43 वोट चाहिए। ऑल इंडिया डेमोक्रेटिक फ्रंट के 13 विधायकों के समर्थन के बावजूद देश की सबसे पुरानी पार्टी के पास इतनी संख्या नहीं है कि वह सिंह को फिर से राज्यसभा भेज सके। पार्टी उन्हें दूसरे राज्यों से भी उच्च सदन नहीं भेज सकती, क्योंकि असम से राज्यसभा के लिए भाजपा के कामाख्या प्रसाद और अगप के बीरेंदर प्रसाद बैश्य के निर्विरोध निवार्चित होने के वाद इस समय राज्यसभा की जो नौ सीटें खाली हो रही हैं उनमें ओडिशा की चार, बिहार की दो, गुजरात की दो तथा तमिलनाडु की एक सीट है।

पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह देश के बड़े अर्थशास्त्रियों में शुमार किए जाते हैं। जागरण आर्काइव

सिंह को पार्टी कर्नाटक, छत्तीसगढ़, राजस्थान अथवा पंजाब से भी उच्च सदन नहीं भेज सकती, क्योंकि इन राज्यों की सीटें अभी खाली नहीं हो रही हैं। उन्हें राज्यसभा तभी भेजा जा सकता है, जब कोई अन्य नेता इस्तीफा दे। उस सदस्य की जगह पर उन्हें उच्च सदन के लिए निर्वाचित किया जा सकता है। पार्टी के सूत्रों ने कहा कि इस तरह के उपाय के बारे में पार्टी में कोई विचार नहीं चल रहा है। सिंह का कार्यकाल समाप्त होने के कारण वह जहां उच्च सदन में मौजूद नहीं होंगे, वहीं पूर्व पीएम एचडी देवेगौड़ा लोकसभा में मौजूद नहीं रहेंगे, क्योंकि इस बार वह तुमकुरु लोस सीट से चुनाव हार गए हैं। नई सरकार का पहला बजट सत्र 17 जून से शुरू हो रहा है।

राज्यसभा की खाली हुई छह सीटों पर पांच जुलाई को उपचुनाव

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली : चुनाव आयोग ने बिहार, ओडिशा और गुजरात में खाली हुई राज्यसभा की छह सीटों पर उपचुनाव का एलान कर दिया है। हाल ही में संपन्न हुए लोकसभा और विधानसभा चुनावों में राज्यसभा सदस्यों के जीतने की वजह से ये सीटें रिक्त हुई हैं। इन पर उपचुनाव पांच जुलाई को होगा। निर्वाचन आयोग द्वारा शनिवार को जारी चुनाव कार्यक्रम के मुताबिक बिहार से एक, गुजरात से दो और ओडिशा से तीन सीटें रिक्त हुई हैं। इन सीटों पर उपचुनाव के लिए 18 जून को अधिसूचनाएं जारी किए जाने के साथ ही निर्वाचन प्रक्रिया की औपचारिक शुरुआत होगी। उम्मीदवारी के लिए नामांकन की अंतिम तिथि 25 जून होगी और 26 जून को नामांकन पत्रों की जांच की जाएगी। नाम वापसी की अंतिम तिथि 28 जून तय की गई है और पांच जुलाई को सुबह नौ बजे से शाम चार बजे तक मतदान होगा। मतदान के बाद शाम पांच बजे मतगणना होगी।

डिप्टी मेयर, जेके बैंक व सरकारी अफसरों के खिलाफ मामला दर्ज

राज्य ब्यूरो, श्रीनगर : जम्मू-कश्मीर बैंक में हुए घोटालों की जांच को आगे बढ़ाते हुए एसीबी ने शनिवार को श्रीनगर नगर निगम के डिप्टी मेयर शेख इमरान के अलावा जम्मू-कश्मीर बैंक, राज्य सरकार के कुछ अफसरों के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया है। इन सभी पर लस्सीपोरा कोल्ड स्टोर की लागत को वास्तविक से कहीं ज्यादा बढ़ाकर दिखाकर सब्सिडी की राशि बढ़ाने आदि का आरोप है।

15 अस्पतालों में हड़ताल रहने से मरीजों को परेशान होना पड़ा दिल्ली में। कोलकाता में जूनियर डॉक्टरों से हुई मारपीट की घटना के बाद से देशव्यापी हड़ताल शुरू हो गई है। राजधानी में आरएमएल (राम मनोहर लोहिया), लेडी हार्डिंग मेडिकल कॉलेज, जीटीबी, हिंदू राव आदि अस्पतालों में हड़ताल रही।

www.jagran.com राष्ट्रीय संस्करण
दैनिक जागरण
रविवार 16 जून 2019

ममता ने मानीं सभी शर्तें, पर हड़ताली डॉक्टर झुकने को तैयार नहीं

टकराव ▶ आश्वासन के बाद भी मुख्यमंत्री की बैठक में नहीं पहुंचे जूनियर डॉक्टर, बंगाल में पाचवें व देश में दूसरे दिन भी रही हड़ताल, एक और की गई जान

जागरण न्यूज नेटवर्क, नई दिल्ली

पश्चिम बंगाल में कोलकाता के नीलरतन सरकार (एनआरएस) मेडिकल कॉलेज अस्पताल में जूनियर डॉक्टरों से मारपीट के विरोध में प्रदेश में पांचवें और देशभर के कई राज्यों में दूसरे दिन भी हड़ताल जारी रही। इस बीच इलाज के अभाव में एक और बच्चे की मौत हो गई। उपचार नहीं मिलने से अब तक बंगाल में छह लोगों की मौत हो चुकी है। दूसरी ओर बंगाल में लगातार चरमरा रही स्वास्थ्य सेवा को पटरी पर लाने के लिए मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने हड़ताली डॉक्टरों की सारे शर्तें मान ली हैं, पर डॉक्टर झुकने को तैयार नहीं। उन्होंने काम पर लौटने की ममता बनर्जी की अपील ठुकरा दी। इससे पहले मुख्य सचिव मलय डे ने नोटिस जारी कर उनकी 10 सूत्री मांगें पूरी करने की बात कही।

बंगाल में शनिवार को राज्य सचिवालय नवान्न में संवाददाता सम्मेलन कर ममता ने एनआरएस में डॉक्टरों के साथ हुई मारपीट को दुर्भाग्यपूर्ण बताया। साथ ही कहा कि कार्रवाई जारी है। पांच लोगों को गिरफ्तार किया जा चुका है। उनके खिलाफ गैर जमानती धाराओं में मामले दर्ज किए गए हैं। हमारी सरकार मामला सुलझाने को हर संभव प्रयास कर रही है। हमने डॉक्टरों से बात करने की कोशिश की, लेकिन वादे के बावजूद डॉक्टर बैठक में नहीं आए।

चेताया भी, कहा-हम एस्मा एक्ट लागू नहीं करना चाहते : ममता बनर्जी ने हड़ताली जूनियर डॉक्टरों की ओर इशारा करते हुए कहा-'हम राज्य में आवश्यक सेवा संरक्षण अधिनियम (एस्मा) लागू करना नहीं चाहते हैं। न ही कानून का इस्तेमाल कर किसी का लाइसेंस रद करना चाह रहे हैं।' उन्होंने उदाहरण दिया कि 2008 में ओडिशा, 2015 में गुजरात, 2016 व 2017 में राजस्थान और 2018 में जम्मू-कश्मीर और मणिपुर में डॉक्टरों ने हड़ताल की थी, तब वहां की सरकारों ने एस्मा लगाकर हड़ताल खत्म करा दी थी। यही नहीं, गुजरात में डॉक्टरों को गिरफ्तार भी किया गया था। ये सभी राज्य भाजपा शासित हैं।

संवैधानिक संस्था को सम्मान की नसीहत : ममता ने कहा-'हमने डॉक्टरों की सभी मांगें मान ली हैं। मैंने शुक्रवार को राज्य सचिवालय में पांच घंटे डॉक्टरों का इंतजार किया। शनिवार को भी अपने मंत्रियों और मुख्य सचिव को डॉक्टरों से मिलने के लिए भेजा था, लेकिन वे नहीं आए। उन्होंने हड़ताली डॉक्टरों को नसीहत देते हुए कहा कि आपको संवैधानिक संस्था को सम्मान देना होगा।

हम नहीं, ममता आएं और माफी मांगें : हड़ताली डॉक्टरों ने साफ कहा है कि हम नहीं, मुख्यमंत्री ममता बनर्जी आएं। जब तक वह एनआरएस अस्पताल आकर उनसे बातचीत नहीं करतीं, उन्हें सुरक्षा को लेकर आश्वस्त नहीं करतीं और सार्वजनिक तौर पर माफी नहीं मांगतीं तब तक यह आंदोलन जारी रहेगा।

आइएमए के राष्ट्रीय अध्यक्ष भी पहुंचे : इंडियन मेडिकल एसोसिएशन (आइएमए) के राष्ट्रीय अध्यक्ष व तृणमूल के राज्यसभा सदस्य शांतनु सेन भी एनआरएस पहुंचे और आंदोलनकारी डॉक्टरों को समझाने की कोशिश की। साथ ही उन्होंने ममता के उस बयान का भी समर्थन किया, जिसमें इस आंदोलन में बाहरी लोगों का हाथ होने की बात कही गई।

सरकार को 48 घंटे की दी मोहलत : एम्स के रजिडेंट डॉक्टर एसोसिएशन ने ममता सरकार को 48 घंटे की मोहलत देते हुए कहा है कि हड़ताल खत्म कराएं, नहीं तो वह अनिश्चितकालीन हड़ताल करेंगे। वहीं शनिवार को भी पश्चिम बंगाल, मध्य प्रदेश, बिहार, पंजाब, हरियाणा, चंडीगढ़, झारखंड, आंध्र प्रदेश, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, महाराष्ट्र, केरल, छत्तीसगढ़, तेलंगाना व राजस्थान सहित कई राज्यों में स्वास्थ्य सेवाएं प्रभावित रहीं। चिकित्सकों ने समर्थन में काम बंदकर विरोध प्रदर्शन किया।

डॉक्टर के इलाज का खर्च उठाएगी सरकार : बंगाल सरकार ने निजी अस्पताल में भर्ती घायल जूनियर डॉक्टर परिबाह मुखर्जी के उपचार का सारा खर्च वहन करने का निर्णय लिया है।

ममता ने कहा-सामूहिक इस्तीफे का कोई मतलब नहीं : जूनियर डॉक्टरों पर हमले को लेकर पिछले पांच दिनों से जारी हड़ताल के बीच बंगाल के 750 से अधिक चिकित्सकों के सामूहिक इस्तीफों पर मुख्यमंत्री ने कहा कि इसका कोई मतलब नहीं है। उन्होंने कहा कि कानूनन सामूहिक इस्तीफे का कोई मतलब नहीं होता है।

डॉक्टरों की हड़ताल से मरीजों पर इसका दुष्प्रभाव पड़ने लगा है। शनिवार को कोलकाता के नीलरतन सरकारी मेडिकल कॉलेज व अस्पताल में हड़ताल की वजह से यह युवक बुजुर्ग महिला मरीज को लेकर घंटों भटकता रहा। प्रेट्र

राज्यपाल ने चिट्ठी लिख ममता को दी सलाह

पश्चिम बंगाल के राज्यपाल केसरीनाथ त्रिपाठी ने शनिवार को मुख्यमंत्री ममता बनर्जी को चिट्ठी लिखकर डॉक्टरों की हड़ताल खत्म कराने को कदम उठाने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि अगर जूनियर डॉक्टरों से बातचीत भी करनी पड़े तो वे करें और अविलंब हड़ताल समाप्त करवाने की पहल करें।

डॉक्टरों की हड़ताल पर केंद्र गंभीर

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

बंगाल में हिंसा के खिलाफ डॉक्टरों की हड़ताल और इससे पूरे देश में चिकित्सा समुदाय में उपजे रोष को देखते हुए केंद्र सरकार सक्रिय हो गई है। एक ओर जहां केंद्रीय गृहमंत्रालय ने बंगाल सरकार से इस मामले में तत्काल विस्तृत रिपोर्ट तलब की है, वहीं दूसरी ओर केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री हर्षवर्धन ने सभी राज्यों के मुख्यमंत्रियों को पत्र लिखकर डॉक्टरों व अन्य मेडिकल स्टाफ की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए नए कानून पर विचार करने को कहा है। गौरतलब है कि डॉक्टरों ने सोमवार से अनिश्चितकालीन हड़ताल पर जाने की चेतावनी दी है।

गृहमंत्रालय ने पश्चिम बंगाल सरकार से डॉक्टरों की हड़ताल पर तत्काल विस्तृत रिपोर्ट तलब करते हुए कहा है कि इंडियन मेडिकल एसोसिएशन (आइएमए) समेत चिकित्सा क्षेत्र से जुड़े अन्य संगठन डॉक्टरों व दूसरे मेडिकल स्टाफ की सुरक्षा सुनिश्चित करने की मांग कर रहे हैं। पश्चिम बंगाल में डॉक्टरों के साथ हुई मारपीट को लेकर पूरे देश में चिकित्सा समुदाय में रोष साफ देखा जा सकता है। गृहमंत्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा कि राज्य सरकार को फिलहाल एडवाइजरी भेजकर विस्तृत रिपोर्ट देने को कहा गया है। एक बार रिपोर्ट आने के बाद आगे की कार्रवाई की दिशा तय की जाएगी।

संयम बरतने की अपील

हर्षवर्धन ने शुक्रवार को ममता बनर्जी को पत्र लिखकर डॉक्टरों के साथ सौहार्दपूर्ण तरीके से बातचीत कर समस्या का हल निकालने को कहा था। इसके साथ ही उन्होंने डॉक्टरों से भी संयम बरतने और मरीजों को ही दिक्कत का ख्याल रखने का आग्रह किया था। उन्होंने कहा कि ऐसे मामले में डॉक्टरों को सांकेतिक हड़ताल का सहारा लेना चाहिए। उन्होंने साफ कर दिया कि केंद्र सरकार डॉक्टरों व मेडिकल स्टाफ की सुरक्षा को लेकर गंभीर है और इसके लिए जरूरी कानून बनाने के लिए गृहमंत्रालय के साथ बातचीत करेंगे।

स्वास्थ्य मंत्री हर्षवर्धन ने सभी मुख्यमंत्रियों को पत्र लिखा है। पत्र में डॉक्टरों व अन्य मेडिकल स्टाफ की सुरक्षा सुनिश्चित कराने और उनके साथ हिंसा करने वालों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई के लिए नए कानून पर विचार करने को कहा है। पत्र के साथ ही उन्होंने आइएमम की ओर से तैयार नए कानून के मसौदे को भी भेजा गया है। मसौदे में डॉक्टरों व मेडिकल स्टाफ के साथ हिंसा करने वालों के खिलाफ कठोर कार्रवाई के साथ ही उनपर जुर्माना लगाने व अस्पताल को हुए नुकसान की भरपाई का प्रावधान है।

भाजपा का रथ रोकने को चौटाला की महागठबंधन की पेशकश

राज्य ब्यूरो, चंडीगढ़

लोकसभा चुनावों में रिकॉर्ड जीत से उत्साहित भाजपा के विजय रथ को रोकने के लिए इंडियन नेशनल लोकदल (इनेलो) ने फिर से महागठबंधन का प्रस्ताव दिया है। भाजपा और कांग्रेस पर केंद्रित हुई राष्ट्रीय राजनीति में बदलाव की जरूरत पर जोर देते हुए इनेलो के प्रधान महासचिव अभय सिंह चौटाला ने कहा कि जब तक मजबूत विकल्प के रूप में आमजन को तीसरा मोर्चा नहीं मिलता, तब तक भाजपा को रोकना मुश्किल है।

राष्ट्रीय और प्रदेश कार्यकारिणी नए सिरे से गठित करने के बाद शनिवार को चंडीगढ़ स्थित एमएलए हॉस्टल में पत्रकारों से रूबरू अभय चौटाला ने हरियाणा में फिर से बसपा से गठबंधन के संकेत दिए। उन्होंने कहा कि बसपा से इनेलो के पुराने और मधुर संबंध रहे हैं। विगत लोकसभा चुनावों में बसपा ने ही समझौता तोड़ा। अगर वह फिर से हमारे साथ आती है तो हम गठबंधन पर विचार करेंगे।

अभय चौटाला ने संकेत दिए कि भाजपा को रोकने के लिए तीसरे मोर्चे की जरूरत है। उन्होंने इस संकेत के जरिये भाजपा विरोधी दलों को आपस में हाथ मिलाने का प्रस्ताव दिया है, लेकिन इस संभावित महागठबंधन में कांग्रेस होगी या नहीं, यह परिस्थितियों पर निर्भर करेगा। अभय चौटाला के अनुसार इनेलो के प्रदेश अध्यक्ष बीडी ढालिया और राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष अशोक अरोड़ा के साथ वे खुद एक महीने तक फील्ड में रहकर जिला और ब्लॉक स्तर पर संगठन को खड़ा करेंगे।

- इनेलो के प्रधान महासचिव अभय चौटाला ने दिए बसपा से गठबंधन के संकेत
- एक माह फील्ड में रहेंगे चौटाला, ढालिया और अरोड़ा, करेंगे सभी हलकों के दौरे

चंडीगढ़ में पत्रकारों से बातचीत करते इनेलो के प्रधान महासचिव अभय चौटाला। जागरण

बागी विधायकों को मोहलत पर उठाए सवाल

इनेलो में रहकर जननायक जनता पार्टी (जजपा) के लिए काम कर रहे चारों विधायकों नैना चौटाला, अनूप धानक, राजदीप फौगाट व पिरथी नंबरदार को दलबदल विरोधी कानून के तहत कार्रवाई के लिए फिर 15 दिन की मोहलत मिलने पर इनेलो ने विधानसभा अध्यक्ष पर सवाल उठाए हैं। अभय चौटाला ने कहा कि उन्हें लगता है कि चारों विधायक भाजपा में शामिल हो जाएंगे। इसलिए रणनीति के तहत विधानसभा अध्यक्ष ढाई महीने से बागी विधायकों को मोहलत देते आ रहे हैं।

चौटाला ने कहा कि 20 जून तक जिला और ब्लॉक स्तर पर पदाधिकारियों की नियुक्ति कर दी जाएगी। ब्लॉक स्तर पर ढीले रहे प्रधानों की जगह जोशीले एवं अनुभवी कार्यकर्ताओं को तरजीह दी जाएगी। अभय के अनुसार 30 जून तक सभी प्रकोष्ठों के साथ बैठकें कर संगठन का काम पूरा कर लिया जाएगा। 1 जुलाई से प्रधान महासचिव, प्रदेशाध्यक्ष और राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष की टीम सभी 90 विधानसभा क्षेत्रों में जाकर कार्यकर्ताओं और पदाधिकारियों की बैठक लेगी। हर दिन तीन विधानसभा क्षेत्र कवर किए जाएंगे।

सीएम को धनखड़ की चिट्ठी को बनाया मुद्दा : चरखी दादरी में अवैध खनन और ओवरलोडिंग मामले में कैबिनेट मंत्री ओमप्रकाश धनखड़ द्वारा मुख्यमंत्री मनोहर लाल को सीबीआइ जांच के लिए लिखी चिट्ठी को इनेलो ने मुद्दा बना लिया है। अभय चौटाला ने कहा कि डीसी और एडीसी को हटाने के बाद सरकार ने मामले की विजिलेंस जांच बैठाई, लेकिन उनके ही मंत्रियों को इस पर भरोसा नहीं। मामले की उच्च स्तरीय जांच होनी चाहिए क्योंकि डाडम में खनन को लेकर सुप्रीम कोर्ट भी सरकार की भूमिका पर सवाल उठा चुका है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री कहते हैं कि पहले की सरकारों में पर्ची और खर्ची चलती थी। अगर ऐसा है तो साढ़े चार साल बाद भी जांच के लिए कोई आयोग क्यों नहीं बनाया गया और दोषियों को जेल क्यों नहीं भेजा गया। उन्होंने कहा कि मौजूदा सरकार में पर्ची-खर्ची का सिस्टम चरम पर है और सरकार में बैठे लोग भ्रष्टाचार में पूरी तरह डूबे हुए हैं।

राहुल की टीम का हिस्सा बनेंगे सिद्धू

इन्द्रप्रीत सिंह, चंडीगढ़

मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिंदर सिंह और कैबिनेट मंत्री नवजोत सिंह सिद्धू की आपसी तनातनी को खत्म करने के लिए ऑल इंडिया कांग्रेस कमेटी ने इस पर काम शुरू कर दिया है। संसदीय चुनाव में मिली हार के बाद राहुल गांधी नया राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाने की बात पर अड़े हैं। इसके विकल्प के रूप में पार्टी में चर्चा चल रही है कि पूरे देश को चार हिस्सों में बांटकर चार उपाध्यक्ष नियुक्त किए जाएं। पार्टी सूत्रों का कहना है कि उत्तरी हिस्से के लिए नवजोत सिंह सिद्धू के नाम की चर्चा चल रही है।

इन संसदीय चुनाव में नवजोत सिंह सिद्धू ही एकमात्र ऐसे नेता रहे हैं, जिन्होंने राहुल गांधी के बाद सबसे ज्यादा रैलियां की थीं। उससे पहले भी जब मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, तेलंगाना और राजस्थान में विधानसभा चुनाव हुए थे तो नवजोत सिद्धू की सेवाएं सबसे ज्यादा ली गई थीं। इन तमाम राज्यों में सबसे ज्यादा डिमांड उन्हीं की थी। विधानसभा में तो सिद्धू की परफॉर्मेंस अच्छी रही, लेकिन संसदीय चुनाव में वह चूक गए।

कैप्टन ने सिद्धू को बताया था नॉन परफॉर्मर : पंजाब में नवजोत सिंह सिद्धू ने सबसे कम रैलियां की, लेकिन यहां कांग्रेस को सबसे ज्यादा सीटें आईं। बठिंडा की रैली में उन्होंने जिस तरह से नाम लिए बिना मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिंदर सिंह पर शिरोमणि अकाली दल से मिलीभगत को लेकर निशाना साधा, उससे कैप्टन बिफर गए। वह चुनाव परिणाम तक तो चुप रहे, लेकिन जैसे ही चुनाव में कांग्रेस को प्रदेश में बढ़त मिली और देशभर में पार्टी का बुरा हाल हुआ, तो वे सिद्धू पर हमलावर हो गए। उन्होंने परिणाम वाले दिन ही सिद्धू को नॉन परफॉर्मर मिनिस्टर तक कह डाला और एलान किया कि वह जल्द ही सिद्धू का विभाग बदल देंगे। बाद में उन्होंने विभाग बदल भी दिया। हालांकि, नवजोत सिंह सिद्धू अपने विभाग में दी गई परफॉर्मेंस के बारे में बार-बार मीडिया में गए और आंकड़े देते हुए उन्होंने दावा किया कि उनकी परफॉर्मेंस कई अन्य मंत्रियों से बेहतर रही है। वह इस मामले को लेकर कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी से भी मिले। इस मीटिंग में प्रियंका गांधी और अहमद पटेल भी थे। राहुल गांधी ने इस मसले का हल करने के लिए अहमद पटेल की ड्यूटी लगाई, लेकिन कैप्टन अमरिंदर सिंह के सहयोग न देने के चलते पार्टी अब नवजोत सिंह सिद्धू के लिए नई भूमिका की तलाश कर रही है।

सेकेंड लाइन लीडरशिप की तैयारी : पार्टी सूत्रों का कहना है कि कांग्रेस में जिन चार उपाध्यक्षों को नियुक्त करने की बात चल रही है, उसमें एक सिख चेहरे को भी आगे करने की बात है। इसके लिए पहले कैप्टन अमरिंदर सिंह के नाम पर भी चर्चा हुई थी, लेकिन सिद्धू ऐसा चेहरा हैं, जिनको सेकेंड लाइन के लीडर के रूप में भी उभारा जा सकता है।

- चार उपाध्यक्षों की चर्चा, नवजोत सिंह सिद्धू का भी नाम
- हाल ही में राहुल गांधी व प्रियंका गांधी वाड्रा से की थी मुलाकात

नवजोत सिंह सिद्धू जागरण आर्काइव

विजयवाड़ा हवाई अड्डे पर ली गई चंद्रबाबू नायडू की तलाशी

विजयवाड़ा, आइएएनएस/एएनआइ : आंध्र प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री एन. चंद्रबाबू नायडू की विजयवाड़ा के गन्नावरम हवाई अड्डे पर तलाशी ली गई। पूर्व मुख्यमंत्री को विमान तक वीआइपी वाहन से नहीं जाने दिया गया और उन्हें आम यात्रियों के साथ बस में सफर करना पड़ा।

शुक्रवार को एक सुरक्षाकर्मी ने प्रवेश द्वार पर नायडू की तलाशी ली। तेदेपा प्रमुख और विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष को वीआइपी वाहन से विमान तक पहुंचने की अनुमति नहीं दी गई। इस घटना पर तेदेपा ने कड़ी प्रतिक्रिया व्यक्त की है। पार्टी ने आरोप लगाया है कि भाजपा और वाईएसआर कांग्रेस पार्टी बदला लेने में जुटी है।

तेदेपा नेता और राज्य के पूर्व गृह मंत्री चिन्ना राजप्पा ने कहा कि अधिकारियों की प्रवृत्ति न केवल अपमानजनक है बल्कि नायडू की सुरक्षा से भी समझौता करने वाला है। उन्होंने कहा कि नायडू को इससे पहले कभी ऐसी स्थिति का सामना नहीं करना पड़ा था। कई साल तक वह विपक्ष में रहे थे।

जेड प्लस सुरक्षा वापस लेने पर अर्ध नग्न प्रदर्शन : आंध्र प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री नायडू की जेड प्लस सुरक्षा वापस लेने पर तेदेपा के दो विधायकों और कार्यकर्ताओं ने शनिवार को अर्ध नग्न प्रदर्शन किया। वासुपल्ली गणेश कुमार और वेलागापुदुमी राम कृष्ण ने आरोप लगाया कि सामान्य यात्री की तरह नायडू की तलाशी ली गई। उन्होंने कहा कि नायडू नक्सलियों की हिट लिस्ट में हैं और सरकार ने बदला लेने के लिए उनकी सुरक्षा वापस ले ली है। वह 14 साल तक राज्य के मुख्यमंत्री रहे हैं और उनके साथ यदि कुछ होता है तो राज्य जल उठेगा।

विजयवाड़ा के गन्नावरम हवाई अड्डे के प्रवेश द्वार पर आंध्र प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री एन चंद्रबाबू नायडू की तलाशी लेता सुरक्षाकर्मी। प्रेट्र

लालू के समधी चंद्रिका राय छोड़ेंगे राजद का दामन

सुभाष पांडेय, पटना

राजद प्रमुख लालू प्रसाद के समधी और सारण से महागठबंधन प्रत्याशी के रूप में चुनाव हार चुके चंद्रिका राय जल्द ही राजद का दामन छोड़ेंगे। बेटी ऐश्वर्या राय के साथ लालू परिवार के व्यवहार से क्षुब्ध चंद्रिका राय ने राजद छोड़ने का मन तो बना ही लिया है, वह बेटी के अधिकारों के लिए कानूनी लड़ाई पर भी विचार कर रहे हैं।

पूर्व मुख्यमंत्री दारोगा प्रसाद राय के बेटे चंद्रिका बिहार सरकार में मंत्री भी रह चुके हैं। सूत्रों के मुताबिक राय ने अपने एक करीबी मित्र को बुलाकर इसके संकेत दिए हैं। राय राजद छोड़कर किस दल में जाएंगे, यह अभी तय नहीं है। माना जा रहा है कि वह बिहार की दो बड़ी पार्टियों भाजपा या जदयू में से किसी का भी दामन थाम सकते हैं।

यहां बता दें कि चंद्रिका राय की उच्च शिक्षित बेटी ऐश्वर्या की शादी गत वर्ष लालू यादव के बड़े बेटे तेजप्रताप यादव के साथ बड़े धूमधाम से हुई थी। ऐश्वर्या मिरांडा हाउस से पढ़ी हैं। लेकिन शादी के कुछ महीने बाद ही तेजप्रताप ने पटना सिविल कोर्ट में तलाक की अर्जी दाखिल कर दी। सूत्रों के मुताबिक चंद्रिका राय अपने दामाद तेजप्रताप के व्यवहार से काफी क्षुब्ध हैं। लोकसभा चुनाव के दौरान तेजप्रताप ने सारण संसदीय सीट से चंद्रिका की दावेदारी का विरोध भी किया था। इससे दोनों परिवारों में कटुता बढ़ गई थी। हालांकि लालू यादव के समझाने-बुझाने और जमानत पर छूट कर आने के बाद सबकुछ ठीक करा देने के आश्वासन के बाद चंद्रिका कुछ दिनों के लिए शांत हो गए थे।

बताया जाता है कि प्रदेश के दो बड़े राजनीतिक परिवारों के बीच विवाद का प्रतिकूल असर लोकसभा चुनाव पर नहीं पड़े, इसलिए लालू परिवार ने भी ऐश्वर्या को मान-सम्मान के साथ राबड़ी देवी के सरकारी आवास में रखा। इसके पीछे एक मकसद ऐश्वर्या को मीडिया की सुर्खियों से दूर रखना भी था। लोकसभा चुनाव में चंद्रिका राय न सिर्फ सारण संसदीय सीट से चुनाव हार गए, बल्कि पार्टी का बिहार में सुपड़ा ही साफ हो गया। स्वाभाविक रूप से इस हार के बाद पूरा लालू परिवार हताशा के दौर से गुजर रहा है। इसके कारण परिवार में ऐश्वर्या के प्रति व्यवहार में भी बदलाव दिखाई पड़ रहा है। चंद्रिका राय की बेचैनी का एक कारण यह भी है।

प्रवक्ता पद छोड़ने के बावजूद अभी जदयू में बने रहेंगे डॉ. आलोक

राज्य ब्यूरो, पटना : जदयू के प्रदेश प्रवक्ता पद से इस्तीफा देने के बावजूद डॉ. अजय आलोक दल में बने रहेंगे। शनिवार को उनके एक ट्वीट को केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह ने रीट्वीट किया। इसके बाद चर्चा शुरू हो गई कि वे भाजपा में जा सकते हैं। इस संदर्भ में डॉ. आलोक ने कहा कि उन्होंने प्रवक्ता पद छोड़ा है। जदयू के सदस्य हैं और किसी अन्य दल में जाने के बारे में विचार नहीं कर रहे हैं। गिरिराज के रीट्वीट पर उन्होंने कहा कि इस संदर्भ में उनसे कोई बातचीत नहीं हुई है। डॉ. आलोक हाल में यह बोल कर चर्चा में आए कि घुसपैठिये सीमा पर तैनात बीएसएफ के जवानों को रिश्वत देकर देश में आ रहे हैं। उनके इस बयान को जदयू ने भाजपा और खासकर गृह मंत्री अमित शाह के खिलाफ माना। बीएसएफ और अन्य पारा मिलिट्री फोर्स गृह मंत्रालय के अधीन है। डॉ. आलोक ने घुसपैठियों को तरजीह देने के लिए बंगाल की सीएम ममता बनर्जी की भी आलोचना की थी, लेकिन जदयू नेतृत्व ने बीएसएफ की रिश्वतखोरी वाले हिस्से को गंभीरता से लिया। जदयू के प्रदेश अध्यक्ष बशिष्ठ नारायण सिंह और बाद में राष्ट्रीय महासचिव केसी त्यागी ने डा. आलोक को फोन कर नेतृत्व की नाराजगी की जानकारी दी।

गांव अध्यक्ष बनाकर संगठन को मजबूत करेगी कांग्रेस

नईदुनिया, रायपुर

लोकसभा में करारी हार के बाद कांग्रेस गावों में खुद को और मजबूत करने में जुट रही है। हर गांव मे पार्टी को मजबूत करने के लिए युवाओं को जोड़ने का मिशन तैयार किया गया है। संगठन ने ग्रामीण युवाओं को पार्टी से जोड़ने की जिम्मेदारी युवा कांग्रेस को दी है। युवा कांग्रेस पहली बार गांव अध्यक्ष के पदों पर नियुक्ति करेगी। गांव अध्यक्ष अपनी कमेटी बनाएंगे, ऐसा करके हर गांव में युवाओं को जोड़ने की कवायद चल रही है।

लोकसभा में नौ सीटों पर हार की समीक्षा करने पर यह बात सामने आई कि युवाओं का एकतरफा वोट भाजपा को गया है। शहरी इलाकों की तुलना में ग्रामीण इलाकों में कांग्रेस का युवा वोट का प्रतिशत फिर भी ठीक था। इस कारण पार्टी ने तय किया है कि ग्रामीण इलाकों के युवाओं को ज्यादा फोकस किया जाए। इस पर पीसीसी ने युवा कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष पूर्णचन्द्र पाढ़ी से मिशन ग्रामीण युवा पर बात की है। उसके बाद पाढ़ी और युवा कांग्रेस के प्रदेश पदाधिकारियों, जिलाध्यक्षो से गांव के दौरे पर चर्चा शुरू हो गई है।

इस वर्ष के अंत मे नगरीय निकाय चुनाव होना है, उसकी तैयारी तो प्रदेश कांग्रेस कमेटी ने पहले ही शुरू कर दी है। जिलेवार बैठक का दौर हो चुका है। पार्टी नगरीय निकाय के साथ अगले साल होने वाले पंचायत चुनाव की तैयारी में भी लग गई है। युवा कांग्रेस के गांव अध्यक्षों की नियुक्ति पंचायत चुनाव की तैयारी का हिस्सा रहेगी।

ब्लॉक स्तर पर होंगी बैठकें

युवा कांग्रेस के प्रदेश महासचिव अशरफ हुसैन ने बताया कि प्रदेश अध्यक्ष से लेकर दूसरे प्रदेश पदधिकारी गावों का 20 जून के बाद से दौरा शुरू करेंगे। ब्लॉक स्तर पर बैठकों का दौर चलेगा। संगठन के एक ब्लॉक में कई गांव आते हैं, इसलिए ब्लॉक की बैठक में ही गांव अध्यक्ष के नाम तय किये जाएंगे।

कितने यूटर्न...

बार-बार फैसले बदलने से मप्र सरकार की किरकिरी

सरकार की छवि पर पड़ रहा है बुरा असर, पिछले चार महीनों में अफसरों के तबादलों में भी बार-बार संशोधन

नईदुनिया, भोपाल

फैसलों में बार-बार बदलाव करने से मध्य प्रदेश सरकार की किरकिरी हो रही है। पिछले चार महीने में अफसरों के तबादला आदेशों में बार-बार संशोधन किया गया। मामला वंदे मातरम् का हो या मीसाबंदियों की पेंशन रोके जाने का, सारे मामलों में कमलनाथ सरकार को निर्णय लेने के बाद बैकफुट पर आना पड़ा है। सरकार बनने के पहले से कांग्रेस कह रही थी कि राज्य सरकार कोई इनवेस्टर्स मीट नहीं करेगी, सरकार बनने के बाद फैसला बदल गया। अब 18-19 अक्टूबर को इनवेस्टर्स मीट कराने की तैयारी शुरू कर दी गई है। इसका नाम बदलकर 'मैग्नीफिशेंट एमपी' कर दिया गया है।

वंदे मातरम् पर फैसला पलटा : सबसे पहला मामला वंदेमातरम् का था। मंत्रालय में हर महीने की पहली तारीख को होने वाला वंदे मातरम् गायन सरकार ने आनन-फानन में बंद कराया। चारों तरफ विरोध हुआ तो इसे फिर शुरू करवा दिया।

मीसाबंदी पर भी यूटर्न : मीसाबंदी पेंशन रोकने के लिए सरकार ने आदेश जारी किया। सामान्य प्रशासन मंत्री डॉ. गोविंद सिंह ने कहा कि इनके खिलाफ अपराध भी दर्ज कराया जाए। दबाव बना तो फिर नया आदेश जारी किया कि सिर्फ भौतिक सत्यापन कर सम्मान निधि यानी पेंशन शुरू कर दी जाए।

मैग्नीफिशेंट एमपी इंदौर में 18-19 को : कांग्रेस ने अपने वचन-पत्र में कहा था कि वह इन्वेस्टर्स मीट का आयोजन कर फिजूलखर्ची नहीं करेगी पर निवेशकों को आकर्षित करने के लिए सरकार इंदौर में 18 और 19 अक्टूबर को मैग्नीफिशेंट एमपी के नाम से निवेशकों का सम्मेलन करने जा रही है।

तबादलों में बार-बार संशोधन : सत्ता में आने के बाद से ही तबादलों को लेकर सरकार असमंजस में रही है। आचार संहिता लागू किए जाने के पहले कलेक्टर-कमिश्नर और प्रमुख सचिवों के जितने तबादले किए, उनमें कई बार संशोधन किया गया। एक अफसर को लापरवाही के नाम पर हटाया, हफ्ते भर बाद उसे प्राइम पोस्टिंग दे दी। यह सिलसिला अब तक चल रहा है। सतना कलेक्टर सतेंद्र सिंह को पहले हटाया, फिर वहीं कर दिया। वित्त सचिव बनाए गए गुलशन बामरा को सागर कमिश्नर बनाया, फिर संशोधन कर दिया। चुनाव आयोग ने जिन कलेक्टरों को हटाया था, उनमें श्रीनिवास शर्मा को फिर से छिंदवाड़ा और ललित दाहिमा को पुनः शहडोल में तैनात कर दिया गया।

" कमलनाथ सरकार मिस्टर बंटाधार के नए अवतार के रूप में साबित हो रही है। अब तक के शासनकाल में फैसले लेने में सरकार फेल रही है। केजरीवाल सरकार की तरह अपनी असफलता का ठीकरा दूसरों के सिर फोड़ रही है। पानी-बिजली से लेकर गवर्नेंस तक हर मोर्चे पर सरकार ने जनता को निराश किया है।

– रजनीश अग्रवाल, प्रवक्ता, भाजपा मप्र

" सरकार ने किसी भी विषय पर यूटर्न नहीं लिया है। यदि हमने कुछ कहने के बाद उसमें परिवर्तन किया है तो उसका अध्ययन करने के बाद शासन को लगता है कि बदलाव जरूरी है तो शासन उस बदलाव को उचित मानता है। कई विषयों पर राज्य शासन की ओर से या वचन-पत्र में उल्लेख किया होता है तो उसके बाद जब तथ्य मालूम पड़ते हैं कि जनता का हित किसमें है या नीति परिवर्तन करने से लाभ होगा तो ऐसी नीतियां बदली जा सकती हैं, इनमें यूटर्न जैसी कोई बात नहीं है।

– सीपी शेखर, उपाध्यक्ष, मप्र कांग्रेस कमेटी

भाई समेत बीजद सांसद अनुभव के खिलाफ केस

जागरण संवाददाता, कटक : ओडिशा के कटक स्थित केंद्रपाड़ा के बीजू जनता दल सांसद सह अभिनेता अनुभव महांती और उनके भाई अनुप्रास महांती पर बदसलूकी करने का आरोप लगा है। झांझरीमंगला इलाके की सस्मिता आचार्य की शिकायत पर पुरी घाट थाना में मामला दर्ज करने के बाद पुलिस घटना की जांच कर रही है। बीजद सांसद ने महिला द्वारा लगाए गए आरोप को गलत बताया है।

सांसद अनुभव महांती ने शुक्रवार शाम पत्रकारों से बातचीत में महिला द्वारा लगाए आरोप का खंडन किया। कहा कि पुलिस जांच के बाद तमाम बातें सामने आएंगी। बताया कि विगत 12 जून की रात सस्मिता हमारे घर के सामने पहुंचीं और गाली गलौज करने लगी थीं। मैं घर से बाहर आया और उन्हें समझाया, मगर वह नहीं मानीं। घर के बाहर काफी समय तक बैठी रहीं और शोर-शराबा करने लगीं तो मजबूरन पुलिस को बुलाया और महिला को उसके घर छोड़ देने को कहा था। वहीं, सस्मिता आचार्य ने मीडिया को बताया कि 12 जून की रात को सांसद अनुभव व उनके भाई अनुप्रास ने उनके साथ बदसलूकी की।

चुनाव में लौटे वोटरों को अपने पाले में बचाने की कवायद में जुटेगी भाजपा

नईदुनिया, रायपुर

- छग में आज प्रदेश कार्यसमिति की बैठक में बनेगी रणनीति, नगरीय निकाय चुनाव पर होगा फोकस

छत्तीसगढ़ के लोकसभा चुनाव में भाजपा के पाले में लौटे वोटरों को बचाने की कवायद भाजपा शुरू करेगी। भाजपा की प्रदेश कार्यसमिति की बैठक रविवार को होगी। इसमें सदस्यता अभियान को लेकर मंथन किया जाएगा।

भाजपा के आला नेताओं ने बताया कि विधानसभा चुनाव में पार्टी से नाराज वोटर लोकसभा चुनाव में वापस लौटे हैं। नगरीय निकाय में इन वोटरों के दम पर ही चुनाव फतह करने की उम्मीद की जा रही है। अब इन वोटरों को पार्टी का सदस्य बनाने के लिए अभियान चलाया जाएगा।

एकात्म परिसर में होने वाली प्रदेश कार्यसमिति की बैठक में पार्टी के आला नेता शामिल होंगे। प्रदेश अध्यक्ष विक्रम उसेंडी ने बताया कि बैठक में नए सांसदों का स्वागत, नए सदस्यों को जोड़ने के लिए अभियान चलाने और नगरीय निकाय चुनाव को लेकर विचार-विमर्श किया जाएगा। इस बैठक में प्रदेश प्रभारी डॉ अनिल जैन भी शामिल होंगे। भाजपा के आला नेताओं ने बताया कि विधानसभा चुनाव में नाराजगी के कारण बड़ी संख्या में वोटर कांग्रेस के पक्ष में चले गये थे। पांच महीने के कांग्रेस सरकार के कामकाज के कारण ये वोटर पार्टी के पक्ष में आए हैं। अब इन वोटरों से संगठन के पदाधिकारी संपर्क करेंगे और पार्टी की सदस्यता दिलाएंगे।

कांग्रेस सरकार की कमियों को उजागर करने की बनेगी रणनीति : नगरीय निकाय चुनाव से पहले कांग्रेस सरकार की गड़बड़ियों और जनता विरोधी नीतियों को उजागर करने की भी रणनीति पर विचार किया जाएगा। प्रदेशभर में बिजली कटौती और ज्यादा बिजली बिल की शिकायत को लेकर सरकार के खिलाफ विरोध की रणनीति भी तैयार की जाएगी।

834 कछुओं के साथ राजस्व खुफिया निदेशालय (डीआरआइ) की कोलकाता जोनल यूनिट की टीम ने हावड़ा के सांतरागाछी स्टेशन से तीन तस्करों को गिरफ्तार किया है। कछुओं को चेन्नई से कोरमंडल एक्सप्रेस से लाया गया था और बांग्लादेश में इसकी तस्करी की जानी थी।

न्यूज गैलरी

निदा को कार सवार युवकों ने दी धमकी, एफआइआर

बरेली : घर वालों के साथ बाजार से लौट रही आला हजरत खानदान की बहू रही निदा खान को शुक्रवार देर रात करीब एक बजे कार सवार तीन लोगों ने धमकी दी। निदा ने रात में ही बरेली के बारादरी थाने जाकर तहरीर दी। पुलिस ने जांच पड़ताल के बाद तीन अज्ञात कार सवार के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया है। तीन तलाक के खिलाफ आवाज बुलंद करने वाली निदा ने पुलिस को दी तहरीर में कहा कि शुक्रवार रात 12.50 बजे वह कार से परिवार वालों के साथ बाजार से घर लौट रही थीं। रास्ते में उनके ससुर उस्मान रजा खां उर्फ अंजुम मियां की कार में आए तीन अज्ञात लोगों ने उन्हें जान से मारने की धमकी दी। कहा कि शौहर शीरान रजा खां के खिलाफ कोर्ट में चल रहा मुकदमा वापस ले लो। निदा ने बताया कि उनके घर के सामने कैमरा लगा है। उसमें पूरी घटना कैद हो गई है। (जासं)

आतंकवादी बनने जा रहे चार युवकों को परिजनों को सौंपा

बारामूला : चोरी छुपे सीमा पार कर गुलाम कश्मीर के आतंकी प्रशिक्षण शिविरों में प्रशिक्षण लेने जा रहे चार युवकों को सेना ने पकड़कर उनके परिवारों को सौंप दिया है। उत्तरी और दक्षिणी कश्मीर के रहने वाले इन युवकों को गुरुवार को पकड़ा गया था। युवकों की पहचान आदिल अहमद (22) पुत्र गुलाम हसन मीर निवासी हरदु हांगिर यारीपोरा कुलगाम, ताहिर शमीम लोन (19) पुत्र शमीम अहमद निवासी कापरन शोपियां, समीर अहमद भट (18) पुत्र गुलाम हसन निवासी सीर दरी सोपोर और नवीद अहमद परा (19) पुत्र गुलाम नबी निवासी तापर पट्टन के रूप में हुई है। बता दें कि युवक कुछ दिन पहले अचानक लापता हो गए थे। इसके बाद उनके परिजनों ने थाने में गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज करवाई थी। पुलिस ने चारों को ऊड़ी क्षेत्र बोनयार इलाके के निकट धर दबोचा। (जासं)

किडनी कांड में दो और आरोपित गिरफ्तार

कानपुर : किडनी कांड में फरार चल रहे दो और आरोपित शनिवार को एसआइटी के हत्थे चढ़ गए। दोनों पहले किडनी देने के लिए गिरोह के संपर्क में आए थे, लेकिन मरीजों से मैच न होने की वजह से अपने मंसूबों में सफल नहीं हो सके। इसके बाद दोनों ही गिरोह में शामिल हो गए और डोनर उपलब्ध कराकर कमीशन लेने लगे। मामले में पुलिस अब तक 14 लोगों को पकड़ चुकी है। कानपुर के एसपी क्राइम राजेश यादव ने बताया कि मुकदमे की याची इलेक्ट्रीशियन की पत्नी को अक्टूबर 2018 में हनुमंत विहार निवासी उसके पति के दोस्त मोहित निगम, साथी जुनैद और श्याम तिवारी अपने साथ दिल्ली ले गए थे और उसकी किडनी बेचने की कोशिश की थी। उसी मामले में एसआइटी ने मोहित निगम और आजमगढ़ कंधरापुर निवासी सीपू राय उर्फ को गिरफ्तार किया है। (जासं)

बंगाल में फिर हिंसा, चार की हत्या

बिगड़े हालात ▶ घर पर हमला कर प्रधान के बेटे, भाई और पड़ोसी को उतारा मौत के घाट

भारी तादाद में पुलिस बल तैनात, तृणमूल ने कांग्रेस व भाजपा पर लगाया आरोप

जागरण संवाददाता, कोलकाता

लोकसभा चुनाव से पहले पंचायत प्रधान एवं तृणमूल नेता की हत्या के बाद से सियासी हिंसा की आग में सुलग रहा पश्चिम बंगाल का डोमकल एक बार फिर दहल उठा। बदमाशों ने एक मकान पर धावा बोलकर पंचायत प्रधान के बेटे, बड़े भाई और पड़ोसी की हत्या कर दी। हमले में एक व्यक्ति गंभीर रूप से जख्मी हो गया। जिनकी हत्या की गई है, उन्हें तृणमूल कांग्रेस ने अपना पार्टी कार्यकर्ता बताया है। पुलिस ने इस मामले में तीन लोगों को हिरासत में लिया है। उनसे पूछताछ की गई है। तनाव के मद्देनजर गांव में भारी तादाद में पुलिस बल की तैनाती की गई है। स्थानीय विधायक अबू ताहेर का आरोप है कि कांग्रेस और भाजपा आश्रित बदमाशों ने वारदात को अंजाम दियाहै। उधर, हुगली जिले के खानाकुल में तृणमूल नेता मनोरंजन पाल की हत्या कर दी गई।

गौरतलब है कि डोमकल के हलसानापाड़ा निवासी पंचायत प्रधान अलताफ शेख माकपा छोड़कर तृणमूल कांग्रेस में शामिल हो गए थे। लोकसभा चुनाव से पहले गत 18 मार्च को उनकी हत्या कर दी गई। इस मामले में कई लोगों को गिरफ्तार किया गया था, जो वर्तमान में जमानत पर बाहर हैं। सूत्रों के अनुसार शनिवार सुबह करीब साढ़े चार बजे कुचियामारा गांव में अलताफ के घर पर कुछ लोगों ने हमला बोल दिया। परिवार के सदस्यों को निशाना बनाकर बमबारी और फायरिंग की गई। गोली लगने से अलताफ के बेटे सोहेल राणा, बड़े भाई खैरुद्दीन मंडल और पड़ोसी रहीदुल शेख की मौत हो गई। एक अन्य व्यक्ति गंभीर रूप से जख्मी हो गया। वारदात को अंजाम देने के बाद बदमाश फायरिंग करते हुए फरार हो गए। सूचना पर पहुंची पुलिस को देख गांववालों का गुस्सा फूट पड़ा। उन्होंने पुलिस को गांव में घुसने नहीं दिया। इसके बाद भारी तादाद में पहुंचे पुलिस बल ने किसी तरह शवों को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा। घायल को मुर्शिदाबाद मेडिकल कॉलेज अस्पताल में भर्ती करवाया गया है। इस मामले में तीन लोगों को हिरासत में लिया गया है। तृणमूल नेता अबू ताहेर ने कांग्रेस और भाजपा समर्थित बदमाशों पर वारदात को अंजाम देने का आरोप लगाया है। कांग्रेस, माकपा और भाजपा ने तृणमूल के आरोप को बेबुनियाद करार दिया है।

पश्चिम बंगाल में हिंसा की बढ़ती घटनाओं और 'राजनीतिक आंतकवाद' के विरोध में सामाजिक कार्यकर्ताओं ने कोलकाता में शनिवार को स्वामी विवेकानंद के आवास से श्याम बाजार तक मशाल जुलूस निकाला। एएनआइ

भाजपा कार्यकर्ताओं की हत्या के आरोप में चार गिरफ्तार

उत्तर 24 परगना जिले के संदेशखाली में दो भाजपा कार्यकर्ताओं प्रदीप मंडल व सुकांत मंडल की हत्या के मामले में एक सप्ताह बाद पुलिस ने चार लोगों को गिरफ्तार किया है। चारों तृणमूल कांग्रेस के नेता व कार्यकर्ता बताए जा रहे हैं। इनके नाम आखर अली गायन, जावेद अली मोल्ला, मोइनुद्दीन मोल्ला और मैजुदिन मोल्ला के रूप में हुई है। आखर अली पंचायत सदस्य है। चारों को शुक्रवार देर रात गिरफ्तार किया गया। पुलिस हत्याकांड में शामिल बाकी आरोपितों का पता लगा रही है।

भाजपा महिला नेता की सरेराह पिटाई

दक्षिण 24 परगना जिले के बासंती थानांतर्गत मोकामबेड़िया में भाजपा महिला मोर्चा की ब्लॉक नेता व उसके भाई की सरेराह पिटाई की की गई है। पीड़ितों के नाम रिंकी सरदार और रिंकू सरदार हैं। दोनों को बासंती ग्रामीण अस्पताल में भर्ती कराया गया है। रिंकी ने तृणमूल पर हमले का आरोप लगाया है।

डॉक्टर की आत्महत्या से रोहतक पीजीआइ में उबाल

जागरण संवाददाता, रोहतक

- बहन की शादी के लिए छुट्टी न मिलने पर लगाई थी फांसी
- आरोपित विभागाध्यक्ष डॉ. गीता निलंबित, बर्खास्त करने की मांग

पंडित बीडी शर्मा हेल्थ यूनिवर्सिटी में पीजी डॉक्टर ओमकार के आत्महत्या के बाद उपजा आक्रोश थमने का नाम नहीं ले रहा। यूजी व पीजी डॉक्टर दूसरे दिन भी हड़ताल पर रहे, जिससे मरीजों को परेशानी पेश आई। इस बीच, पीजीआइ प्रबंधन और डॉक्टरों के बीच सहमति नहीं बन सकी है।

लगातार दूसरे दिन डॉक्टरों की हड़ताल के कारण वार्ड, इमरजेंसी और ट्रॉमा सेंटर लगभग खाली पड़े हुए हैं। वार्डों में मरीज परेशान रहे। हड़ताली डॉक्टरों से वार्ता के लिए गठित नौ सदस्यीय टीम पहुंची, लेकिन सहमति नहीं बन पाने के कारण वापस लौट गई। आंदोलन तेज करने के लिए शनिवार शाम डॉक्टरों ने बैठक कर नई कमेटी बनाने का फैसला किया। उनकी मांग है कि आरोपित विभागाध्यक्ष डॉ. गीता गठवाला को बर्खास्त किया जाए, मरीजों की फाइलों को रखने की जिम्मेदारी स्टाफ नर्सों को दी जाए और चिकित्सक से सप्ताह में अधिकतम 48 घंटे ही कार्य कराया जाए।

यह था मामला: पीडियाट्रिक विभाग के पीजी डॉक्टर ओमकार ने बृहस्पतिवार की रात आत्महत्या कर ली थी। पीजी हॉस्टल स्थित उनके कमरे में शव फांसी पर लटका मिला था। मौके से कोई सुसाइड नोट नहीं मिला था। साथी चिकित्सकों का आरोप है कि डॉ. ओमकार के बहन की शादी है। इसके लिए उन्होंने शादी का जोड़ा आदि खरीद लिया था। छुट्टी के लिए आवेदन किए थे, जो मंजूर नहीं हुआ। इससे दुखी हो उन्होंने शादी के जोड़े से ही फांसी लगा ली। घटना के बाद ही डॉक्टरों ने हंगामा शुरू कर दिया था। विभागाध्यक्ष डॉ. गीता के घर पहुंचकर उनसे अभद्रता व तोड़फोड़ भी की थी। एफआइआर दर्ज किए जाने के बाद विवि प्रबंधन ने डॉ. गीता को निलंबित कर दिया था। डॉक्टर बर्खास्त करने की मांग कर रहे हैं।

> वार्ता के लिए गठित टीम मौके पर गई थी, लेकिन चिकित्सकों की मांगों पर सहमति नहीं बन पाई है। नियमानुसार जो भी मांगें हैं, उन्हें पूरा किया जाएगा।
> **डॉ. वरुण अरोरा, पीआरओ पीजीआइएमएस**

बच्चे की मौत पर ठहराया था दोषी: एक साल पहले एक बच्ची की मौत के मामले में डॉ. ओमकार के खिलाफ मामला कोर्ट में विचाराधीन है। 15 जनवरी 2018 को अकबरपुर के राजेश ने थाने में शिकायत दी थी कि उसकी नौ माह की भतीजी को उपचार के लिए पीजीआइ लाया गया था। इमरजेंसी में डॉक्टरों ने पहले तो बच्ची को देखा नहीं फिर बाद में उसे दवा देकर घर भेज दिया था, जिसके बाद बच्ची की मौत हो गई थी। पीजीआइ की कमेटी ने डॉ. ओमकार को दोषी पाया था।

एईएस का कहर जारी, बिहार में 20 और बच्चों की जान गई

जागरण संवाददाता, मुजफ्फरपुर

बिहार में एईएस (एक्यूट इंसेफलाइटिस सिंड्रोम) का शनिवार को और भयावह रूप दिखा। इसके चलते शनिवार को 20 बच्चों की मौत हो गई। इसमें मुजफ्फरपुर में 17, पूर्वी चंपारण में दो और वैशाली में एक बच्चे की मौत हुई है। मुजफ्फरपुर के एसकेएमसीएच और केजरीवाल अस्पताल में एईएस समेत विशेष वार्ड पीड़ितों से भर गए हैं। एक बेड पर दो से तीन मरीजों का इलाज चल रहा। आज दोनों अस्पतालों में 65 बच्चों को भर्ती कराया गया है। एसकेएमसीएच में 39 और केजरीवाल में 26 बच्चों को लाया गया। अब तक कुल 292 बच्चों को भर्ती कराया जा चुका है। वहीं, शुक्रवार को दोनों अस्पतालों में 10 बच्चों की मौत हो गई थी। वैशाली के भगवानपुर प्रखंड के हरिवंशपुर गांव में एक बच्ची ने भी शनिवार को चमकी बुखार से दम तोड़ दिया।

स्वास्थ्य विभाग के प्रधान सचिव ने लिया जायजा : शनिवार की सुबह स्वास्थ्य विभाग के प्रधान सचिव संजय कुमार एसकेएमसीएच पहुंचे। उन्होंने एईएस वार्ड का जायजा लिया और इलाज के संबंध में पूरी जानकारी ली। प्राचार्य, अधीक्षक और विभागाध्यक्ष के साथ समीक्षा बैठक भी की। उन्होंने कहा कि बच्चों की मौत बेहद चिंताजनक है। हर एक बच्चे की जान महत्वपूर्ण है। विशेषज्ञ डॉक्टर हर स्तर पर इलाज कर रहे हैं। प्रोटोकॉल का पूरा ख्याल रखा जा रहा। पटना एम्स से डॉ. लोकेश तिवारी और डॉ. रामानुज के नेतृत्व में विशेष रूप से प्रशिक्षित छह नर्सों की टीम देर शाम एसकेएमसीएच पहुंची।

केंद्रीय गृहराज्य मंत्री ने जाना हाल : केंद्रीय गृहराज्य मंत्री नित्यानंद राय भी दोपहर करीब सवा चार बजे एसकेएमसीएच पहुंचे। उन्होंने पीआइसीयू में जाकर पीड़ित बच्चों का हाल जाना। चिकित्सकों से भी जानकारी ली।

रविवार को आएंगे केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री

रविवार की सुबह 10 बजे केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री डॉ. हर्षवर्धन मुजफ्फरपुर पहुंचेंगे। वह यहां केंद्रीय और राज्य के स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों के साथ बैठक करेंगे। इसके बाद एसकेएमसीएच और केजरीवाल अस्पताल में जाकर बच्चों को देखेंगे। दोपहर करीब दो बजे वे पटना के लिए रवाना हो जाएंगे। वहां भी चार बजे स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों के साथ बैठक करेंगे।

आतंकी फंडिंग रोकने के लिए गृह मंत्रालय ने बनाया निगरानी समूह

नई दिल्ली, एएनआइ : केंद्र ने एक नया आतंकी निगरानी समूह (टीएमजी) गठित किया है। समूह गठित करने का उद्देश्य जम्मू एवं कश्मीर में आतंकियों के वित्तीय ढांचे को ध्वस्त करना और घाटी में आतंकियों की आर्थिक मदद करने वालों पर प्रहार करना है। सूत्रों ने कहा कि जम्मू एवं कश्मीर में अतिरिक्त डीजीपी सीआइडी इस समूह के चेयरमैन होंगे।

टीएमजी में इंटेलिजेंस ब्यूरो (आइबी), राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआइए), केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआइ), प्रत्यक्ष कर एवं कस्टम के केंद्रीय बोर्ड (सीबीआइसी), केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड (सीबीडीटी), प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) के प्रतिनिधि भी होंगे। उच्च पदस्थ सूत्रों के मुताबिक, टीएमजी में शामिल सभी एजेंसियों द्वारा ठोस कार्रवाई शुरू कर दी गई है। यह कदम घाटी में आतंकियों के आर्थिक मददगारों पर अंकुश लगाने के लिए उठाया जा रहा है। गृह मंत्री का प्रभार संभालने के बाद अमित शाह ने अधिकारियों एवं अन्य के साथ आंतरिक सुरक्षा मुद्दे पर बैठकें की हैं।

सुनिश्चित करेंगे एएन-32 जैसी विमान दुर्घटना फिर न हो : धनोआ

नई दिल्ली, एएनआइ/प्रेट्र : वायुसेना प्रमुख बीएस धनोआ ने शनिवार को कहा, यह सुनिश्चित किया जाएगा कि एएन-32 जैसी विमान दुर्घटना दोबारा न हो। साथ ही उन्होंने कहा कि वायुसेना जल्द ही अरुणाचल प्रदेश में हुई इस दुर्घटना के कारणों का पता लगा लेगी।

हैदराबाद के समीप डुंडीगल स्थित वायुसेना अकादमी में कंबाइंड ग्रेजुएशन परेड से इतर पत्रकारों से बातचीत में धनोआ ने कहा, 'हमने फ्लाइट डाटा रिकॉर्डर और कॉकपिट वॉइस रिकॉर्डर बरामद कर लिया है... हम तह में जाकर पता लगाएंगे कि क्या हुआ और हम यह कैसे सुनिश्चित कर सकते हैं कि ऐसा दोबारा नहीं हो।' वायुसेना प्रमुख ने दावा किया कि अरुणाचल प्रदेश में इलाका बहुत जोखिम भरा है और ज्यादातर समय वहां बादल छाए रहते हैं। जब उस इलाके में बादलों वाले मौसम में उड़ान भरते हैं तो सिर्फ वायुसेना ही नहीं बल्कि पवनहंस और अन्य विमान भी दुर्घटना का शिकार बन जाते हैं। वायुसेना प्रमुख ने कंबाइंड ग्रेजुएशन परेड का निरीक्षण भी किया। इस मौके पर 24 महिलाओं समेत 152 कैडेट्स फ्लाइंग ऑफिसर के तौर पर वायुसेना में शामिल में शामिल हो गए। अव्वल आने वाले फ्लाइंग ऑफिसर जी. नवीन रेड्डी को 'सॉर्ड ऑफ ऑनर' प्रदान की गई। जिसके बाद धनोआ ने उन्हें वायुसेना प्रमुख के 'विंग्स' भी प्रदान किए।

हैदराबाद के समीप डुंडीगल स्थित वायुसेना अकादमी में वायुसेना प्रमुख बीएस धनोआ। एपी

शवों को निकालने में मौसम बना बाधा : हादसे का शिकार बने एएन-32 विमान में सवार 13 लोगों के शवों को निकालने में खराब मौसम बाधा बन गया है। शिलांग में वायुसेना प्रवक्ता रत्नाकर सिंह ने बताया कि शनिवार सुबह शवों को निकालने का अभियान शुरू किया गया था, लेकिन दुर्घटनास्थल पर खराब मौसम की वजह से वह आगे नहीं बढ़ सका। चीता और एएलएच हेलीकॉप्टरों को तैयार रखा गया है। जैसे ही मौसम ठीक होगा, अभियान फिर से शुरू किया जाएगा।

ओडिशा में आर्थिक तंगी से परेशान पिता ने तीन बेटियों को मार डाला

जागरण संवाददाता, भुवनेश्वर : ओडिशा के प्रमुख पर्व रजो पर्व के दिन एक हृदयविदारक घटना सामने आई है। इस तीन दिवसीय पर्व के दौरान किशोरियां नए कपड़े पहनकर सजने संवरने के साथ ही मेहंदी लगाती हैं और झूले का आनंद लेती हैं। तीन दिनों तक इनसे घर का कोई भी काम नहीं कराने की परंपरा है। ऐसे त्योहार के दिन जब किशोरियों को विशेष तवज्जो दी जाती है, उस दिन एक पिता ने अपनी तीन मासूम बेटियों की कुल्हाड़ी से काटकर हत्या कर दी। इसके बाद खुद भी पंखे से फंदा लगाकर खुदकशी कर ली। मृतकों में पिता दुर्गा सिद्धू व उसकी तीन नाबालिग पुत्रियां चबे, चुकुल व मुक्ता शामिल हैं। तीनों किशोरियों की उम्र 6 से 9 साल के बीच बताई गई है।

क्योंझर जिला के आनंदपुर थाना अंतर्गत पुली बसा गांव में घटी इस घटना के पीछे आर्थिक तंगी प्रमुख कारण बताई गई है। क्योंझर जिला के बसा गांव के दुर्गा सिद्धू की पत्नी का तीन साल पहले निधन हो गया था। इसके बाद तीनों बच्चियों चबे, चुकुल व मुक्ता के लालन-पालन और बुजुर्ग मां की पूरी जिम्मेदारी दुर्गा के कंधे पर थी। इसके चलते वह तनाव में थे। शुक्रवार को बच्चियां किसी बात पर झगड़ने लगीं तो उसने गुस्से में कुल्हाड़ी से अपनी तीनों की हत्या कर दी। इसके बाद खुदकशी कर ली।

वडोदरा में सीवर की सफाई में दम घुटने से सात की मौत

राज्य ब्यूरो, अहमदाबाद : वडोदरा से 30 किमी दूर हाइवे पर स्थित एक होटल के सीवर टैंक की सफाई करने उतरे चार सफाईकर्मियों की जहरीली गैस के कारण मौत हो गई। एक-एक कर उतरे चार सफाईकर्मियों की तलाश में टैंक में उतरे तीन होटलकर्मी भी इस हादसे का शिकार हो गए। राज्य सरकार ने मृतकों के परिजनों को चार-चार लाख के मुआवजे की घोषणा की है। साथ ही दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई का आदेश दिया है। वडोदरा की डभाई तहसील के फरतकुई गांव के पास हाइवे पर बने होटल दर्शन के शौचालय के सीवर टैंक की सफाई के लिए चार सफाईकर्मी पहुंचे थे। शुक्रवार मध्य रात्रि के दौरान पहला सफाईकर्मी टैंक में उतरा तो वापस नहीं आया। उसके साथियों ने आवाज लगाई और दूसरा उसे तलाश करने टैंक में उतरा। इसी तरह उनकी तलाश में तीसरे व चौथे सफाईकर्मी भी टैंक में उतरे और जहरीली गैस से दम घुटने से मौत के शिकार हो गए। इन चारों की पहचान नजदीक के गांव थुवावी के महेश पाटनवाडिया (47), अशोक हरिजन (45), ब्रजेश हरिजन(23) व महेश हरिजन (25) के रूप में हुई। इन चारों की तलाश में तीन होटलकर्मी विजय चौधरी, सहदेव वसावा व अजय वसावा भी सीवर टैंक में उतरे और वे भी उनकी तरह जहरीली गैस के शिकार हो गए।

जिला कलेक्टर किरण झवेरी ने बताया कि बीती रात हुई घटना के बाद होटल मालिक हसन अब्बास बोरानिया इस घटना के बाद से फरार है। पुलिस उसकी तलाश कर रही है।

लखनऊ में मैनहोल में उतरे दो मजदूरों की मौत

जासं, लखनऊ : फैजाबाद रोड स्थित डीपी बोरा पेट्रोल पंप के पास शनिवार को मैनहोल में सफाई करने उतरे दो मजदूरों की जहरीली गैस से मौत हो गई। असम के बरपेटा जिला, गांव बक्सा गोवर्धन निवासी रैबुल खान (17) और शहाबुद्दीन (34) डालीगंज में गोमती नदी के किनारे झुग्गी बस्ती में रहते थे। दोनों ठेकेदार तुमेज खान के साथ फैजाबाद रोड पर शनिवार सुबह 11 बजे से सीवर लाइन की सफाई कर रहे थे। इसी दौरान जहरीली गैस से दोनों की मौत हो गई।

छह मोबाइल से सुलझेगी दरवेश हत्याकांड की गुत्थी

जागरण संवाददाता, आगरा : आगरा दीवानी में उप्र बार कौंसिल की अध्यक्ष दरवेश सिंह की हत्या की गुत्थी उलझती ही जा रही है। हत्यारोपित वेंटिलेटर पर है। इसलिए पुलिस को हत्या की वजह जानने में पसीने छूट रहे हैं। अब घटनास्थल से मिले छह मोबाइल से राज खोलने की कोशिश हो रही है। इन्हें पुलिस जांच के लिए फॉरेंसिक लैब भेज रही है।

उप्र बार कौंसिल की अध्यक्ष बनने के बाद दीवानी में दरवेश सिंह का स्वागत समारोह चल रहा था। इस दौरान उनके साथी अधिवक्ता मनीष सिंह ने गोली मारकर हत्या कर दी थी। मनीष ने खुद को भी कनपटी में गोली मार ली। इसके बाद उसका गंभीर हालत में गुरुग्राम स्थित अस्पताल में इलाज चल रहा है।

अभी तक पुलिस हत्या की वजह का पता नहीं लगा सकी है। इसके लिए पुलिस ने दरवेश का फेसबुक एकाउंट देखा। इसमें जनवरी के बाद कोई पोस्ट नहीं है। इसी तरह मनीष शर्मा के फेसबुक एकाउंट से भी पुलिस को कुछ हाथ नहीं लगा है। घटनास्थल से मिले छह मोबाइल से अब पुलिस की उम्मीद जुड़ी है। दरवेश की जिस चैंबर में हत्या हुई थी, उसी में ये सभी मोबाइल मिले थे।

जाको राखे साइयां मार सके न कोय...

चलती ट्रेन में चढ़ना अक्सर जानलेवा साबित हो सकता है। ऐसा ही एक नजारा शनिवार को उत्तर प्रदेश के सम्भल के चन्दौसी रेलवे स्टेशन पर देखने को मिला। स्टेशन से रवाना हुई दिल्ली-बरेली एक्सप्रेस ट्रेन में एक यात्री ने चढ़ने की कोशिश की तो वह गिर गया और 50 मीटर तक घिसटता चला गया। वह कई बार ट्रेन व प्लेटफार्म के बीच गैप में गिरा व निकला। परंतु उसने अपना संतुलन नही खोया। इसी बीच हिम्मत दिखाते हुए एक यात्री चलती ट्रेन से कूदा और उस यात्री को काफी मशक्कत के बाद सुरक्षित बचाने में कामयाब रहा। इस घटनाक्रम को देखकर लोगों के रोंगटे खड़े हो गए। पंकज शर्मा

टप्पल कांड : फॉरेंसिक लैब भेजा जाएगा पोस्टमार्टम का वीडियो

जागरण संवाददाता, अलीगढ़ : टप्पल में ढाई साल की बच्ची की हत्या के मामले में एडीएम प्रशासन के सामने हामिरपुर के पूर्व प्रधान ने शनिवार को बयान दर्ज कराए। वहीं, पुलिस लखनऊ व चंडीगढ़ की फॉरेंसिक लैब के एक्सपर्ट की राय ले रही है। इसके लिए पोस्टमार्टम के समय बनाया गया वीडियो वहां भेजा जाएगा। कोर्ट ने इसकी अनुमति दे दी है। अलीगढ़ स्थित टप्पल में 30 मई को लापता हुई ढाई साल की बच्ची की बेरहमी से हत्या कर दी गई थी। दो जून को उसका शव घर से कुछ दूरी पर एक खंडहर में कूड़े के ढेर में मिला था। पुलिस इस मामले में चार लोगों को जेल भेज चुकी है। हत्या से जुड़े कई अनसुलझे तथ्य भी पुलिस के सामने हैं। जिनके जवाब अभी तक नहीं खोज पाई है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट भी स्पष्ट नहीं कर पाई कि हत्या किस प्रकार की गई, शरीर से अंग गायब होने की क्या वजह रही है? दुष्कर्म हुआ या नहीं? ऐसे ही तमाम सवालों के जवाब के लिए लखनऊ व चंडीगढ़ के एक्सपर्ट की राय ली जा रही है। एसपी देहात मणिलाल पाटीदार ने बताया कि पोस्टमार्टम रिपोर्ट का वीडियो तैयार किया गया था। इस वीडियो को ही एक्सपर्ट के पास भेजा जाएगा।

निभाया फर्ज

शहीद निराला की बहन की शादी में पहुंची एयरफोर्स की पूरी गरुड़ यूनिट, सबने मिलकर सजाया बहन का मंडप, निराले अंदाज में विदा किया बहन को

बहन की राह में कमांडोज ने बिछा दी अपनी हथेलियां

मुक्तिनाथ पांडेय, रोहतास

अपनी बहन को विदा करने उसका भाई निराला भले ही इस दुनिया में नहीं हो, पर शशिकला विदा हुई तो अंदाज 'निराला' था। इसे गांव-समाज ही नहीं, पूरे देश ने देखा। तीन जून को बिहार के काराकाट प्रखंड के बदिलाडीह गांव में शहीद ज्योति प्रकाश निराला के घर उनकी बहन शशिकला की बरात पहुंची तो स्वागत करने को एयरफोर्स की गरुड़ यूनिट के सारे कमांडो खड़े थे। विदाई के वक्त वहां मौजूद सभी कमांडोज ने बहन की राह में अपनी हथेलियां बिछा दीं। यह दृश्य देखकर वहां मौजूद सभी लोगों की आंखें छलक आईं और सीना गर्व से चौड़ा हो गया। ज्योति निराला कभी इसी यूनिट का हिस्सा थे, जो दो साल पहले कश्मीर में आतंकियों से मुठभेड़ में शहीद हो गए। अब उस शादी की तस्वीरें वायरल हो रही हैं, तो लोग बहादुर निराला और उनके साथियों की जय-जय कर रहे।

छलक उठीं आंखें, जब पहुंची पूरी यूनिट :

देश पर न्योछावर हो जाने वाले निराला माता-पिता के इकलौते पुत्र और तीन बहनों के अकेले भाई थे। उनके पिता तेजनारायण सिंह बताते हैं कि दूसरी बेटी शशिकला की शादी इसी साल डेहरी के पाली रोड निवासी उमाशंकर यादव के पुत्र सुजीत कुमार के साथ तय की। शादी की जानकारी गरुड़ कमांडो यूनिट और एयर चीफ मार्शल बीएस धनवा को भी दी थी। सभी भाव विह्वल हो गए, जब पूरी यूनिट के करीब पचास कमांडो यहां पहुंच गए। उन्होंने शादी की पूरी व्यवस्था अपने हाथों में ले ली थी। बेटी की शादी कैसे हुई, पता भी नहीं चला। मेरी आंखें छलक रही थीं। यह महसूस हुआ कि मेरे तो कई निराले बेटे साथ खड़े हैं।

भावुक हुआ वर और कन्या पक्ष : लावा लेने से लेकर शादी में भाई की हर रस्म इन कमांडो ने ही अदा की। उस बहन का सौभाग्य इससे और ज्यादा क्या होगा, जिसके इतने-इतने भाई उसकी अपनी पलकों पर बिठाने को आतुर हों। उस दृश्य ने तो कन्या और वर दोनों ही पक्ष को भावविह्वल कर दिया, जब मंडप पर जा रही बहन की राह में कमांडोज ने अपनी हथेलियां बिछा दी।

बेटों ने मां को निहाल कर दिया : शहीद की मां मालती देवी रुंधे गले से कहती हैं, जिसके इतने बेटे हों उस मां को क्या चिंता होगी। इन बेटों ने इस मां पर अपनी सारा प्यार उड़ेल दिया। आज महसूस हुआ कि शहीद के परिवार अकेले नहीं होते, पूरा देश साथ खड़ा होता है। शशिकला के पति सुजीत कुमार बंगलुरु में रेलवे में लोको पायलट हैं। वे कहते हैं कि एक शहीद के घर शादी कर गौरवान्वित हैं।

जानिए देश के इस अमर शहीद को : ज्योति प्रकाश निराला कश्मीर के बांदीपोरा में एयरफोर्स की गरुड़ कमांडो यूनिट में थे। 18 नवंबर 2017 को आतंकियों से मुठभेड़ के दौरान शहीद हो गए। इससे पहले उन्होंने दो खतरनाक आतंकियों लश्कर कमांडर लखवी का भतीजा उबैद उर्फ ओसामा और महमूद भाई को मार गिराया था। निराला ने अपने घायल साथियों की जान भी खुद की जान पर खेल कर बचाई थी। इस ऑपरेशन में छह कुख्यात आतंकी मारे गए थे। उन्होंने 2005 में एयरफोर्स ज्वॉइन की और 2010 में सुषमा के साथ उनकी शादी हुई थी। उनकी पांच साल की एक बेटी भी है। निराला को शहादत के उपरांत 26 जनवरी को अशोक चक्र से सम्मानित किया गया था।

शहीद निराला की बहन शशिकला को हथेलियों पर विदा करते कमांडो। विवाह समारोह की सोशल मीडिया पर वायरल तस्वीर।

यात्रियों की तकलीफें जानने को ट्रेनों में सफर करें अफसर

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली

- केरल एक्सप्रेस में कई यात्रियों की मौत के बाद रेलवे बोर्ड अध्यक्ष ने अफसरों को दिए ट्रेनों में सफर के निर्देश

गर्मी में ट्रेन यात्रियों की मुश्किलें कम करने के लिए अब अधिकारियों को सचमुच में ट्रेन में सफर करना होगा। रेलवे बोर्ड अध्यक्ष विनोद यादव ने इस संबंध में सभी महाप्रबंधकों को नए निर्देश जारी किए हैं।

सभी जोनों के महाप्रबंधकों को भेजे पत्र में रेलवे बोर्ड अध्यक्ष ने लिखा है कि वरिष्ठ अधिकारियों के ट्रेन में सफर करने और यात्रियों की परेशानियों से रूबरू होने के बारे में पहले भी निर्देश जारी किए जा चुके हैं, लेकिन उन पर गंभीरता नहीं बरती जा रही है। इसलिए सभी जीएम, डीआरएम तथा यूनिट हेड व्यक्तिगत रूप से सुनिश्चित करें कि उनके मातहत कार्य कर रहे अधिकारी बार-बार ट्रेनों में यात्रा करें और यात्रियों की मुश्किलों का मौके पर समाधान करें। अपने आधिकारिक दौरों में उन्हें कोच की स्थिति का मुआयना करना चाहिए और यात्रियों की शिकायतें सुननी चाहिए। यही नहीं, प्रत्येक दौरे के बाद इसकी रिपोर्ट भी तैयार कर भेजनी चाहिए। सभी महाप्रबंधकों को सुनिश्चित करना होगा कि निर्देशों का अनुपालन हो और मुआयने तथा यात्रियों से प्राप्त फीडबैक के आधार पर सुधारात्मक कदम उठाए जाएं।

यादव ने लिखा है कि ट्रेनों में यात्रियों के बीच स्वयं यात्रा करके ही अधिकारी रेल सेवाओं की वास्तविक स्थिति समझ सकते हैं। सिर्फ इसी से सेवाओं की हकीकत पता चल सकती है और सुधार के नए उपायों पर काम किया जा सकता है। गौरतलब है कि ट्रेनों के भीतर यात्री सेवाओं की स्थिति का पता लगाने और उनमें सुधार करने के लिए रेलवे बोर्ड ने दो वर्ष पहले अधिकारियों को स्लीपर समेत हर श्रेणी के डिब्बे में यात्रा करने तथा यात्रियों से फीडबैक लेने के निर्देश जारी किए थे।

3.8 अरब लोग दुनियाभर में ऑनलाइन सक्रिय थे वर्ष 2018 में। वेंचर कैपिटलिस्ट मैरी मीकर की इंटरनेट ट्रेंड्स को लेकर जारी हालिया वार्षिक रिपोर्ट में यह तथ्य सामने आया है। इंटरनेट यूजर्स की यह संख्या वैश्विक आबादी की 51 फीसद है। सर्वाधिक यूजर्स के ऑनलाइन रहने के मामले में चीन (21%) पहले, भारत (12%) दूसरे और अमेरिका (8%) तीसरे स्थान पर रहा।

www.jagran.com राष्ट्रीय संस्करण
दैनिक जागरण
रविवार 16 जून 2019

चर्चित चेहरा

धवन को खोना नहीं चाहती टीम इंडिया

अभिषेक त्रिपाठी, मैनचेस्टर

एक हफ्ते पहले जब खबर आई कि भारतीय ओपनर बल्लेबाज शिखर धवन के अंगूठे में फ्रैक्चर हो गया है तो क्रिकेटप्रेमी सन्न रह गए। आखिर सवाल विश्व कप में भारत के सफर का है। धवन की अहमियत कितनी है, यह इससे जाना जा सकता है कि उनका विकल्प अब तक नहीं मांगा गया है...

भले ही लहराती गेंदों के सामने शिखर धवन का बल्ला और आत्मविश्वास हिल जाता है, भले ही उनके हाथ में प्लास्टर बंधा हुआ है, भले ही वह कम से कम अगले दो-तीन मैचों में नहीं खेल पाएंगे, लेकिन फिर भी भारतीय टीम इंडिया इस ओपनर बल्लेबाज को विश्व कप में खोना नहीं चाहती। यही दिखाता है कि तमाम कमजोरियों के बावजूद यह बल्लेबाज भारत के विश्व कप अभियान के लिए कितना महत्वपूर्ण है।

ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ ओवल के मैदान पर पैट कमिंस की गेंद पर चोटिल होने के बावजूद धवन ने शतक लगाकर दिखा दिया था कि उनमें कितना दम है, लेकिन नॉटिंघम पहुंचते-पहुंचते पता चला कि उनके अंगूठे में फ्रैक्चर है। कप्तान विराट कोहली ने कहा कि वह 10-12 दिन तक नहीं खेल पाएंगे। विराट को उम्मीद है कि यह बल्लेबाज विश्व कप के लीग मुकाबलों के आखिरी चरण में फिट हो जाएगा और सेमीफाइनल व फाइनल में उनका अच्छा प्रयोग किया जाएगा। टीम ने रिषभ पंत को कवर के तौर पर भले ही बुलाया है, लेकिन आइसीसी से धवन का रिप्लेसमेंट नहीं मांगा है, क्योंकि टीम को पता है कि एक बार धवन की जगह रिषभ को 15 सदस्यीय टीम में शामिल कर लिया तो फिर वह विश्व कप टीम में दोबारा तभी आ सकते हैं जब टीम का कोई दूसरा खिलाड़ी चोटिल होगा। विराट और टीम प्रबंधन को लगता है कि टीम आसानी से सेमीफाइनल में पहुंच जाएगी और उससे पहले ही धवन फिट हो जाएंगे।

काम के बल्लेबाज हैं धवन : बाएं हाथ का यह भारतीय बल्लेबाज हवाई शॉट खेलने के साथ गेंद को क्षेत्ररक्षकों के बीच में से चार रन के लिए बाउंड्री की तरफ भेजने में माहिर है। उनकी सबसे अच्छी बात यह है कि वह परिस्थितियों के अनुसार अपना गियर बदल लेते हैं। यदि उनका जोड़ीदार धीरे खेलता है तो वह रन बनाने की जिम्मेदारी उठाते हैं और यदि उनका साथी आक्रामक होता है तो वह स्ट्राइक रोटेट करने में विश्वास रखते हैं। 33 साल के धवन का यह दूसरा और संभवतः आखिरी विश्व कप है। वह इसे यादगार बनाना चाहते हैं, लेकिन चोट उनके लिए बुरा सपना बनकर आई है। वह इससे उबरने की कोशिश कर रहे हैं। हाथ में प्लास्टर बंधा हुआ है तो वह जिम में पैरों की एक्सरसाइज कर रहे हैं। वह मैनचेस्टर के ओल्ड ट्रैफर्ड स्टेडियम में रनिंग कर रहे हैं। वह खुद का आत्मविश्वास बनाए रखने के लिए हर वह प्रयास कर रहे हैं जो एक बड़े खिलाड़ी को करना चाहिए।

अंडर-19 विश्व कप ने दिलाई पहचान : क्रिकेट जगत में धवन को सबसे पहले पहचान 2004 में बांग्लादेश में हुए अंडर-19 विश्व कप से मिली। हालांकि, पाकिस्तान के हाथों मिली पांच विकेट की हार के साथ भारत का इस टूर्नामेंट में सेमीफाइनल में अभियान खत्म हो गया था, लेकिन धवन ने टूर्नामेंट में सबसे ज्यादा 505 रन बनाकर मैन ऑफ द सीरीज का खिताब अपने नाम किया था। इस दौरान धवन ने सात मैचों में तीन शतक और एक अर्धशतक जड़ा था और उनका सर्वाधिक स्कोर नाबाद 155 रन रहा था। टूर्नामेंट में उनका औसत 84.16 और स्ट्राइक रेट 93.51 का था। इस विश्व कप में धवन के बाद सबसे ज्यादा 383 रन इंग्लैंड के एलिस्टेयर कुक ने बनाए थे। धवन का नाम उन क्रिकेटरों में शुमार होता है, जिनमें प्रतिभा की कमी तो नहीं रही, लेकिन अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में मौका देर से मिला। 2004 अंडर-19 विश्व कप ने भारत को धवन के अलावा दिनेश कार्तिक, अंबाती रायुडू, सुरेश रैना, आरपी सिंह, रॉबिन उथप्पा, फैज फजल और वीआरवी सिंह जैसे अंतरराष्ट्रीय क्रिकेटर दिए। इस विश्व कप के बाद माना जा रहा था कि धवन को जल्द ही भारतीय सीनियर टीम में जगह मिलेगी, लेकिन धवन से पहले कार्तिक, रैना, आरपी, उथप्पा और यहां तक कि वीआरवी को भारत की कैप पहनने का मौका मिल गया और धवन सिर्फ इंतजार करते रह गए। वहीं, इंग्लैंड ने तो इस विश्व कप के दो साल के अंदर ही कुक को अपनी सीनियर टीम में शामिल कर लिया। जब धवन को पहली बार अंतरराष्ट्रीय मैच खेलने का मौका मिला तब तक कुक इंग्लैंड के लिए 60 टेस्ट, 26 वनडे और चार टी-20 मैच खेल चुके थे। इतना ही नहीं, धवन के बाद रणजी पदार्पण करने वाले कई खिलाड़ियों को धवन से पहले अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट खेलने का मौका मिल गया। इनमें धवन की दिल्ली रणजी टीम के साथी और मौजूदा भारतीय क्रिकेट टीम के कप्तान विराट कोहली भी शामिल हैं।

हाथ से नहीं जाने दिया मौका : धवन को पहली बार अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट खेलने का मौका अक्टूबर 2010 में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ विशाखापत्तनम में वनडे मैच में मिला। उस मैच में धवन खाता भी नहीं खोल सके और उन्हें फिर टीम से बाहर कर दिया गया। जून 2011 में उन्हें वेस्टइंडीज दौरे पर शामिल किया गया तो उन्होंने अर्धशतक जड़ते हुए अच्छी वापसी की, लेकिन इस दौरे पर चार मैच खेलने के बाद उन्हें फिर बाहर कर दिया गया। इस दौरे पर ही उन्हें टी-20 अंतरराष्ट्रीय पदार्पण करने का भी मौका मिला, लेकिन एक मैच बाद यहां भी उन्हें बाहर कर दिया गया। 2013 में उन्हें इंग्लैंड में हुई चैंपियंस ट्रॉफी के लिए टीम में शामिल किया गया तो उन्होंने इस मौके को हाथ से जाने नहीं दिया। पहले दो मैचों में ही दो शतक जड़कर उन्होंने वनडे टीम में जगह पक्की कर ली। उनके इस प्रदर्शन की बदौलत उन्हें उसी साल टेस्ट पर्दापण का मौका मिला तो मोहाली में उन्होंने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ 187 रन बनाकर शानदार टेस्ट आगाज किया। धवन भारत के ऐसे पहले और एकमात्र बल्लेबाज हैं, जिन्होंने अपने 100वें वनडे मैच में शतकीय पारी खेली है। उन्होंने यह उपलब्धि जोहानिसबर्ग में द. अफ्रीका के खिलाफ फरवरी 2018 में हासिल की थी।

आइसीसी टूर्नामेंट के हीरो

धवन आइसीसी टूर्नामेंट के सबसे बड़े हीरो साबित हुए हैं। उन्होंने वनडे प्रारूप में आइसीसी के चार टूर्नामेंट खेले हैं, जिनमें दो विश्व कप और दो चैंपियंस ट्रॉफी शामिल हैं। धवन ने 2013 में चैंपियंस ट्रॉफी में सर्वाधिक 363 रन बनाए थे, जिसमें दो शतक शामिल थे। उन्होंने 2018 में भी चैंपियंस ट्रॉफी में एक शतक की मदद से सबसे ज्यादा 338 रन बनाए थे। 2015 विश्व कप में वह सर्वाधिक रन बनाने वाले पांच बल्लेबाजों में शुमार थे, जबकि भारतीय बल्लेबाजों में उनके नाम सबसे ज्यादा 412 रन थे। इस विश्व कप में भी वह एक शतक लगा चुके हैं।

भारत को चांद पर ले जा रहीं दो महिलाएं

इनसे मिलिए

नेशनल डेस्क, नई दिल्ली

भारत का चंद्रयान-2 यूं तो अंतरिक्ष में कामयाबी की नई गाथा लिखने जा रहा है, लेकिन बड़ी बात यह है कि इस अति महत्वाकांक्षी अभियान की कमान देश की महिलाशक्ति के हाथों में है। रितु करिधाल श्रीवास्तव और मुथैया विनीता नाम की इन दो महिलाओं के जिम्मे यान की उड़ान और उसे चांद पर सकुशल उतारने की जिम्मेदारी है। इनमें से एक साधारण परिवार से आती हैं, तो एक के पास है पुरस्कारों की लंबी सूची। आइए जानते हैं भारत को चांद पर ले जा रहीं दोनों महिलाओं के बारे में...

रितु करिधाल श्रीवास्तव फाइल फोटो

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) की वरिष्ठ वैज्ञानिक रितु करिधाल श्रीवास्तव और मुथैया विनीता तीन-चार दिन पहले उस समय सुर्खियों में आईं जब इसरो के मुखिया के सिवन ने दुनिया को बताया कि चंद्रयान-2 अभियान की कमान दो महिलाओं के हाथों में है। हालांकि दोनों करीब दो दशक से इसरो के साथ हैं, उपग्रहों के प्रक्षेपण या उप-प्रणाली के विकास में किसी न किसी रूप में शामिल रही हैं, लेकिन कभी मीडिया की नजरों में नहीं आईं।

उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में एक मध्यमवर्गीय परिवार में जन्मीं रितु बचपन से ही अंतरिक्ष के अंधेरे के उस पार क्या है, इसे जानने के लिए बेचैन रहती थीं। उम्र के साथ-साथ यह सवाल जुनून में बदलता चला गया। विश्वविद्यालय से भौतिकी (फिजिक्स) में स्नातक के बाद इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंसेज से मास्टर्स डिग्री हासिल की। यहां से एयरोस्पेस इंजीनियरिंग में डिग्री ली। 1997 में इसरो ने उन्हें संस्थान से जुड़ने का न्योता दिया तो वह खुशी-खुशी तैयार हो गईं। उनके काम के कारण वह 2007 में इसरो की प्रथम युवा वैज्ञानिक चुनी गईं। विभिन्न अभियानों का हिस्सा रहीं रितु ने मंगलयान मिशन में डिप्टी ऑपरेशन डायरेक्टर की जिम्मेदारी का निर्वाह किया।

पांच नवंबर, 2013 को मंगलयान उपग्रह को लांच किया गया था, जो 24 सितंबर, 2014 को मंगल की कक्षा में पहुंच गया। उन्होंने अभियान की सफलता के बाद कहा था कि यह मेरी और मेरी टीम की जिम्मेदारी थी कि सुनिश्चित किया जाए कि पूरी प्रक्रिया उसके तय तरीके से हो। यह पहला भारतीय उपग्रह था, जिसमें खुद की खामियों को तलाशने और उन्हें दूर करने की क्षमता थी। सबसे महत्वपूर्ण बात, महिला वैज्ञानिकों ने इस मिशन को सफल बनाने के लिए पुरुष वैज्ञानिकों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम किया। रितु अपनी कामयाबी का श्रेय बड़े ही सीधे अंदाज में अपने परिवार को देती हैं। उनका कहना है, 'मैं लखनऊ की एक साधारण लड़की थी, जो बाहरी अंतरिक्ष के बारे में जानने के लिए उत्सुक थी और जिसे मंगल मिशन के साथ जुड़े रहने का मौका मिला। परिवार के समर्थन के बिना महिलाएं अपने लक्ष्यों को हासिल नहीं कर सकतीं। जब आपका साथी आपका समर्थन करता है, तो आप बड़ी सी बड़ी समस्याओं को दूर कर सकते हैं। पति अविनाश, बेटा आदित्य और बेटी अनीषा मेरे हर प्रोजेक्ट की अहमियत को समझते हैं और यही वजह है कि मुझे उनकी चिंता नहीं करनी पड़ती।'

यहां इस बात का उल्लेख बेहद जरूरी है कि विज्ञान में पारंगत रितु का भारतीय परंपराओं में भी पूरा यकीन है। वह पूरी निष्ठा से पति की लंबी उम्र के लिए वटसावित्री का व्रत भी रखती हैं। उनका काम कितना अहम और चुनौतीपूर्ण है इसे इसरो के पूर्व अध्यक्ष के. राधाकृष्णन की इस बात से समझा जा सकता है कि अभियान की पूरी जिम्मेदारी परियोजना के निदेशक पर होती है। उसे पूरे तंत्र का खाका खींचना होता है, उसकी समीक्षा करनी होती है, विचारों व कागजों पर लिखी बातों को हकीकत में बदलना होता है। कुल मिला कर कहें तो वह ही है जो सभी चीजों को जोड़ कर एक बिंदु के रूप में सामने प्रस्तुत करता है।

> यूं तो बेटियां अपने बूते आगे बढ़ रही हैं, लेकिन अभी उन्हें और सपोर्ट की जरूरत है। जैसे मेरे माता-पिता ने मुझ पर भरोसा किया, आप भी बेटियों पर भरोसा कीजिए।
> – रितु करिधाल श्रीवास्तव

> हमारे पास संचार और अन्य उपग्रहों के प्रक्षेपण के लिए महिला परियोजना निदेशक हैं। ऐसा पहली बार हो रहा है जब एक बेहद अहम अभियान की कमान महिलाओं के हाथ में है।
> –के सिवन (इसरो के अध्यक्ष)

मिल चुका है सर्वश्रेष्ठ महिला वैज्ञानिक का खिताब

मुथैया विनीता फाइल

इलेक्ट्रॉनिक्स सिस्टम इंजीनियर मुथैया विनीता करीब दो दशक से इसरो का हिस्सा हैं। इस दौरान विभिन्न शोध और अनुसंधान से उनका सीधा जुड़ाव रहा। बात चाहे कार्टोसेट-1, ओशनसेट-2 की हो या फिर मेघा-ट्रोपिक रिमोट-सेंसिंग उपग्रहों के लिए डाटा सिस्टम को तैयार करने की, सभी में उनकी अहम भागीदारी रही है। उनकी योग्यता को देखते हुए 2006 में एस्ट्रोनॉटिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया ने उन्हें सर्वश्रेष्ठ महिला वैज्ञानिक चुना। उपग्रह केंद्र में डिजिटल सिस्टम समूह (यूआर राव स्पेस सेंटर में) टेलीमेट्री व टेलीकमांड डिवीजनों का नेतृत्व कर चुकीं वनीता को अन्नादुराई के सेवानिवृत्त होने के बाद करीब 18 महीने पहले चंद्रयान-2 की परियोजना निदेशक बनाया गया।

2050 तक ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जन मुक्त पहला देश बनेगा ब्रिटेन

पर्यावरण और जलवायु आपातकाल की घोषणा करने के बाद ब्रिटेन की संसद ने साल 2050 तक समग्र कार्बन उत्सर्जन शून्य तक पहुंचाने का लक्ष्य तय किया है। ब्रिटेन ऐसी घोषणा करने वाला पहला देश बन गया है।

ऐसे प्राप्त करना होगा लक्ष्य

पर्यावरण विशेषज्ञों का मानना है कि इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए घरों, वाहनों, कृषि और उद्योगों से कार्बन उत्सर्जन समाप्त करना होगा और पौधे लगाकर या वातावरण से कार्बन डाईऑक्साइड को अन्य तरीकों से खत्म करने के तरीके खोजने होंगे।

यह लोगों को कैसे प्रभावित करेगा?

लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए यदि सरकार ने मांस खाने या हवाई उड़ान भरने पर रोक लगाने का फैसला किया, तो लोग सड़कों पर उतर सकते हैं। हालांकि सरकार स्वच्छ क्रांति को अपनाने का प्रयास ज्यादा करेगी। स्वच्छ ऊर्जा उत्पादन में बड़े पैमाने पर निवेश की आवश्यकता होगी। लेकिन सरकार ने यह नहीं बताया कि इसके लिए वह इतना सारा पैसा कहां से लाएगी। क्या इसका बोझ आम नागरिकों पर डाला जाएगा।

इतना पैसा होगा खर्च

चांसलर फिलिप हैमंड का कहना है इस लक्ष्य को प्राप्त करने में एक लाख करोड़ यूरो खर्च होने का अनुमान है। कार्यवाहक ऊर्जा मंत्री क्रिस स्किडमोर के मुताबिक इस योजना की लागत ब्रिटेन की जीडीपी के 1 से 2 फीसद के बीच होगी।

अन्य बाधाएं

ब्रिटेन में अभी भी नई कोयला खदानें खोली जा रही हैं, हीथ्रो हवाई अड्डे का विस्तार किया जा रहा है, जो इस योजना को सफल बनाने में रुकावट बन सकती है।

योजना बनाने की वजह

ब्रिटेन में पर्यावरण के स्वच्छ और सुरक्षित बनाने के लिए आंदोलन तेज हो रहा है। हाल ही में किशोर पर्यावरण कार्यकर्ता ग्रेटा थुनबर्ग द्वारा संसद में दिए गए भाषण के बाद देश ने पर्यावरण और जलवायु परिवर्तन को लेकर आपातकाल घोषित किया था। इस मामले की भयावह तस्वीर दिखाती डेविड एटनबरो की डाक्यूमेंट्री फिल्म 'क्लाइमेट चेंज द फैक्ट्स' का यहां प्रदर्शन किया गया। उसके बाद पर्यावरण समूह 'इक्सटिंक्शन रेबेलियन' द्वारा लगातार 11 दिनों तक विरोध-प्रदर्शन के बाद ब्रिटेन को यह कदम उठाने पर विवश होना पड़ा।

बेहतर होगा स्वास्थ्य

प्रधानमंत्री टेरीजा मे ने कहा है कि उत्सर्जन को कम करने से न केवल लोगों का स्वास्थ्य बेहतर होगा बल्कि उसमें आने वाले खर्च में भी कमी आएगी।

काश, अमेरिका भी चेत जाए...

ब्राउन विश्वविद्यालय की ताजा रिपोर्ट के मुताबिक 2001 में अफगानिस्तान पर अमेरिकी हमले के बाद से, अमेरिकी सेना से कुल 1,212 मिलियन टन ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन हुआ है। इसके द्वारा 2017 में, उत्सर्जित कार्बन डॉइऑक्साइड की मात्रा 59 मिलियन टन रही, जो कई औद्योगिक देशों की तुलना में अधिक है।

2017 में अनुमानित कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन (मिलियन टन में)

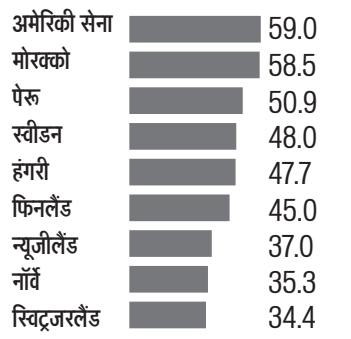

55 वां सबसे बड़ा कॉर्बन उत्सर्जक देश होता पेंटागन अगर वह एक राष्ट्र होता। यह बात रिपोर्ट में कही गई है।

सालाना उत्सर्जन (किलोग्राम में)

1990	14,752
2017	8,789
2050	1,160

भक्ति शर्मा : अमेरिका से लौटी युवा सरपंच ने बदल दिए हालात

हौसले की उड़ान

बृजेंद्र वर्मा, भोपाल

हाल ही में रूस में आयोजित हुए इंटरनेशनल इकोनॉमिक फोरम में देश का प्रतिनिधित्व करने वालीं भोपाल की भक्ति शर्मा ने देश का मान अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बढ़ाया है। वह अमेरिका से लौटकर सरपंच बनीं और अपने क्षेत्र का कायाकल्प किया। एक नजर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से सम्मानित इस शख्सियत के जीवन से जुड़े कुछ पहलुओं पर...

भक्ति शर्मा फाइल फोटो

प्रतिभा पलायन के दौर में अनूठी पहल करने वालीं मध्य प्रदेश के भोपाल की भक्ति शर्मा इन दिनों फिर सुर्खियों में हैं। 2015-16 में अमेरिका में अच्छी-खासी नौकरी छोड़कर अपने गांव लौट कर बरखेड़ी अब्दुल्ला पंचायत की सरपंच बनीं भक्ति ने अपने क्षेत्र की तस्वीर ही बदल दी। गत छह से आठ जून तक रूस के सेंट पीटर्सबर्ग शहर में हुए इंटरनेशनल इकोनॉमिक फोरम में भारत का प्रतिनिधित्व करना इस युवा सरपंच की नवीन उपलब्धि है।

राजनीति शास्त्र से एमए और एलएलबी कर चुकीं भक्ति भारत में पढ़ाई पूरी करने के बाद 2012 में अमेरिका चली गईं। वहां उन्होंने एक कंपनी में नौकरी की, लेकिन दादा और पिता चाहते थे कि उनकी बेटी भारत लौटकर समाज व महिलाओं के उत्थान के लिए कार्य करे। वह भोपाल लौटीं और गरीब व जरूरतमंद महिलाओं से मिलना, उनकी समस्याएं सुनना शुरू किया। जरूरत पड़ने पर आर्थिक मदद भी की। 2015 में ग्राम पंचायत के चुनावों में भक्ति सरपंच चुनी गईं। उन्होंने सरपंच बनकर बरखेड़ी अब्दुल्ला पंचायत में आने वाले सभी पांच गांवों में समाजसेवा करने को बेहतर प्लेटफार्म माना। सरपंच बनते ही उन्होंने पंचायत के गांवों की तस्वीर बदलने का काम शुरू कर दिया।

ये किया परिवर्तन : भक्ति ने बरखेड़ी अब्दुल्ला, डोग, कीर्ति नगर सहित पंचायत के अन्य दो गांवों में पक्की सड़कें बनवाईं। स्वच्छ भारत अभियान से लोगों को जोड़ा। पंचायत को खुले में शौच करने से मुक्त बनाया। हर घर नल-जल योजना के तहत बरखेड़ी अब्दुल्ला गांव में ओवर हेड टैंक बनवाने के लिए 2 लाख 13 हजार रुपये मिले, जिससे ओवर हेड टैंक बनवाया। हर घर में नल देने का काम उन्होंने अपने पैसों से करवाया। गांवों में तालाब बनवाए। पंचायत के 99 फीसद लोगों के राशन कार्ड दिलवाए और बैंक खाते खुलवाए। भक्ति को देश की 100 प्रभावशाली महिलाओं में भी शामिल किया जा चुका है। साथ ही वह मध्य प्रदेश के सर्वश्रेष्ठ युवा सरपंचों में से एक हैं। उन्हें पंचायत में उल्लेखनीय कार्यों के लिए साल 2018 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सम्मानित भी कर चुके हैं। अन्य राष्ट्रीय व राज्य स्तरीय सम्मानों से भी उन्हें सम्मानित किया जा चुका है।

सप्ताह का विवाद

परिवार और राजनीति में घिरा विवादों का बैंक

नवीन नवाज, जम्मू

बीती आठ जून को जम्मू एंड कश्मीर बैंक के चेयरमैन परवेज अहमद नेंगरु को उनके पद से हटाने के एक घंटे बाद ही भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो (एसीबी) की टीम ने बैंक के श्रीनगर स्थित मुख्यालय में छापा मारा। कई अहम दस्तावेज जब्त किए। सामने आया कि परवेज अहमद ने इसे एक पार्टी और अपने परिवार को लाभ पहुंचाने वाला बैंक बना दिया था। अब जैसे-जैसे जांच आगे बढ़ेगी, वैसे-वैसे और बातें सामने आएंगी...

श्रीनगर स्थित जम्मू एंड कश्मीर बैंक का मुख्यालय। फाइल फोटो

एनपीए, हवाला, क्षेत्रीय पक्षपात के आरोपों के कारण अक्सर विवादों में रहने वाला जम्मू एंड कश्मीर बैंक एक बार फिर सुर्खियों में है। भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो (एसीबी) की टीम ने बैंक के भीतर जाकर दस्तावेज खंगालने शुरू कर दिए हैं। आरबीआइ के नियमों को ताक पर रखने के आरोपों में बैंक के चेयरमैन परवेज अहमद नेंगरु को पद से हटा दिया गया है। बीते 80 सालों में जेएंडके बैंक में यह सब पहली बार हो रहा है। सबसे बड़ी बात यह है कि बैंक में घोटालों में लिप्त बड़े लोगों और राज्य में सत्तासीन रहने वालों के खिलाफ कार्रवाई के संकेत मिल रहे हैं, लेकिन आम कश्मीरी जनता जो अक्सर राज्य के किसी संस्थान पर इस तरह की कार्रवाई को अपनी पहचान पर आघात बताते हुए लामबंद हो जाती है, इस बार राज्य प्रशासन व केंद्र को सराहते हुए कह रही है कि यह रियासत में सरकारी तंत्र और राजनीतिक छाया में फल-फूल रहे भ्रष्टाचार की सफाई की शुरुआत जैसा है।

एसीबी द्वारा की जा रही जांच में सामने आया है कि परवेज अहमद नेंगरु ने बैंक को पूरी तरह से पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी और अपने परिवार को फायदा पहुंचाने वाला बैंक बना दिया था। उन्होंने 12वीं पास एक नेता के परिजन को बैंक का मैनेजर नियुक्त किया। घाटे से उबरने के लिए राज्य सरकार से वित्तीय मदद पाने के बावजूद उन्होंने सीएसआर के नाम पर दो गोल्फ कोर्सों पर 50 करोड़ खर्च किए। एक व्यापारिक घराने का 170 करोड़ का कर्ज रीस्ट्रकचर कर 77 करोड़ किया और वह भी पूरा नहीं वसूला। जो वसूला उसके लिए भी कर्ज दिया। पीडीपी से जुड़े करीब 400 लोगों को चोर दरवाजे से नियुक्त करने के अलावा उन्हें अहम पदों पर तैनात किया। यह बातें सिर्फ शुरुआती जांच में सामने आई हैं।

जम्मू एंड कश्मीर बैंक देश में किसी राज्य के स्वामित्व का पहला और एकमात्र बैंक है। यह ऐसा बैंक है जिसे भारतीय रिजर्व बैंक ने सीबीडीटी के लिए केंद्रीय कर जमा करने, केंद्र सरकार के साथ बैंकिंग लेन-देन करने के लिए अपने एजेंट के तौर पर नामित किया। वर्ष 1939 से क्रियाशील यह बैंक राज्य का एकमात्र ऐसा संस्थान है जो एनएसई और बीएसई में सूचीबद्ध है। बैंक में राज्य सरकार की हिस्सेदारी लगभग 59 फीसद है और राज्य सरकार के बाद यही राज्य में सबसे बड़ा नियोक्ता है।

वर्ष 1990 के बाद से तेजी से बढ़ने वाले इस बैंक में सियासी हस्तक्षेप जो पहले भी था, पूरी तरह हावी 1996 में तत्कालीन मुख्यमंत्री डॉ. फारुक अब्दुल्ला द्वारा एमवाइ खान को बैंक की कमान सौंपे जाने के साथ हुआ। इसके साथ घोटालों की संख्या भी बढ़ी, लेकिन यह घोटाले और बैंक की नीतियां सार्वजनिक स्तर पर राजनीतिक विवाद का कारण वर्ष 2014 में बनने लगीं। राज्य के पूर्व वित्तमंत्री हसीब द्राबू जो इस बैंक के चेयरमैन भी रह चुके हैं, ने 2014 में तत्कालीन नेशनल कांफ्रेंस सरकार के मुखिया उमर अब्दुल्ला पर निशाना साधते हुए जेएंडके बैंक पर 2500 करोड़ रुपये का एनपीए छिपाने का आरोप लगाया था। उन्होंने आरबीआइ से जेएंडके बैंक के भीतर जारी वित्तीय घोटालों व अनियमितताओं का पता लगाने के लिए एक स्पेशल ऑडिट की मांग की थी। इसके कुछ ही दिनों बाद यह तथ्य भी सामने आया कि बैंक ने 1100 करोड़ रुपये के तीन एनपीए खाते भी अपनी बैलेंस शीट से गायब कर दिए। इनमें से 650 करोड़ रुपये कोलकाता की एक कंपनी को दिए गए थे, जबकि 400 करोड़ का कर्ज मुंबई की एक रियल इस्टेट कंपनी को दिया गया। उक्त कंपनियों ने भी कर्ज नहीं चुकाया और उनके द्वारा जो चेक दिए गए थे वे बाउंस हो गए। तीसरा कर्जदार बेंगलुरु स्थित दूर संचार क्षेत्र की एक कंपनी का प्रमोटर था, जो धोखाधड़ी के मामले में पकड़ा गया था।

वर्ष 2014 की विनाशकारी बाढ़ और वर्ष 2016 के हिंसक प्रदर्शनों का नाम लेते हुए 2016-17 के दौरान बैंक ने 600 करोड़ रुपये का घाटा दिखाया। उससे उबारने के लिए राज्य सरकार ने 532 करोड़ की पूंजी निवेश की। इसके बावजूद एनपीए छह हजार करोड़ रुपये तक पहुंच गया।

बिना आवेदन कर दीं नियुक्तियां

बीते साल तत्कालीन राज्यपाल एनएन वोहरा ने बैंक से संबंधित एक बैठक में परवेज अहमद नेंगरु की कार्यप्रणाली पर कड़ा ऐतराज जताते हुए कहा था कि बैंक किसी वर्ग विशेष के हितों की रक्षा के लिए नहीं है। वोहरा के जाने के बाद राज्यपाल बने सत्यपाल मलिक ने सार्वजनिक तौर पर कश्मीर के 40 युवकों की शिकायत का जिक्र कर अन्य लोगों को भी मौका दिया, लेकिन तथाकथित अवैध नियुक्तियों को रद करने के बजाय बैंक प्रशासन ने योग्यता के बावजूद नकारे गए उम्मीदवारों को नौकरियां दीं। यह करीब 582 नियुक्तियों का मामला था, जिनके लिए 19 मार्च, 2015 को ऑनलाइन आवेदन मांगे गए थे। परिणाम नौ मार्च, 2017 को घोषित हुआ तो सब हैरान हो गए। आवेदन सिर्फ रिलेशनशिप एक्जीक्यूटिव (आरई) के लिए मांगे गए थे, लेकिन 350 आरई चुने जाने के साथ 1250 बैंकिंग एसोसिएट भी घोषित कर दिए गए। बैंकिंग एसोसिएट के लिए कभी आवेदन मांगे ही नहीं गए थे। बैंक ने सफाई दी कि आरई पद की लिखित परीक्षा पास करने के बाद साक्षात्कार में विफल रहने वालों को बैंकिंग एसोसिएट नियुक्त किया गया, लेकिन इनमें कई ऐसे निकले जिन्होंने किसी भी पद के लिए आवेदन नहीं किया था। इसके अलावा भी 400 से ज्यादा लोगों को चोर दरवाजों से विभिन्न पदों पर बैंक मे लगाया गया। इन नियुक्तियों पर जब भी सवाल उठा तो कहा गया कि बैंक एक स्वायत्त संस्था है और चेयरमैन के पास नियुक्तियों का अधिकार है।

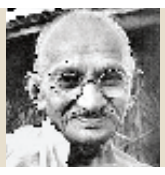

अखिल भारत के परस्पर व्यवहार के लिए ऐसी भाषा की आवश्यकता है जिसे जनता का अधिकतम भाग पहले से ही जानता-समझता है। और हिंदी इस दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ है। राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की शीघ्र उन्नति के लिए आवश्यक है।
महात्मा गांधी

मैं दुनिया की सब भाषाओं की इज्जत करता हूं, परंतु मेरे देश में हिंदी की इज्जत न हो, यह मैं नहीं सह सकता।
विनोबा भावे

जिस हिंदी को जानने-समझने और सीखने के लिए दुनिया के तमाम देश आतुर हैं, उसी हिंदी को लेकर उसके देश के कुछ हिस्से में ही हिचक दिखाई देना चिंता की बात है। तेजी से उभरती अर्थव्यवस्था और दुनिया के सबसे बड़े बनते उपभोक्ता बाजार के नाते तमाम बहुराष्ट्रीय कंपनियां कारोबार के लिए भारत का रुख कर रही हैं। वे बड़ा पूंजी निवेश कर रही हैं। यहां कारोबार चलाने के लिए व भाषा की दिक्कत को दूर करने को हिंदी भाषी कर्मचारियों को तवज्जो दे रही हैं। लेकिन हाल में राष्ट्रीय शिक्षा नीति के मसौदे में त्रिभाषा फार्मूले के तहत हिंदी को अनिवार्य बनाए जाने को लेकर दक्षिण के राज्यों में विरोध शुरू हो गया। ये बात और है कि लोकप्रियता हासिल करने के लिए वे अपने साहित्य को हिंदी में पढ़ाने के लिए बेसब्र रहते हैं और अपनी फिल्मों को हिंदी में तैयार कराकर करोड़ों के वारे-न्यारे करते हैं। यह दोहरापन इस तथाकथित विरोध को सियासी ठहराने के लिए काफी है। दक्षिण के राज्यों के विरोध में केंद्र सरकार हिंदी को मजबूत बनाने के अपने दायित्व से पीछे हट जाती है तभी तो त्रिभाषा फार्मूले से हिंदी की अनिवार्यता को उसे खत्म करना पड़ा। अब सरकार के इस कदम का विरोध भी शुरू हो गया है। पूरे देश को एक सूत्र में पिरोने के मकसद से नई शिक्षा नीति को तैयार करने वाली कमेटी के दो वरिष्ठ सदस्यों ने बगैर सहमति त्रिभाषा फार्मूले से हिंदी को हटाए जाने का विरोध किया है। ऐसे में हिंदी के प्रति दक्षिण राज्यों की इस हिचक की पड़ताल आज सबसे बड़ा मुद्दा है।

इलस्ट्रेशन : अवधेश

भारतीयता के लिए हिंदी का विकल्प नहीं

राष्ट्रभाषा पर राष्ट्र का गौरव टिका होता है। यह राष्ट्र की संस्कृति-सभ्यता और तरक्की की प्रतीक भी होती है। संसार के सभी देशों की अपनी एक राष्ट्रभाषा होती है। हमारे देश में राष्ट्रभाषा की समस्या अति जटिल है। भारत-जैसे विशाल देश में भिन्न-भिन्न राज्यों में विविध भाषाएं-बोलियां बोली जाती हैं। हिंदी तो राष्ट्रभाषा की पहचान है; क्योंकि वह भारत ही नहीं, बल्कि विश्व में सर्वाधिक लिखी, बोली तथा समझी जानेवाली प्रथम भाषा के रूप में स्वीकार की गई है। इसका व्यवहार-क्षेत्र व्यापक है।

भारत-सहित 132 देशों के लगभग एक अरब लोगों की भाषा हिंदी है। 13 जुलाई, 2007 को संयुक्त राष्ट्र के महासचिव बान की मून ने आठवें विश्व हिंदी सम्मेलन में कहा था, 'हिंदी समूचे विश्व को समीप लाने का प्रयास कर रही है। यह एक ऐसी भाषा है, जो विश्व की संपूर्ण संस्कृति के मध्य 'एक सेतु' का काम करती है। यही कारण है कि चीनी भाषा 'मंदारिन' से भी आगे हमारी हिंदी निकल चुकी है। अंग्रेजी तो तीसरे स्थान पर रह जाती है। इतना ही नहीं, विश्व के लगभग 160 देशों के विश्वविद्यालयों में हिंदीभाषा-साहित्य-व्याकरण का पठन-पाठन हो रहा है। मात्र संयुक्त राज्य अमेरिका में 80 से अधिक विश्वविद्यालयों में हिंदी अध्ययन-अध्यापन की व्यवस्था है।

एशियाई देशों में हिंदी की स्थिति पर जब हम विचार करते हैं तब ज्ञात होता है कि दक्षेस के देश, दक्षिण-पूर्व एशियाई देश, चीन, जापान, बौद्ध-संस्कृति तथा अरब और इस्लाम की संस्कृति से प्रभावित देश हिंदी के सुस्पष्ट प्रभाव में दिख रहे हैं। यूरोप और खाड़ी देश, पाकिस्तान, बांग्लादेश, नेपाल, भूटान, श्रीलंका, मालदीव, ईरान, अफगानिस्तान, तुर्कमेनिस्तान, ताजखस्तान, उज्बेकिस्तान, मंचूरिया, जावा, सुमात्रा, मलाया, इंडोनेशिया, सूरीनाम, गुयाना, त्रिनिडाड-टोबैगो, फिजी, मारीशस, दक्षिण अफ्रीका, वियतनाम, सिंगापुर, लाओस, कंबोडिया, थाइलैंड आदि देशों में हिंदी की प्रभावकारी उपस्थिति देखी-समझी जा सकती है। भूमंडलीकृत बाजार में बहुराष्ट्रीय कंपनियों का कारोबार 'हिंदी' के सहारे ही अपनी पहचान बना रहा है।

डॉ पृथ्वीनाथ पांडेय
भाषाविद्-समीक्षक

सरकार को नहीं भूलना चाहिए कि भारतीयता का मूल स्वर मुखरित करने वाली लिपि 'नागरी' और भाषा 'हिंदी' ही है। हिंदी संपूर्ण भारतीयता की संस्कृति का महिमा-मंडन करती है, अतः सर्वप्रथम हिंदी ही वरेण्य है।

हिंदी भारत के भाल की बिंदी है। प्राकृत और अपभ्रंश-काल में हिंदी एक ऐसा आकार ले रही थी, जो जनभावना के अनुरूप दिख रही थी। उसी प्रक्रिया के तहत दक्षिण भारत के राज्यों में भी हिंदी अग्रसर होती रही। अपभ्रंश के कृतिकार स्वयंभू ने दक्षिण राज्य में रहकर रामायण 'पउम-चरिउ' का हिंदी में अनुवाद किया था, जिसे हिंदी का प्रथम ग्रंथ कहा गया। रामानंद की शिष्य-परंपरा का हिंदी की श्रीवृद्धि में महत योगदान रहा है। आंध्र के बल्लभाचार्य, पद्माकर भट्ट तथा लालकवि; कर्नाटक के माणिक महीपति, कृष्णराय, लक्ष्मीपति, रुकमांगत पंडित की हिंदी-साधना की महत्ता को समझने की आवश्यकता है। राजगोपालचारी ने 1937 में तत्कालीन मद्रास के मुख्यमंत्री बनने के बाद सर्वप्रथम मद्रास में हाईस्कूल शिक्षा-स्तर पर हिंदी का अध्ययन अनिवार्य किया था। इतना ही नहीं, एमके दामोदरन अण्णी 'प्रथम हिंदी-प्रचारक' के रूप में उभर कर आए थे।

दक्षिण के ही कोडा वेंकटपैया, डॉ पट्टाभि सीतारमैया, के नागेश्वर पंतलु, एस श्रीनिवास अयंगर आदि ने हिंदी को बहुविध प्रचारित-प्रसारित किया था। गुजरात के महात्मा गांधी हिंदी-उत्थान के लिए प्राणपण से लगे रहे। इसके परिणामानुसार उस तमिलनाडु में हिंदी की जनप्रियता तेजी में बढ़ती गई थी, जहां से आज कतिपय निहित संकुचित राजनीतिक कारणों के अंतर्गत विगत कुछ दशकों से 'हिंदी' के विरुद्ध आवाज उठ रही है।

ऐसे में, हाल ही में नयी शिक्षा-नीति के अंतर्गत हिंदीभाषा की अनिवार्यता समाप्त करने का जो संकेत सार्वजनिक किया गया है, वह विचारणीय और सोचनीय है। शासनस्तर पर कस्तूरीरंगन समिति की ओर से त्रिभाषा सूत्र के अंतर्गत हिंदी के अस्तित्व-अस्मिता पर प्रहार करने का कुत्सित प्रयास किया गया है। अभी तक हमने हिंदी की वैश्विक महत्ता को समझा है। ऐसी स्थिति में अध्ययन-अध्यापन की दृष्टि से हिंदी की अनिवार्यता को समाप्त करने का अर्थ है, भारत की भावात्मक एकता को आघात पहुंचाना। वैसे त्रिभाषा सूत्र कोई नया प्रयोग नहीं है; कालांतर में भी राजनीति-प्रेरित ऐसे प्रयोग किए जाते रहे हैं। ऐसे में, हिंदी की 'राजभाषा' और 'संपर्कभाषा' के रूप में दिख रही भूमिका प्रभावहीन बनकर रह जायेगी और लॉर्ड मैकाले की अंग्रेजी-शिक्षा देश को भाषाई पराधीनता की अवस्था में ला छोड़ेगी और हमारे लोग 'परमुखापेक्षी' के रूप में नजर आयेंगे। लिहाजा ऐसी किसी अप्रिय स्थिति से बचते हुए इसके समाधान की जरूरत है। इस विवाद को निबटाने में अहिंदी भाषाभाषी और हिंदी भाषाभाषी विद्वतजन को पहल करनी होगी। एक-दूसरे के साहित्यादिक का विनिमय के आधार पर अनुवाद और रूपांतर को आत्मीयपूर्ण वातावरण में प्रश्रय देना होगा।

पुराना है विवाद

हिंदी से दक्षिण राज्यों खासकर तमिलनाडु का विवाद बहुत पुराना रहा है। आज भी जब कभी संस्कृत या हिंदी को राष्ट्रीय पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाने की कोशिश की जाती है तो वहां विरोध की आग भड़क जाती है। यही वजह है कि दक्षिण के राज्यों के दबाव में नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के मसौदे में शामिल त्रिभाषा फॉर्मूले को खत्म कर दिया गया है।

हिंदी विरोध

1928 में **मोतीलाल नेहरू** ने हिंदी को भारत में सरकारी कामकाज की भाषा बनाने का प्रस्ताव रखा तो तमिल नेताओं ने विरोध किया। 10 साल बाद तमिल नेता सी राजगोपालाचारी ने हिंदी को स्कूलों में अनिवार्य बनाने का प्रस्ताव दिया तो फिर तमिल नेता इसके विरोध में खड़े हो गए। विरोध ने हिंसक झड़पों का स्वरूप ले लिया और इसमें दो लोग मारे गए। 1965 में दूसरी बार जब हिंदी को राष्ट्र भाषा बनाने की कोशिश की गई तो एक बार फिर से गैर हिंदी भाषी राज्यों में पारा चढ़ गया। सीएन अन्नादुरई के नेतृत्व में 25 जनवरी को राज्य भर में हजारों प्रदर्शनकारी गिरफ्तार किए गए, लेकिन मदुरई में विरोध प्रदर्शनों ने हिंसक रूप ले लिया। स्थानीय कांग्रेस दफ्तर के बाहर एक हिंसक झड़प में आठ लोगों को जिंदा जला दिया गया। तभी से 25 जनवरी तारीख को बलिदान दिवस के नाम से जाना जाता है। ये विरोध प्रदर्शन और हिंसक झड़पें तकरीबन दो हफ्ते तक चलीं और आधिकारिक आंकड़ों के मुताबिक 70 लोगों की जानें गईं। यहां तक कि पश्चिम बंगाल के तत्कालीन मुख्यमंत्री बीसी रॉय भी हिंदी थोपे जाने के खिलाफ थे। विरोध करने वालों में दक्षिण के कांग्रेस शासित राज्य भी थे।

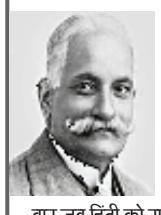

क्या है त्रिभाषा फॉर्मूला

त्रिभाषा के तहत स्कूलों में छात्रों को तीन भाषाओं की शिक्षा दी जानी थी। हिंदी भाषी राज्यों में छात्रों को हिंदी, अंग्रेजी और एक आधुनिक भारतीय भाषा जैसे बांग्ला, तमिल, तेलुगु, कन्नड़, असमिया, मराठी और पंजाबी जैसी भाषाएं पढ़नी थीं। गैर हिंदी भाषी राज्यों में मातृभाषा के अलावा, हिंदी और अंग्रेजी पढ़ाई जानी थी।

ऐसे तैयार हुआ मसौदा

आजादी के बाद प्रतिस्पर्धी परीक्षाओं या सिविल सेवा की परीक्षाओं में हिंदी को अहमियत देने का गैर-हिंदी भाषा वाले राज्यों में विरोध हो रहा था। तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने मुख्यमंत्रियों की एक बैठक बुलाई जिसमें त्रिभाषा फार्मूले पर सबकी रजामंदी ली गई। इसके मसौदे को तैयार करने की शुरूआत 1960 में हुई। इसका जिक्र कोठारी कमीशन की रिपोर्ट में भी है जो 1966 में बनकर तैयार हुई थी।

हिंदी भाषी देश

हिंदी संयुक्त अरब अमीरात में मान्यता प्राप्त अल्पसंख्यक भाषा है। यह 42.5 करोड़ लोगों की पहली और 12 करोड़ की दूसरी भाषा है। इसका नाम फारसी शब्द 'हिंद' से पड़ा है, जिसका अर्थ है 'सिंधु नदी की भूमि।' भारत के अलावा, मॉरीशस, सूरीनाम, नेपाल, त्रिनिदाद और टोबैगो, अमेरिका और दक्षिण अफ्रीका सहित अन्य देशों में भी हिंदी बोली जाती है।

राष्ट्रीय अस्मिता से जुड़े हिंदी

दक्षिण भारत में भाषा के नाम पर लोग राजनीति तो करते हैं पर अपने घर में अपनी संतान को हिंदी पढ़ाते हैं और अपने साहित्य का हिंदी में अनुवाद करवाते हैं। अभिनेता हिंदी फिल्म में काम करके नाम और पैसा तो कमाना चाहते हैं पर त्रिभाषा फार्मूले को अपनाने में हिचक दिखाना इनकी फितरत बन गई है। हिंदी का विरोध करने वाले तमिल राजनेता चुनाव जीतने के लिए अपने पंपलेट हिंदी में छपवाते हैं।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने हिंदी को भारत की भाषा मानते हुए देवनागरी लिपि के व्यवहार पर बल दिया। वह इससे सहमत नहीं थे कि रोमन लिपि का व्यवहार भारत में हो। अखिल भारत के परस्पर व्यवहार के लिए उन्हें ऐसी भाषा की जरूरत महसूस हुई, जिसे देश की आबादी का बड़ा हिस्सा पहले से ही जानता और समझता हो। हिंदी इस दृष्टि से उन्हें सर्वश्रेष्ठ लगी। तमिलनाडु में हिंदी की जड़ें बहुत गहरी हैं और अब पहले वाली स्थिति नहीं रही। इसके पीछे 1918 में मद्रास में स्थापित 'हिंदी प्रचार आंदोलन' की भूमिका रही है। बापू ने दक्षिण में हिंदी प्रचार-प्रसार के लिए 1918 में त्यागराय नगर मद्रास में दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा की स्थापना की। आगे चलकर कनार्टक, केरल, आंध्र प्रदेश में इसकी शाखाएं खुलीं। इसके साथ ही बड़ी संख्या में हिंदी प्रचारक तैयार हुए। दक्षिण राज्य की जनता की भावनाओं का स्वागत और आदर करते हुए इस संस्था को 1964 में राष्ट्रीय महत्व की संस्था' घोषित किया गया और चार प्रदेश में क्रमशः उच्च शिक्षा और शोध संस्थान स्थापित किए गए।

यदि 2018 के आंकड़े उठाकर देखे जाएं तो इन दक्षिणी प्रदेशों में करीब 15 हजार प्रमाणित प्रचारक प्रतिवर्ष तैयार होते हैं। स्वयं मेरे शोध निर्देशन में 90 शोधार्थियों को एमफिल, 89 शोधार्थियों को पीएचडी और 6 शोधार्थियों को डीलिट् की उपाधि मिली है। संस्थान से हजारों की संख्या में छात्र विभिन्न पाठ्यक्रम को पूरा कर सरकारी और गैर सरकारी संस्थानों में अपना जीवकोपार्जन कर रहे हैं। हिंदी की स्थिति विश्व फलक पर बड़ी तेजी से बदल रही हैं। फिर ऐसी स्थिति में कहां से हिंदी विरोध की बात पैदा होनी चाहिए। मैं आज भी दक्षिण के विभिन्न राज्यों में हिंदी के कार्यक्रम में जाती रहती हूं और हमेशा यह अनुभव करती हूं कि यहां का आम आदमी हिंदी जान और समझ कर स्वयं को गौरवान्वित महसूस करता है। उसे टूटी-फूटी हिंदी में बात करना अच्छा लगता है। यही नहीं हमारे जैसे असंख्य उत्तर भारतीय और मारवाड़ी यहां बसे हुए, जो बहुत अच्छी तमिल बोलते हैं और तमिल में अपना कार्य भी करते हैं। तब ऐसी स्थिति में क्यों भाषा के नाम पर अलगाव पैदा किया जा रहा है। 1937 में मद्रास प्रेसीडेंसी में जो हिंदी विरोधी आंदोलन शुरू हुआ और पिछली सदी के छठे दशक में दूसरा आंदोलन उभरा, उन सभी को दरकिनार कर अब त्रिभाषा सूत्र को ईमानदारी से लागू करने का समय आ गया है। रूस और चीन जैसे देशों में अनेक भाषाएं हैं किंतु रूसी और चीनी भाषाओं को राष्ट्रभाषा का दर्जा देते हुए राष्ट्रीय अस्मिता से जोड़ा गया। अगर ऐसा नहीं हुआ तो एक दिन अंग्रेजी पहले दक्षिण की भाषाओं को लीलेगी। तमिलनाडु में ही तमिल की स्थिति बहुत अच्छी नहीं है क्योंकि यहां की नई पीढ़ी के बहुत कम लोग तमिल पढ़ और लिख पाते हैं। उन्हें मात्र तमिल बोलना आता है। जिस प्रकार तमिलनाडु और कर्नाटक जैसे दक्षिणी राज्य क्रमशः तमिल और कन्नड़ को अपने राज्य की अस्मिता से जोड़कर देखते हैं तो क्या हिंदी को भारत की अस्मिता से नहीं जोड़ा जाना चाहिए?

जिस तरह से दक्षिण भारत में हिंदी फल-फूल रही है वैसे ही उत्तर भारत में त्रिभाषा सूत्र ईमानदारी से लागू होना चाहिए और वहां भी मातृ भाषा तथा अंग्रेजी के साथ-साथ ऐच्छिक विषय के रूप में उर्दू, संस्कृत तथा दक्षिण की भाषाओं को भी पढ़ने-पढ़ाने पर जोर देना होगा। भारतीय सांस्कृतिक, पारंपरिक विरासत को बचाना है तो हमें यह करना ही होगा।

डॉ निर्मला एस मौर्य
पूर्व कुलसचिव एवं अध्यक्ष उच्च शिक्षा और शोध संस्थान दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, चेन्नई

रूस और चीन जैसे देशों में अनेक भाषाएं हैं किंतु रूसी और चीनी भाषाओं को राष्ट्रभाषा का दर्जा देते हुए राष्ट्रीय अस्मिता से जोड़ा गया।

दक्षिण में संेध

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के मसौदे में त्रिभाषा फार्मूले के तहत हिंदी की अनिवार्यता दक्षिण भारतीय राज्यों को भले ही उन पर इसे थोपना लग रहा हो, लेकिन हिंदी ने इस पूरे क्षेत्र में अपनी मजबूत पैठ बना ली है। इसमें जनसांख्यिकीय और आर्थिकी जैसे कारकों ने अहम किरदार निभाया है। गूगल और जनगणना के आंकड़े तो कम से कम यही तस्वीर दिखा रहे हैं।

हिंदी सिनेमा की पहुंच

दक्षिण के राज्यों में हिंदी सिनेमा को लेकर किए गए गूगल सर्च नतीजे बताते हैं कि लोगों का रुझान इस भाषा के प्रति तेजी से बढ़ा है। हालांकि स्थानीय भाषा के प्रति भी रुझान में कमी नहीं आई है।

बॉलीवुड बनाम स्थानीय सिनेमा

(पिछले दशक के दौरान औसत गूगल सर्च नतीजे। गूगल सर्च नतीजों को शून्य से 100 के बीच मापा गया है।)

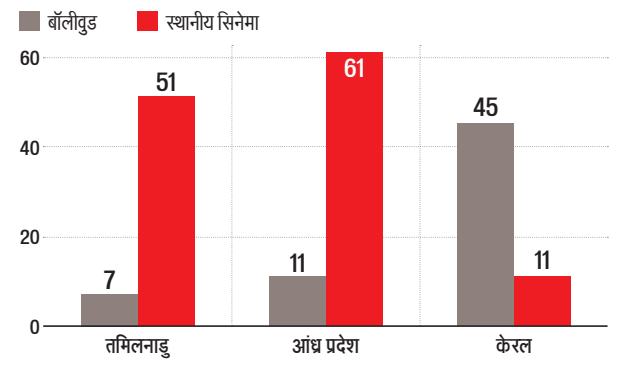

दूसरी भाषा की स्थिति

2011 की जनगणना के अनुसार हिंदी भाषी लोगों से कहीं ज्यादा संख्या में दक्षिण के लोग दूसरी भाषा का इस्तेमाल करते हैं। सिर्फ 11 फीसद हिंदीभाषी दूसरी भाषा बोलते हैं जबकि दक्षिण के राज्यों के लिए यह आंकड़ा 25 फीसद है। हालांकि बहु भाषा बोलने वाला दक्षिण भारतीय हिंदी की जगह अंग्रेजी बोलते हैं।

बहुभाषी लोगों की हिस्सेदारी *(फीसद में)*

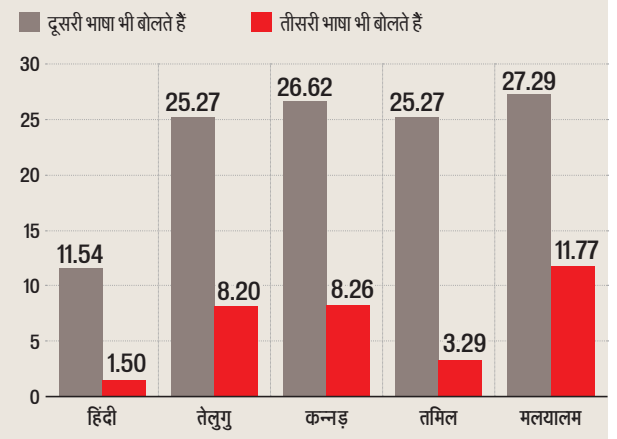

हिंदी भाषी आबादी में तेज वृद्धि

क्षेत्रीय मनोरंजन के प्रभुत्व और अंग्रेजी को वरीयता दिए जाने के बावजूद हिंदी दक्षिण के राज्यों में तेजी से अधिक लोगों द्वारा बोली जा रही है। भारत में पिछले कुछ दशकों में हिंदी बोलने वालों की संख्या में लगातार वृद्धि हुई है। 1971 में, 36.9 फीसद भारतीय हिंदी बोलते थे। लेकिन 2011 में यह आंकड़ा बढ़कर 46.63 फीसद हो गया। इसके विपरीत, दक्षिण के राज्यों की भाषा बोलने वालों का अनुपात कम हुआ है। उदाहरण के लिए, तमिल बोलने वाले भारतीयों के फीसद में 1971 और 2011 के बीच 1.2 फीसद (6.9 फीसद से 5.7 फीसद) की कमी आई, जबकि तेलुगु भाषी में 1.46 फीसद (8.2 से 6.7 फीसद) की कमी हुई।

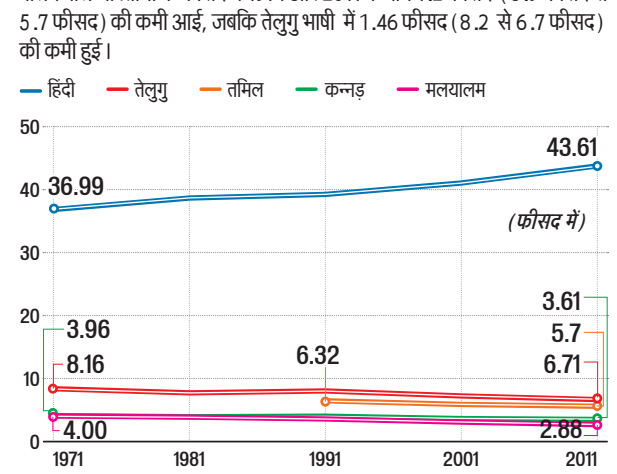

एक दशक में बढ़े 40 फीसद हिंदी भाषी

दक्षिण के राज्यों में हिंदी बोलने वालों की संख्या तेजी से बढ़ी है। 2001 से 2011 तक दौरान केरल और तमिलनाडु में हिंदी बोलने वाली की संख्या दोगुनी हो गई। हालांकि इसका बड़ा कारण उत्तर भारत के गरीब राज्यों से दक्षिण में रोजी-रोटी की तलाश में लोगों का पहुंचना माना जाता है। 2016-17 के आर्थिक सर्वे में यह बात स्पष्ट की गई है कि उच्च प्रति व्यक्ति आय वाले केरल, कर्नाटक और तमिलनाडु मजदूरों के प्रवास के वरीय केंद्र बने हुए हैं। सर्वे यह भी बताता है कि इस तरह के पलायन में भाषा कोई बाधा नहीं बन रही है।

2001 से 2011 के बीच हिंदी भाषी लोगों की हिस्सेदारी में वृद्धि *(फीसद में)*

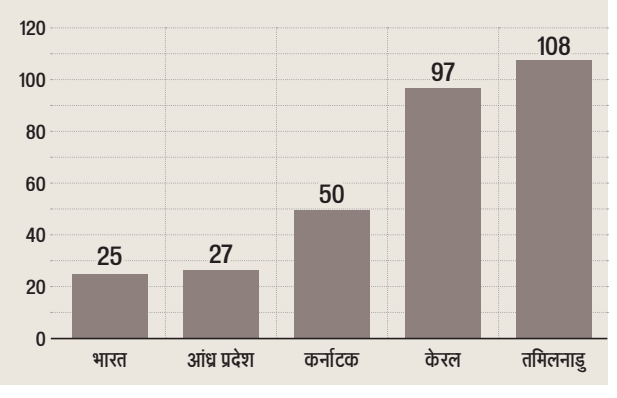

जनमत

हां 25% नहीं 75%

क्या नई शिक्षा नीति में त्रिभाषा फॉर्मूले को हटाकर सरकार हिंदी के प्रसार के दायित्व से पीछे हट रही है?

हां 96% नहीं 04%

क्या देश की अखंडता को मजबूती देने के लिए हिंदी को त्रिभाषा फॉर्मूले में शामिल होना जरूरी है?

आपकी आवाज

त्रिभाषा फॉर्मूले को लेकर केंद्र सरकार की मंशा सकारात्मक है। कुछ बाधाएं हैं जिन्हें संवाद के जरिये दूर किए जाने की जरूरत है। हिंदी के प्रसार के अपने दायित्व को लेकर सरकार पूरी तरह से प्रतिबद्ध है। विरोध करने वालों को देश में एक राष्ट्र, एक भाषा की अवधारणा को समझना चाहिए। **वरुण**

यह विरोध पूरी तरह सियासी है। सरकार को भी चाहिए कि वह इन राज्यों के दबाव में न आए और हिंदी को मजबूत बनाने के लिए हर संभव कदम उठाए। **राकेश**

भाषा राष्ट्र की एकता, अखंडता तथा विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यदि राष्ट्र को सशक्त बनाना है तो एक भाषा होना चाहिए। इससे धार्मिक तथा सांस्कृतिक एकता बढ़ती है। यह स्वतंत्र तथा समृद्ध राष्ट्र के लिए आवश्यक है। **अतुल**

हिंदी ही एक ऐसी भाषा है, जो पूरे देश को एक सूत्र में बांध सकती है। पूरे देश के लोग इसे समझते भी हैं। हिंदी का विरोध पूरी तरह से सियासी है। त्रिभाषा फॉर्मूला लागू होना चाहिए। भाषा मजबूत होगी तो ही देश तरक्की करेगा। **आशुतोष**

Downloaded from: www.iascgl.com

www.jagran.com राष्ट्रीय संस्करण
दैनिक जागरण
रविवार 16 जून 2019

दैनिक जागरण
प्रेरणा की शक्ति से असंभव संभव होता है

गृह मंत्रालय की सख्ती

पश्चिम बंगाल में जारी राजनीतिक हिंसा और साथ ही डॉक्टरों की हड़ताल पर केंद्रीय गृह मंत्रालय ने रिपोर्ट मांगकर अपने सख्त रवैये का ही परिचय दिया है। इसके पहले भी गृह मंत्रालय ने राजनीतिक हिंसा को लेकर ममता सरकार को एडवाइजरी जारी कर कहा था कि राज्य में कानून एवं व्यवस्था बनाए रखने पर ध्यान दिया जाए और साथ ही लापरवाह अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई की जाए। इस बार उसने एक ओर जहां डॉक्टरों की हड़ताल पर यह पूछा कि इस हड़ताल को खत्म करने के लिए क्या कदम उठाए गए वहीं दूसरी ओर यह विवरण भी मांग लिया कि बीते तीन सालों से जारी राजनीतिक हिंसा के दोषियों को सजा दिलाने के लिए क्या किया गया? ऐसे सवाल इसके बावजूद पूछे जाने चाहिए कि कानून एवं व्यवस्था राज्यों का विषय है। यदि किसी राज्य में हालात एक सीमा से अधिक बिगड़ते हैं तो केंद्र सरकार की यह जिम्मेदारी बनती है कि वह उन पर न केवल ध्यान दे, बल्कि ऐसे उपाय भी करे जिससे हालात संभलें। यह इसलिए आवश्यक है, क्योंकि जब देश के किसी हिस्से में कानून एवं व्यवस्था की स्थिति को लेकर गंभीर सवाल खड़े होते हैं तो उससे देश की छवि और प्रतिष्ठा पर असर पड़ता है। हालांकि गृह मंत्रालय की एडवाइजरी पर ममता सरकार का यही कहना था कि मोदी सरकार उनकी सरकार को बदनाम करने की कोशिश कर रही है, लेकिन डॉक्टरों की हड़ताल खत्म कराने के लिए उनकी पहल कहीं न कहीं यह संकेत दे रही है कि गृह मंत्रालय का दबाव रंग ला रहा है। यह रंग लाना भी चाहिए, क्योंकि एक तो मोदी सरकार कहीं अधिक राजनीतिक ताकत के साथ सत्ता में लौटी है और दूसरे गृह मंत्रालय की कमान भाजपा अध्यक्ष अमित शाह के हाथ में आने के बाद यह अपेक्षा भी बढ़ी है कि अब चीजें अलग ढंग से काम करेंगी। इसका एक बड़ा कारण अमित शाह की सख्त प्रशासक की छवि है।

अमित शाह वांछित नतीजों पर केंद्रित रहने के लिए जाने जाते हैं। गृह मंत्रालय संभालने के बाद उन्होंने ऐसे संकेत भी दिए हैं कि वह उन गतिविधियों को सहन करने वाले नहीं जो मोदी सरकार अथवा देश की छवि पर असर डालने वाली हों। इसकी अनदेखी नहीं की जा सकती कि उन्होंने न केवल केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह के एक अनावश्यक ट्वीट पर उन्हें झिड़का, बल्कि गृह राज्य मंत्री किशन रेड्डी को भी उनके एक बेजा बयान के लिए फटकारा। उनके ऐसे तेवरों को देखते हुए इस पर आश्चर्य नहीं कि गृह मंत्रालय पश्चिम बंगाल की घटनाओं पर सख्ती दिखा रहा है। इसे देखते हुए राज्य सरकारें यह समझें तो बेहतर कि अब गृह मंत्रालय राज्यों के हालात पर कहीं अधिक गहन निगाह रखेगा। यह समय की मांग भी है, क्योंकि यह स्वीकार्य नहीं कि सैकड़ों लोगों की भीड़ किसी अस्पताल में धावा बोलकर डॉक्टरों को पीट-पीट कर अधमरा करा दे और फिर भी राज्य सरकार हिंसक तत्वों के खिलाफ कुछ न करे। ममता सरकार ने यही किया। राजनीतिक हिंसा पर भी उसका रवैया मनमानी वाला है। ऐसे हालात में यह आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य है कि गृह मंत्रालय सचेत और सक्रिय दिखे।

भाषा थोपने का प्रयास

केंद्र सरकार ने जब त्रिभाषी फॉर्मूला की बात कही थी, तब तमिलनाडु में विपक्षी दल द्रमुक के प्रमुख स्टालिन के सुर में बंगाल की मुख्यमंत्री एवं तृणमूल कांग्रेस प्रमुख ममता बनर्जी ने भी सुर मिलाया था। यही नहीं, उन्होंने कहा था कि किसी पर कोई भाषा नहीं थोपी जानी चाहिए, लेकिन कुछ दिनों के अंदर ही सियासत की अंधी दौड़ में वही ममता भूल गईं कि किसी पर कोई भाषा नहीं थोपी जा सकती है। ममता ने कहा कि अगर आप बंगाल में हैं तो आपको बांग्ला भाषा बोलनी ही होगी। मैं ऐसे अपराधियों को बर्दाश्त नहीं करूंगी, जो बंगाल में रहते हैं और बाइक पर घूमते हैं। उनका यह इशारा कहीं और नहीं, भाजपा समर्थक हिंदीभाषियों पर था। उत्तर 24 परगना जिले के कांचरापाड़ा में पार्टी कार्यकर्ताओं के सम्मेलन को संबोधित करते हुए ममता ने एक बार फिर बंगाल और बांग्ला की बात कर दी। यहां बताना आवश्यक है कि कांचरापाड़ा इलाका बैरकपुर संसदीय क्षेत्र का हिस्सा है, जहां तृणमूल छोड़कर भाजपा में शामिल हुए हिंदीभाषी अर्जुन सिंह को जीत मिली है। इस इलाके में हिंदीभाषियों की संख्या बहुत अधिक है। ऐसे में क्या एक मुख्यमंत्री का उसी इलाके में जाकर यह कहना कि अमुक भाषा बोलनी होगी, क्या उचित है? क्या इससे भाषाई विभेद पैदा नहीं होगा? ममता का कहना है कि हमें बांग्ला को आगे लाना होगा। यह करने से उन्हें कौन रोक रहा है? हमारे देश के संविधान ने हरेक व्यक्ति को यह अधिकार दिया है कि वह कहीं भी जा सकता है और कोई भी भाषा बोल सकता है। ऐसे में यह कहना कि बंगाल में रहते हैं तो बांग्ला भाषा बोलनी होगी, क्या सही है? ममता का कहना है कि जब मैं बिहार, यूपी, पंजाब जाती हूं तो वहां की भाषा बोलती हूं। क्या वह केरल, कर्नाटक जाएंगी तो कन्नड़, मलयालम बोल पाएंगी? इसपर विचार करने की जरूरत है। हर चीज में सियासत नहीं लानी चाहिए। जूनियर डॉक्टर हड़ताल कर रहे हैं तो उसमें भी उन्हें साजिश दिख रही है। यही नहीं, दो वर्ष पहले सभी स्कूलों में बांग्ला भाषा की पढ़ाई अनिवार्य करने को लेकर कई माह तक दार्जिलिंग जला था। बावजूद इसके, उस घटना से सीख न लेकर भाषा पर विवाद पैदा करना सही नहीं है। हर भाषा का सम्मान होना चाहिए।

कठिन लक्ष्य है हर घर को नल से जल

संजय गुप्त

भारत में पेयजल की किल्लत का अनुमान इससे भी लगाया जा सकता है कि तमाम ऐसे इलाकों मे भी ट्यूबवेल से भूमिगत जल का दोहन किया जा रहा है जहां नल से जल भेजने की सुविधा है

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने कार्यकाल की दूसरी पारी में जल संसाधन, नदी विकास एवं गंगा संरक्षण और पेयजल एवं स्वच्छता मंत्रालय को मिलाकर जल शक्ति मंत्रालय बना दिया है। इस मंत्रालय की कमान गजेंद्र सिंह शेखावत को सौंपी गई है। शेखावत ने इस मंत्रालय की कमान संभालते ही यह घोषणा की कि अभी देश के 18 प्रतिशत ग्रामीण घरों में ही नल से जल की आपूर्ति होती है, लेकिन अगले पांच साल में शेष सभी 82 प्रतिशत घरों में भी नल से पेयजल की आपूर्ति की जाएगी। इस आशय का वादा भाजपा ने अपने घोषणा पत्र में भी किया था। इस वादे के अनुसार जल के लिए नया मंत्रालय बनाकर देश के अलग-अलग हिस्सों में बड़ी नदियों को जोड़ने के अटल बिहारी वाजपेयी के महत्वाकांक्षी कार्यक्रम को आगे बढ़ाया जाएगा ताकि पीने के पानी की समस्या का समाधान करने के साथ ही सिंचाई के लिए भी पानी उपलब्ध कराया जा सके। ग्रामीण इलाकों में हर घर को नल से जल पहुंचाने की योजना चुनौती भरी है। यह चुनौती गरीबों को रसोई गैस सिलेंडर उपलब्ध कराने और शौचालयों का निर्माण कराने से अधिक कठिन है, लेकिन इसे पूरा करना भी आवश्यक है। यह योजना यह बताती है कि आजादी के 72 वर्षों बाद भी हम सभी को पेयजल उपलब्ध नहीं करा पाए हैं। अर्थव्यवस्था के लिहाज से भारत से पिछड़े कई देश अपने लोगों को बिजली, पानी एवं अन्य नागरिक सुविधाएं देने में समर्थ रहे हैं। कई देश तो ऐसे हैं जो सभी को पेयजल उपलब्ध कराने के साथ उसकी गुणवत्ता भी बनाए रखने में सक्षम हैं। यूरोपीय समुदाय में शामिल होने वाले देशों के सामने तो एक शर्त यह थी कि वे पेयजल संबंधी मानकों को पूरा करें। अपने देश में पेयजल के मामले में मानक तो बने हुए हैं, लेकिन उनका पालन मुश्किल से ही होता है। यही कारण है कि कई बड़े शहरों में भी गंदे जल की आपूर्ति की शिकायतें सामने आती रहती हैं। स्थानीय निकाय समुचित मात्रा में पानी की आपूर्ति करने में अक्षम हैं।

एक आंकड़े के अनुसार देश में प्रति व्यक्ति जल उपलब्धता 2001 में 1816 क्यूबिक मीटर थी जो 2011 में 1544 क्यूबिक मीटर हो गई, लेकिन केंद्रीय जल आयोग की एक रिपोर्ट के अनुसार 2050 में पूरे देश में प्रति व्यक्ति जल उपलब्धता 1140 क्यूबिक मीटर रह जाने का अनुमान है। अंतरराष्ट्रीय एजेंसियों के अनुसार यदि प्रति व्यक्ति जल उपलब्धता 1000 क्यूबिक मीटर से नीचे आती है तो उसे जल संकट माना जाता है। समस्या यह है कि देश के कई नदी बेसिन में जल उपलब्धता का पैमाना नीचे जा रहा है। इनमें कृष्णा, कावेरी, साबरमती भी हैं। इसे देखते हुए यह कहना अतिशयोक्ति नहीं कि देश का एक भाग रेगिस्तान में तब्दील हो रहा है। आज देश के कितने ही गांवों में महिलाओं को सिर पर पानी ढोकर मीलों चलना पड़ता है। कई जगह यह पानी शुद्ध भी नहीं होता। अनेक शहरों का भी बुरा हाल है। अनियोजित विकास ने हर घर को पानी पहुंचाने के लक्ष्य को और मुश्किल बना दिया है। ध्यान रहे कि देश की राजधानी दिल्ली तक में ऐसे इलाके हैं जहां के लोग पानी के टैंकरों पर निर्भर रहते हैं। भारत में पेयजल की किल्लत का अनुमान इससे भी लगाया जा सकता है कि तमाम ऐसे इलाकों मे भी ट्यूबवेल से भूमिगत जल का दोहन किया जा रहा है जहां नल से जल भेजने की सुविधा है। इसके चलते भूजल स्तर गिरता जा रहा है। एक बड़ी समस्या यह है कि यह भूमिगत जल दूषित हो रहा है। कहीं-कहीं तो इतना दूषित हो गया है कि वह न तो पीने के लायक है और न ही सिंचाई के लायक। वह बीमारियां फैलाने का काम कर रहा है।

अवधेश राजपूत

अपने देश में पीने और सिंचाई के पानी की समस्या आज से नहीं, आजादी के पहले से हैं। इसी तरह नदी जल के बंटवारे की समस्या भी बहुत पुरानी है। आज भी नदी जल बंटवारे को लेकर कई राज्यों के बीच तनातनी है। कर्नाटक और तमिलनाडु के कावेरी जल को लेकर विवाद है तो पंजाब और हरियाणा के बीच सतलज नदी के जल को लेकर। देश के कुछ हिस्से ऐसे भी हैं जो दूसरे देश से आने वाली नदियों के पानी से परेशान होते रहते हैं। पानी से जुड़ी समस्याएं इसलिए बढ़ती जा रही हैं, क्योंकि सामाजिक-आर्थिक कारणों से भारत ढंग की कोई जल नीति नहीं बना पाया है। अब जब मोदी सरकार ग्रामीण क्षेत्र में हर घर को नल से जल पहुंचाने की योजना आगे बढ़ा रही है तब फिर उसे इस पर ध्यान देना होगा कि नदियों के जल का ठीक से बंटवारा हो, भूमिगत जल का अनावश्यक दोहन न हो, उसे प्रदूषित होने से रोका जाए और बारिश के जल का संरक्षण और संचयन हो। यदि बारिश के जल के एक चौथाई हिस्से को भी ढंग से संरक्षित और संचित किया जा सके तो पेयजल और सिंचाई के पानी की सारी जरूरतें पूरी हो सकती हैं, लेकिन इस दिशा में पर्याप्त कदम नहीं उठाए जा सके हैं। जो कदम उठाए भी गए हैं वे पर्याप्त नहीं हैं। जल संरक्षण की योजनाएं सतत निगरानी और बेहतर रख-रखाव की मांग करती हैं। इसके अभाव में ये योजनाएं वैसे ही नाकाम हो सकती हैं जैसे सीवेज शोधन संयंत्र हो रहे हैं। जल संरक्षण की योजनाओं का नियमन और उनका रख-रखाव बेहतर ढंग से किया जाना इसलिए अनिवार्य हो गया है, क्योंकि जल संकट बढ़ता जा रहा है। जल संकट से बचने के लिए इस सवाल को भी सुलझाना होगा कि जल को संविधान की समवर्ती सूची में लाया जाए या नहीं?

आज देश के तमाम हिस्सों में छोटी-छोटी नदियां नालों में तब्दील हो चुकी हैं। कुछ तो नष्ट होने की कगार पर हैं। नदियों के अलावा अन्य परंपरागत जलस्रोत भी अनदेखी का शिकार हैं। स्पष्ट है कि नवगठित जल शक्ति मंत्रालय को इन समस्याओं पर गंभीरता से गौर करना होगा। चूंकि केंद्र सरकार का काम नीतियां बनाना और उन पर अमल करना राज्यों का काम है इसलिए राज्य सरकारों को अपनी जिम्मेदारी समझनी होगी और यह देखना होगा कि स्थानीय निकाय अपना काम सही ढंग से करें, क्योंकि पानी के प्रबंधन का काम उनके ही जिम्मे आता है। यदि ऐसा नहीं होता तो मोदी सरकार की हर घर को नल से जल पहुंचाने की योजना को कठिनाई का सामना करना पड़ सकता है। यह तय है कि इस महत्वाकांक्षी योजना के लिए अच्छा-खासा धन चाहिए होगा। राज्यों ने इस योजना पर अमल के लिए जितने धन की जरूरत जताई है उससे यह स्पष्ट है कि अगले पांच सालों में केंद्र को इस योजना के मद में बड़ी धनराशि का प्रबंध करना होगा। अगर अगले पांच साल में इस योजना पर सही ढंग से अमल हुआ तो देश के लोगों को एक बड़ी राहत तो मिलेगी ही, मोदी सरकार को 2024 में वैसी ही राजनीतिक सफलता मिल सकती है जैसी हाल के आम चुनावों में गरीबों को रसोई गैस उपलब्ध कराने और उनके घरों में शौचालय निर्माण संबंधी योजनाओं से मिली।

response@jagran.com

कवि क्या कहना चाहता है

हास्य-व्यंग्य

आत्मा-परमात्मा के रहस्यों, राजनीतिक सूक्ष्मताओं, ब्रह्माण्ड के रहस्य से भी अधिक गूढ़ और अधिक आनंददायक प्रश्न हिंदी साहित्य ने दिया है कि कवि क्या कहना चाहता है? यह एक प्रश्न है जिसे पहचानने की कला ने कई कवियों और समीक्षकों के जीवन की सार्थकता और करियर की सफलता निर्धारित की है। बड़े-बड़े अधिवेशनों में बड़े-बड़े बुद्धिजीवी इसी प्रश्न के उत्तर की खोज में समय बिताते रहे हैं। गालिब ने एक शेर कहा था 'घर की दीवार पे खिला है सब्जा, हम हैं वीराने में आंगन में बहार आई है।' दो शताब्दी पहले और आज भी कई शोधकर्ता यह ढूंढने में अपनी साहित्यिक ऊर्जा का सदुपयोग करके संस्कृति मंत्रालयों से पारितोषिक और अकादमियों से नौकरियां प्राप्त कर रहे हैं कि मिर्जा साहब यहां कहना क्या चाहते हैं?

साकेत सूर्येश

गालिब सपने में आए और एक तमाचा देकर कहने लगे, 'भाई, कवि कभी-कभी वही कहता है जो वह कहना चाहता है'

एक कहता है कि शायद गदर के माहौल में गालिब के भीतर एक असहिष्णु राष्ट्रवादी आत्मा घुस गई और घर में छुपे गालिब साहब ने यह शेर फरमाया। एक दार्शनिक किस्म के बुद्धिजीवी के अनुसार गालिब साहब कबीर के विचारों में डूबे हैं और कहना चाहते हैं कि मैं दूसरों की बहार देख रहा हूं और मेरी आत्मा पर एक पतझड़ छाया हुआ है तथा मेरे सूखे हुए विचारों के पत्ते आत्मा के आंगन में गिर रहे हैं। एक गुलजारी प्रवृत्ति के लेखक लिखते हैं कि गालिब साहब कहना चाहते हैं कि 'सूखी हुई रूह पर धूप की पीली नमकीन रोशनी गिरती है और तुम, खूबसूरत सी, शाम के धुंधलके में आंगन में खिल रही हो।' उनकी समीक्षा की पृष्ठभूमि में वायलिन की ध्वनि डालकर ऑडियो बनाए गए जो युवा वर्ग द्वारा हाथों-हाथ लिए गए।

वामपंथी लेखक का कहना है कि गालिब साहब का तात्पर्य है कि सर्वहारा यहां वीराने में पड़ा है और बुर्जुआ वर्ग बहार का आनंद ले रहा है। वीराने में पड़े सर्वहारा का कर्तव्य है कि इस अत्याचार के विरोध में आवाज उठाए और 'होबे न, चोलबे न' के अमर नारे के साथ कमरे की दीवार गिराकर आंगन और सामने के फुटपाथ को घर के अंदर खींच ले। वामपंथी लेखक के वचनों को बहुत सम्मान प्राप्त हुआ। पांच सितारा होटलों में पांच सितारा साहित्यकारों द्वारा उनकी पुस्तक का विमोचन हुआ। उनकी गालिब की समीक्षा विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में शामिल हुई। गालिब के दीवान से अधिक उनकी समीक्षाएं बिकीं। वे एक विश्वविद्यालय में प्राध्यापक हुए, अखबारों में लिखने लगे। तत्कालीन सरकार ने उन्हें पुरस्कार दिया, उस सरकार के गिरने के बाद उन्होंने नई सरकार के विरुद्ध पुरस्कार लौटाया और प्रबुद्ध चिंतक के रूप में उन्होंने देश-विदेश में ख्याति प्राप्त की।

हमारे मित्र छगनलाल इन सब प्रेरणादायक प्रसंगों से बहुत उत्साहित हुए और एक दिन आकर बोले कि हम व्यंग्य का क्षेत्र छोड़कर समीक्षक बनेंगे और नामवर होंगे। छगनलाल के इस निर्णय के पीछे दो कारण थे। एक यह कि 'कवि क्या कहना चाहता है' में स्कोप अधिक है और दूसरा मुझे उलाहना देते हुए उन्होंने कहा कि व्यंग्यकार बनने में आगे कोई विकास नहीं है और बुढ़ापे में किचन गार्डन में टमाटर ही उगाने पड़ते हैं। वहीं एक कुशल समीक्षक आगे राजनीतिक प्रवक्ता बन कर भिन्न-भिन्न दलों के भिन्न-भिन्न सुप्रीम नेताओं की भावनाओं का अनुवाद राजनीतिक उपयोगिता के अनुसार कर सकता है-मसलन महान नेता ने सिर को चीन के विदेश मंत्री से मिलते हुए दाईं ओर झुकाया, सो इसका तात्पर्य यह है कि वह दक्षिणपंथ के साथ रहेंगे और वामपंथी शक्तियों का विरोध करेंगे। अतः उन्होंने समीक्षक बनने का निर्णय लिया और सफल समीक्षक के नाते सफल होने के बाद वे तय करेंगे कि किस नेता को अपना मुक्तिबोध मानकर वे उनकी तमाम वक्तव्यों का गूढ़ मंतव्य जनता तक ले जाएंगे।

हमने उनकी ओर भी गालिब का परिचित शेर फेंक कर पूछा कि कवि क्या कहना चाहता है? उन्होंने अपने चिर-परिचित अंदाज का प्रदर्शन करते हुए कहा कि संभव है कि गालिब की सुंदर-सी पड़ोसन शक्कर लेने उनके घर पहुंची हो और गालिब साहब के मुंह से यह बात निकल गई हो कि आंगन में बहार आई है और एक निरीह पति की भांति हम यहां भीतर वीराने में बैठे हैं।

दूसरे दिन छगनलाल वापस आए और उनकी कांख में परसाई जी और शरद जी की पुस्तकें थीं। हमने पूछा कि वापस व्यंग्य की दुनिया की ओर लौट पड़ने का क्या तात्पर्य है? कहने लगे रात में गालिब उनके सपने में आए। एक तमाचा देकर कहने लगे, 'भाई, कवि कभी-कभी वही कहता है जो वह कहना चाहता है।' इसके बाद हमने वापस व्यंग्य की ओर लौटने का निर्णय लिया।

response@jagran.com

तथ्य-कथ्य

मेडिकल कॉलेजों की संख्या और सीटों में वृद्धि

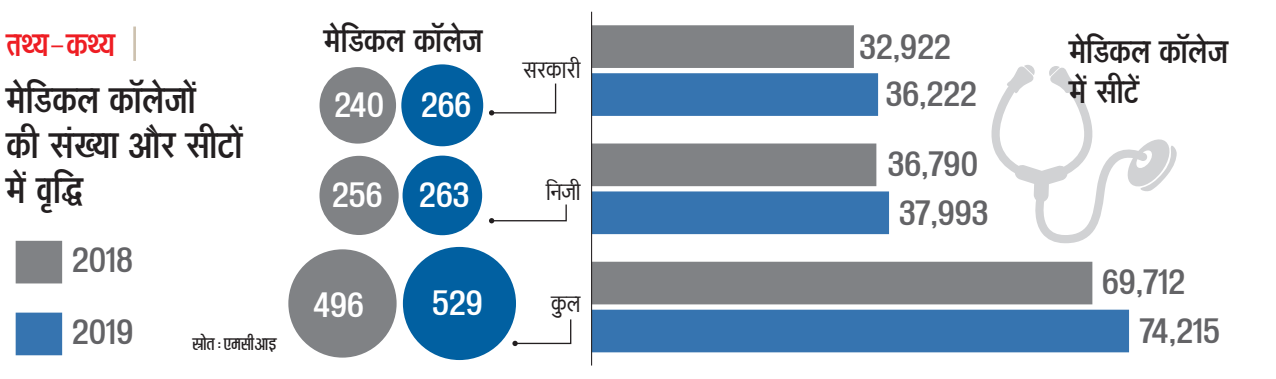

स्रोत : एमसीआइ

ऊर्जा

सफलता

कामयाबी के शिखर पर कुशलता के सोपानों से चढ़ा जाता है। सफलता बौद्धिक प्रतिभा का संग्रह मात्र नहीं, बल्कि बौद्धिक क्षमता के समुचित सुनियोजन की कुशलता का नाम है। सफलता एक ऐसी तकनीक का नाम है, जो जाने हुए अर्जित ज्ञान को समय की मांग के अनुरूप क्रियाशील एवं क्रियान्वित कर सके। नई सोच, नए विचार और नित नई कुशलता सफलता के सूत्र हैं। ये सूत्र भौतिक जीवन से लेकर आध्यात्मिक जीवन में भी प्रयुक्त होते हैं। भौतिक जीवन के नूतन आविष्कार और उनकी व्यावहारिक उपयोगिता इसी का परिणाम है। सफल होने के लिए समय एवं परिस्थिति के अनुरूप स्थिति को ढालने की आवश्यकता होती है।

पूर्वाग्रही, दुराग्रही और हठाग्रही व्यक्ति कभी सफल नहीं हो सकते, क्योंकि ऐसे व्यक्ति अपनी आदतों, मान्यताओं, आग्रहों और दुराग्रहों की सीमा में इस कदर कैद होते हैं कि वे इससे परे कुछ सोच ही नहीं सकते। ऐसी मानसिकता बदली हुई परिस्थितियों की आहट को सुनने-समझने में पूर्णतः असमर्थ होती है। किसी क्षेत्र में सफलता के लिए उस क्षेत्र के सारे आयामों से संबंधित सूचनाओं के संग्रह की जरूरत होती है। इसके अलावा किसी वांछित विषय के स्वरूप को मनोयोगपूर्वक सही ढंग से समझना और उसे क्रियान्वित करने की तकनीक खोजना महत्वपूर्ण है।

कुशल कलाकार अपने कलात्मक कौशल से अपनी कला को सफलता के शिखर तक पहुंचा देता है। हमारे पास जो है या हम जिसे प्राप्त करने जा रहे हैं, उसे वर्तमान में कैसे उपयोगी एवं व्यावहारिक बनाया जा सकता है? इस बात की खोज ही सफलता का आधार है। इसलिए सफल होने के लिए ज्ञानार्जन के अलावा इस बारे में तकनीकी ज्ञान प्राप्त करते हुए इस ज्ञान के प्रयोग की कुशलता का अभ्यास परम आवश्यक है। इसके अलावा एक महत्वपूर्ण बात यह है कि सफलता के लिए धैर्य की भी बहुत आवश्यकता है। जैसे पौधा एक दिन में वृक्ष नहीं बन जाता, ठीक उसी प्रकार सफलता का भी कोई 'शॉर्टकट' नहीं होता। जब हम एक नियत समय तक प्रयास करेंगे तो कालांतर में उसका परिणाम मिलेगा। जितनी गलतियां कर सकें कर लें, लेकिन याद रखें इससे सीखने से ही आपको सफलता मिलेगी।

डॉ. सुरचना त्रिवेदी

ट्रेन सफर पर लू का कहर

मुकुल व्यास

रेलवे को कुछ राहत वाले उपाय अवश्य करने चाहिए जिनमें दिन के वक्त ट्रेनों का नया समय निर्धारण शामिल है

उत्तर और मध्य भारत में गर्मी भीषण प्रकोप जारी है। मई के महीने में शुरू हुई गर्म हवाओं ने कम से कम 36 लोगों की जान ले ली है। कई शहरों में तापमान 50 और 46 डिग्री सेल्सियस की रेंज में पहुंच चुका है। भारत में इस साल गर्मी से होने वाली मौतों में सबसे ज्यादा चौंकाने वाली मौतें रेल यात्रियों की थीं। झांसी से गुजर रही केरल एक्सप्रेस के गैर-एसी कोच में सवार चार सीनियर सिटीजन गर्मी नहीं झेल पाए। इस घटना ने रेल अधिकारियों को यह सोचने के लिए अवश्य मजबूर किया होगा कि गर्म प्रदेशों से गुजरने वाली ट्रेनों में यात्रियों को गर्मी से कैसे बचाया जाए। भारत की पटरियों पर दौड़ने वाली ट्रेनों के अधिकांश डिब्बों में एसी नहीं है और संसाधनों की कमी का तर्क देकर पूरी ट्रेन में एसी लगाने की बात तत्काल खारिज कर दी जाएगी, लेकिन रेलवे को इस दिशा में अभी से सोचना शुरू कर देना चाहिए, क्योंकि आने वाले वर्षों में गर्मी और ज्यादा विकट रूप धारण करेगी। ट्रेनों में गैर-एसी स्लीपर कोच की जगह एसी चेयर कार लगाई जा सकती हैं। रेलवे को कोच निर्माण के लिए गर्मी को परावर्तित करने वाले पदार्थ का प्रयोग करना चाहिए। डिब्बों की छतों, बाहरी हिस्सों और शीशों में हीट-रिफ्लेक्टिव चीजों का प्रयोग किया जा सकता है। साधारण डिब्बों में भीड़ न बढ़ने देने और उनमें वेंटिलेशन में सुधार की भी आवश्यकता है। डिब्बों पर थोड़े-थोड़े अंतराल के बाद पानी का झिड़काव भी एक सुझाव हो सकता है, लेकिन पानी के लिए हाहाकार कर रहे देश में इसे लागू करना मुश्किल है। एसी के बगैर ट्रेनों में तापमान कम करना एक बहुत बड़ी तकनीकी चुनौती है। इसके लिए रेलवे आइआइटी जैसे संस्थानों की मदद ले सकता है। फिलहाल रेलवे को अपने सामर्थ्य के हिसाब से कुछ राहत वाले उपाय अवश्य करने चाहिए जिनमें दिन के समय ट्रेनों का नया समय निर्धारण शामिल है।

दुनिया में हो रहे जलवायु परिवर्तनों के बाद भारत में गर्मी तीव्र हुई है। पिछले दशक में गर्म हवाओं और लू का सिलसिला तेज हुआ है। 2015 में नौ राज्य लू से प्रभावित हुए थे, जबकि 2018 में 19 राज्यों को लू का प्रकोप झेलना पड़ा। इस साल यह संख्या 23 तक पहुंच सकती है। सबसे ज्यादा विचलित करने वाली बात यह है कि इस साल लू वाले दिनों की संख्या भी बढ़ गई है। न सिर्फ दिन का तापमान अधिक रहता है, रात में भी तापमान ऊंचे स्तर पर बना रहता है।

दुनिया में गर्मी के नए रिकॉर्ड बनेंगे, क्योंकि ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन में वृद्धि के बाद औसत तापमान ऊपर की तरफ जा रहा है। हालांकि हर साल मौसम में कुछ भिन्नताएं होती हैं, लेकिन दुनिया का रुझान एकदम स्पष्ट है। इतिहास में दर्ज किए गए सबसे गर्म पांच वर्ष पिछले पांच वर्ष थे और सबसे ज्यादा गर्म 19 वर्षों में से 18 2001 से रिकॉर्ड किए गए हैं। दक्षिण एशिया के बड़े शहरों में जलवायु के रुझान के बारे में हाल में किए गए एक विश्लेषण से पता चलता है कि यदि गर्मी का यह सिलसिला बना रहा तो इस सदी के अंत तक गर्मी और नमी का स्तर इतना ऊपर पहुंच जाएगा कि जो लोग छह घंटे या उससे अधिक समय तक प्रत्यक्ष रूप से उनके संपर्क में आएंगे उनका जीवित रहना बड़ा मुश्किल होगा।

(लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं)

राजरंग

चर्चा में जदयू

ममता बनर्जी सरकार पर टिप्पणी करने के कारण जदयू से प्रवक्ता पद गंवा चुके अजय आलोक के प्रकरण ने राष्ट्रीय राजनीति में चर्चा को गरम कर दिया है। एक तरफ प्रशांत किशोर जो ममता के चुनावी सलाहकार बनने गए थे। दूसरी तरफ अजय आलोक जिसने कभी केंद्रीय गृह मंत्रालय पर टिप्पणी की थी, लेकिन बाल बांका नहीं हुआ। फंसे तब जब ममता पर बरसे। चर्चा के कारण प्रशांत किशोर और आलोक भले ही बने हों, केंद्रबिंदु में जदयू है। हालांकि जदयू नेतृत्व की ओर से बार-बार बोला जा रहा है कि भाजपा के साथ रिश्ते में सबकुछ सामान्य है, विधानसभा चुनाव भी दोनों मिलकर लड़ेंगे, लेकिन जदयू के रुख की मीमांसा हर दल कर रहा है। भाजपा से ज्यादा विपक्षी दलों की नजरें बनी हुई हैं। संसद सत्र के दौरान इसकी परीक्षा होगी।

बेबस मन

नई सरकार के गठन के बाद मंत्रियों के निजी सचिव को लेकर आए निर्देश ने नौकरशाहों के एक वर्ग पर मानो गाज गिरा दी है। सरकार ने तय कर दिया है कि पिछली सरकार में मंत्रियों के निजी सचिव रहे नौकरशाह इस बार बने नहीं रहेंगे। कुछ मंत्रियों के नए निजी सचिवों की तो नियुक्ति भी हो गई है। सरकार के इस कदम से नौकरशाही में हलचल सी मच गई है। कुछ निजी सचिव तो सलाहकार जैसे पदों में संभावनाएं तलाशने में जुट गए हैं तो बाकी मंत्रियों के साथ अपनी नियुक्ति की जुगत तलाश रहे हैं।

आजकल खामोश हैं

चुनाव के दौरान राजनीतिक बयान देकर सुर्खियों में छाए रहने वाले नीति आयोग के एक बड़े पदाधिकारी आजकल खामोश नजर आ रहे हैं। पहले जरा जरा-सी बात पर बयान देते थे, लेकिन अब बड़ी घटनाएं होने पर भी उन्होंने मौन साध लिया है। मसलन पूर्व मुख्य अर्थशास्त्री अरविंद सुब्रमणियन ने हाल ही में जब सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) के आंकड़ों के बारे में बयान दिया तो उस पर न तो उन्होंने कोई ट्वीट किया और न ही कोई वक्तव्य जारी किया। उनकी यह खामोशी नीति आयोग के गलियारों में चर्चा का विषय बनी हुई है। खासकर जब वह विदेश से पढ़े हुए अर्थशास्त्रियों को लेकर पहले ही कटाक्ष भरे बयान दे चुके हैं। ऐसे में इस बार जब अरविंद सुब्रमणियन ने यह बयान दिया तो उनसे उम्मीद थी कि सरकार पर हमले का वह जवाब देंगे, लेकिन उन्होंने इस पर अब तक कोई प्रतिक्रिया नहीं दी है। जीडीपी को लेकर भी वह गाहे-बगाहे ज्ञान देते रहे हैं। बहरहाल जो भी हो उन्हें लोकसभा चुनाव के दौरान दिए गए बयानों का फल तो मिल ही चुका है।

ट्वीट की नजाकत

ट्वीट आजकल विचारों के आदान-प्रदान का सबसे प्रचलित माध्यम तो बन गया है, लेकिन इस ट्वीट प्रेम के चक्कर में कुछ विचित्र वाकये भी हो जा रहे हैं। पिछले दिनों एक यूनियन के महामंत्री के कई परिजनों की कार दुर्घटना में मौत हो गई। इस पर संबंधित मंत्रालय के दोनों मंत्रियों की ओर से ट्वीट कर संवेदना प्रकट की गई, लेकिन जिस हैंडल से ये ट्वीट किया गया उसमें दोनों मंत्रियों की फोटो अत्यंत प्रफुल्लित मुद्रा में लगी हुई है। संवेदना केवल शब्दों से नहीं, बल्कि भाव-भंगिमा से भी जताई जाती है। मंत्री जी के ट्वीट में यह बिल्कुल उल्टा था। जाहिर है कि मंत्री के स्टाफ के संज्ञान में भी यह बात लाई गई और सलाह दी गई कि कम से कम ऐसे मौकों पर तो फोटो भी बदल दिए जाएं।

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त. पूर्व प्रधान संपादक-स्व.नरेन्द्र मोहन. संपादकीय निदेशक-महेन्द्र मोहन गुप्त. प्रधान संपादक-संजय गुप्त, जागरण प्रकाशन लि. के लिए: नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग,रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित, संपादक (राष्ट्रीय संस्करण) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 23359961-62, नोएडा कार्यालय : 0120-3915800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721 *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई शुल्क अतिरिक्त।

2000 में यानी करीब दो दशक पहले दक्षिण अफ्रीका के प्रसिद्ध क्रिकेट खिलाड़ी और तत्कालीन कप्तान हैंसी क्रोनिए पर मैच फिक्सिंग का आरोप लगने के बाद आम लोगों को यह पता चला कि मैच फिक्सिंग भी कोई चीज है।

आजकल

अनंत विजय

anant @nda.jagran.com

सकारात्मकता से समृद्ध होता साहित्य

साहित्यकारों के बीच गॉसिप का सिलसिला पुराना है। प्रसिद्ध उपन्यासकार मोहन राकेश की डायरी पढ़कर आप सहज यह अंदाजा लगा सकते हैं कि पहले भी लेखकों के बीच साहित्यिक राजनीति पर चर्चा होती थी और उनमें ईर्ष्या भाव भी कम नहीं था। हालांकि आज की साहित्यिक पीढ़ी में एक नई बात यह देखी जा रही है कि ये लोग सोशल मीडिया पर अपने साथियों के लेखन की प्रशंसा भी करते हैं, जो पहले कम दिखता था। हिंदी लेखन से जुड़ी नई पीढ़ी ने बहुत कुछ बदलाव किया है

पिछले दिनों एक साहित्यिक जमावड़े में आज के लेखकों के आचार-व्यवहार पर चर्चा हो रही थी। बहस इस बात पर हो रही थी कि साहित्य में निंदा-रस का कितना स्थान होना चाहिए। साहित्यकारों के बीच होनेवाली गॉसिप से लेकर एक दूसरे को नीचा दिखाने की बढ़ती प्रवृत्ति पर भी चर्चा होने लगी। वहां मौजूद सभी लोग इस बात पर लगभग एकमत थे कि साहित्य में नकारात्मकता ने सृजनात्मकता का काफी नुकसान पहुंचाया। साहित्य में नकारात्मकता को बढ़ावा देने के लिए फेसबुक को जिम्मेदार ठहरानेवाले भी मुखरता के साथ अपना पक्ष रख रहे थे। ये हमेशा से होता आया है कि जब कई साहित्यकार मिलते हैं तो गॉसिप और निंदा पुराण का दौर चलता ही है। साहित्यिक जमावड़े में रसरंजन की तरह ये भी एक अनिवार्य तत्व है। कई लेखकों ने इस बारे में लिखा भी है, लेकिन बहुत कुछ अलिखित रह गया है।

हिंदी के मशहूर उपन्यासकार- नाटककार मोहन राकेश ने 19 जुलाई 1964 को अपनी डायरी में लिखा, 'कल शाम सीसीआइ में चले गए, भारती, गिरधारी, राज और मैं। हमलोग पहले गए, राज बाद में आया। भारती के साथ ज्यादा साहित्यिक राजनीति की ही बातें होती रहीं। वात्स्यायन के बंबई आने का किस्सा, जो पहले बार-बार वे लोग सुना चुके हैं, वह फिर से सुनाने लगा, तो उसे याद दिला दिया कि यह माजरा नया नहीं है। ज्यादा बातें हुईं दिल्ली के छुटभैयों के बारे में, कॉफी हाउस के बारे में, उन कहानीकारों के बारे में जिनसे वक्तव्य नहीं मंगवाए गए, जिन्होंने वक्तव्य नहीं भेजे। एक मजाक हुआ। राज से गिरधारी ने कहा, 'तुम्हारे मुंह से शराब की गंध आती है।' 'तुम्हारे मुंह से तुलसीपत्र की गंध आती है,' राज ने उससे कहा और फिर बोला, 'और ये जो दो चले जा रहे हैं उनके मुंह से प्रेमपत्र की गंध आती है।' इस पर भारती बोला, 'क्यों गलत बात कहते हो। राकेश के मुंह से तो हमेशा त्यागपत्र की गंध आती है।'

भारती मतलब धर्मभारती और वात्स्यायन माने अज्ञेय जी। मोहन राकेश की डायरी के इस अंश में कई तरह के संकेत निकल रहे हैं। पहली ही पंक्ति में कहा गया है कि सबसे ज्यादा बात साहित्यिक राजनीति की हुई। इसका मतलब है कि उस दौर में भी साहित्य में खूब राजनीति होती थी। जब राजनीति होगी तभी तो बातें होंगी। फिर वात्स्यायन के मुंबई (बंबई) आने का किस्सा भी शुरू हुआ था। कोई ऐसा किस्सा जरूर रहा होगा जिसको साहित्यिक जमावड़े में दोहराया जाता होगा। उस किस्से को इतनी बार दोहराया जा चुका था कि उस दिन उसे बीच में ही रोक दिया गया। अगर बार-बार दोहराया जाता होगा तो वो होगा भी दिलचस्प। मुंबई में दिल्ली के लेखकों के बारे में भी बातें होती रही थीं। जाहिर सी बात है कि जिस अंदाज में उस प्रसंग को लिखा गया है उससे इस बात का सहज अंदाजा लगाया जा सकता है कि या तो निंदा पुराण का पाठ हुआ होगा या फिर जमकर गॉसिप।

> **हिंदी लेखन की एकदम नई वाली पीढ़ी में एक खास किस्म की सकारात्मकता दिख रही है जो उन्हें लोकप्रिय भी बना रही है**

एक और चीज जो लेखकों के बीच देखने को मिलती थी वो थी ईर्ष्या। इसके बारे में तो सैकड़ों उदाहरण मौजूद हैं, लेकिन मोहन राकेश और राजेंद्र यादव का उदाहरण देना इस वजह से उचित लगता है कि ये दोनों काफी गहरे मित्र भी थे। हिंदी की नई कहानी त्रयी के दो मजबूत स्तंभ थे। तीसरे कमलेश्वर थे। मोहन राकेश को जब अगस्त 1959 में उनके नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' के लिए संगीत नाटक अकादमी की ओर से सर्वश्रेष्ठ नाटक का अवॉर्ड देने की घोषणा हुई तो मोहन राकेश ने लिखा, 'यादव का व्यवहार फिर कुछ अजीब सा लगा। न जाने क्यों मुझे छोटा बतलाकर उसे खुशी होती है।' मोहन राकेश साफ कह रहे हैं कि उनके पुरस्कार मिलने से राजेंद्र यादव को अच्छा नहीं लगा। बात सिर्फ यादव और राकेश की नहीं है। उपेंद्र नाथ अश्क और महादेवी के बीच का शीतयुद्ध जगजाहिर है। दिनकर ने भी अपनी डायरी में एक समकालीन कवि-सांसद के ईर्ष्या भाव को उजागर किया है। बावजूद इन सबके उस दौर में ज्यादातर रचनाकार अपने समकालीनों पर लिखते भी थे, उनकी अच्छी रचनाओं की तारीफ भी करते थे। राजेंद्र यादव, मोहन राकेश और कमलेश्वर के बीच चाहे जितनी ईर्ष्या रही हो, लेकिन वो तीनों एक दूसरे को काफी प्रमोट करते थे। एक दूसरे के बारे में गॉसिप भी करते थे, लेकिन सार्वजनिक मंचों पर एक दूसरे की तारीफ करते थे, लेख लिखकर एक दूसरे की रचनाओं को स्थापित करते थे।

साहित्यिक माहौल में पहले के मुकाबले थोड़ा अंतर आ गया है। ईर्ष्या अब भी है, निंदा-पुराण का पाठ अब भी होता है, लेकिन सार्वजनिक रूप से अपने समकालीनों की तारीफ करने की प्रवृत्ति का ह्रास हुआ है। आज ज्यादातर लेखक- लेखिकाओं में अपने समकालीनों को लेकर एक अजीब किस्म का भाव देखने को मिलता है जिसका फेसबुक पर बहुधा प्रकटीकरण भी होता है। गॉसिप में एक आवश्यक दुर्गुण चरित्र हनन का शामिल हो गया है जो चिंताजनक है। अगर हम इस पर गंभीरता से विचार करें तो इस तरह की प्रवृत्ति पिछले दस साल में ज्यादा बढ़ी है। एक-डेढ़ दशक पहले लेखन की दुनिया में आए रचनाकारों के साथ तकनीक की घुसपैठ भी साहित्य में बढ़ी। फेसबुक साहित्यकारों के बीच लोकप्रिय हुआ। वैसे लेखक जो फेसबुक को एक बुराई के तौर पर देखते थे, अब दिन भर वहीं पाए जाने लगे। फेसबुक ने कई लेखकों को अहंकारी बना दिया। उनकी रचनाओं पर सौ पचास लाइक्स और कमेंट आने से वो खुद को प्रेमचंद या मन्नू भंडारी समझने लगे। बढ़ते अहंकार ने उनकी रचनात्मकता को प्रभावित किया। कुछ वाकए तो ऐसे भी सामने आए जिनमें लेखकों या लेखिकाओं ने अपने समकालीन लेखक या लेखिका के चरित्र पर प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से कीचड़ उछाला। फेक आइडी के आधार पर एक दूसरे को कठघरे में खड़ा करने की कोशिश की गई। फेसबुक ने निंदा-पुराण और गॉसिप के तंत्र को विकसित होने के लिए एक ऐसा मंच दिया जो बेहद उर्वर साबित हुआ। यहां मोहल्ले के छुटभैये दादाओं की तरह साहित्यिक गिरोह बने, उनके सरगना बने और फिर अपने साथियों को निबटाने का खेल खेला गया। अब भी खेला जा रहा है, यह स्थिति साहित्य सृजन के लिए बेहतर नहीं कही जा सकती है। फेसबुक की व्यापक पहुंच की वजह से इस तरह के गिरोहों का आतंक भी बढ़ा।

अब अगर हम एकदम नई पीढ़ी की बात करें तो उसमें एक खास किस्म की सकारात्मकता दिखाई देती है। सत्य व्यास, दिव्य प्रकाश दूबे, अंकिता, विजयश्री तनवीर की नई वाली हिंदी की टोली से लेकर खुद को गंभीर लेखन की परंपरा के मानने वाले प्रवीण कुमार, उमाशंकर चौधरी जैसे लेखकों के सार्वजनिक व्यवहार से साहित्य में सकारात्मकता का एहसास होता है। ये सभी लोग फेसबुक पर सक्रिय हैं, लेकिन एक दूसरे की रचनाओं पर खुश होकर टिप्पणियां करते हैं, चर्चा करते हैं। नई वाली हिंदी की जो टोली सोशल मीडिया पर है वो आपस में खूब चुहलबाजी करती है, मजाक मजाक में ही अपनी और अपनी पीढ़ी के अन्य लेखकों की कृतियों का प्रमोशन भी करती है। इस टोली के किसी सदस्य को कभी नकारात्मक टिप्पणी करते हुए नहीं देखा गया है। यही इस पीढ़ी की ताकत है और इनको अपनी पूर्ववर्ती पीढ़ी से अलग भी करती है। इसी से उनकी व्यापक स्वीकार्यता भी है, ऐसा प्रतीत होता है। इनका एक अपना पाठक वर्ग बना है जो इनके नाम से पुस्तकें खरीदता है। पाठकों को इन लेखकों की साहित्येतर टिप्पणियों में जो सृजनात्मकता देखने को मिलती है उसके आधार पर ही वो इनकी कृतियों तक जाने का मन बनाते हैं। नई वाली हिंदी की इस पीढ़ी के ठीक पहले वाली पीढ़ी के कई लेखकों ने नकारात्मकता को अपनी पहचान बनाई। उसकी वजह से पूरी पीढ़ी को नुकसान हुआ। फेसबुक पर हमेशा नकारात्मक बातें, सिद्धांत और विचारधारा की आड़ में गाली-गलौच उनकी पहचान बन गई। उनके व्यक्तित्व के साथ वो नकारात्मक पहचान चिपक गई। अब इस बात पर विचार किया जाना चाहिए कि उदारीकरण के स्थायित्व प्राप्त कर लेने के बाद साहित्य में इस तरह की नकारात्मकता क्यों बढ़ी और फिर उसके बाद की जो पीढ़ी आई उसने खुद को सकारात्मकता के सांचे में डालकर पाठकों के बीच लोकप्रियता हासिल की। हिंदी साहित्य के अध्येताओं के लिए इसके कारणों की तलाश करनी चाहिए। क्या पता कुछ दिलचस्प निष्कर्ष निकल आए।

फिर से

बच्चों की परवरिश और पिता

अलका आर्य

जून माह के तीसरे रविवार को विश्व पिता दिवस के रूप में समर्पित किया जाता है। इस संदर्भ में महाराष्ट्र के युवा किसान सचिन चौधरी अपने अनुभव यूं साझा करते हैं- 'खेती मेरा पेशा है और इसे प्राथमिकता भी देता हूं, लेकिन इसके साथ-साथ मुझे यह भी याद रहता है कि मैं एक बच्चे का पिता भी हूं और उसे पूरा समय देना भी मेरा दायित्व है।' यवतमाल जिले के वेणी गांव के सचिन अपने 22 महीने के बच्चे कृष्ण के साथ खेलते हैं, खेल-खेल में उसे बहुत सी ऐसी गतिविधियां सिखाते हैं जो बच्चे के दिमाग के विकास में सहायक होती हैं।

अब बात करते हैं वित्तीय सेवाएं देने वाली अमेरिकी कंपनी जेपी मोर्गेन चेज के डेरेक रोर्टोडो की। डेरेक 2017 में जब दूसरी बार पिता बने तो उन्होंने नवजात की देखभाल में पत्नी का पूरा साथ देने के लिए कंपनी में 16 हफ्तों की पैड पैरेंल लीव के लिए आवेदन किया। लेकिन कंपनी ने यह कहकर मना कर दिया कि इतनी लंबी छुट्टी सिर्फ मां को ही दी जा सकती है, क्योंकि मां ही बच्चे की प्राथमिक देखभाल करती है। डेरेक ने भेदभाव वाली नीति को लेकर समान रोजगार अवसर आयोग में कंपनी पर केस कर दिया। कंपनी के कई पुरुष भी डेरेक के साथ आ गए। अब कंपनी दो साल बाद केस करने वालों को 50 लाख डॉलर का हर्जाना देगी। जेपी मोर्गेन कंपनी ने यह भी कहा है कि वह पैरेंटल लीव के लिए अब लिंग निरपेक्ष नीतियां बनाएंगी। बच्चे के पालन- पोषण, परवरिश में पिता की भूमिका को पहचानने वाली सोच की ओर बढ़ते कंपनी के यह कदम एक बहुत बड़े बदलाव का संकेत हैं।

बेशक भारत के सचिन और अमेरिका के डेरेक एक दूसरे को नहीं जानते, लेकिन दोनों का कंसर्न (चिंता) एक जैसा है- बच्चे के पालन-पोषण में पिता का उल्लेखनीय योगदान। दुनियाभर में बच्चे की जिंदगी की शुरूआत बेहतर हो, उसका शारीरिक और दिमागी विकास उसकी आयु के अनुसार हो, अभिभावक बच्चों के संरक्षण, पौष्टिक आहार समेत उसकी प्रारंभिक शिक्षा पर ध्यान दें, इस मंशा के साथ दुनिया में जून माह को पालन-पोषण, परवरिश माह के रूप में भी मनाया जा रहा है। महात्मा गांधी के सेवा ग्राम वर्धा में स्थित महात्मा गांधी इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज यूनिसेफ के अर्ली चाइल्डहुड डेवलपमेंट प्रोजेक्ट में पार्टनर है और इस प्रोजेक्ट से संबद्ध डॉ. सुबोध गुप्ता का मानना है कि अभिभावक बच्चे की परवरिश में अमिट छाप छोड़ सकते हैं। उन्हें बस इतना बताने भर की जरूरत है कि यह कैसे करना है।

यूनिसेफ महाराष्ट्र के चार जिलों- यवतमाल, पुणे, औरंगाबाद व पालघर में अर्ली चाइल्डहुड डेवलपमेंट प्रोजेक्ट चला रहा है। पालघर जिले के ब्लॉक मनोर-2 के सावरा पडवल पाडा गांव में आदिवासी

समुदाय के लोग रहते हैं। आंगनवाड़ी सेविका वैशाली का कहना है कि आंगनवाड़ी में पालक सभा पर मुख्य जोर इस बात पर रहता है कि कैसे अभिभावक, पालक, देखभाल करने वाले बच्चों को घर में ऐसा माहौल प्रदान करें जिससे बच्चे का विकास उचित समय पर हो। विश्व विख्यात बाल विशेषज्ञों का मानना है कि अर्ली चाइल्डहुड डेवलपमेंट पर फोकस करने का मतलब भविष्य में निवेश करना है। बच्चे की जिंदगी के शुरूआती कुछ सालों में उसका दिमाग जिस गति से विकसित होता है, उतनी गति से फिर कभी नहीं। इसमें हस्तक्षेप करने वाली नीतियों का मतलब बच्चों में नाटापन को रोकना है। गौरतलब है कि भारत में नाटापन को कम करना एक बड़ी चुनौती बनी हुई है। विश्व के एक तिहाई नाटे बच्चे भारत में ही हैं। हालांकि भारत सरकार इस मुद्दे को लेकर गंभीर है और बच्चों का शारीरिक और मानसिक विकास उनकी उम्र के अनुकूल सटीक रूप से हो, इस ओर प्रयासरत है।

(लेखिका स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं)

ट्वीट-ट्वीट

डॉलर के मुकाबले पाकिस्तानी रुपया 156 पर है। बीते एक माह में 10.3 फीसद की, छह माह में 12.7 फीसद की और एक साल में 35.2 फीसद की गिरावट हुई है।
गौतम चिकरमाने@gchikermane

एक अस्थिर चित, आत्ममुग्ध एवं असुरक्षाग्रस्त शासक कैसे अपनी निजी हनक और जल्दबाजी भरी महत्वाकांक्षाओं के कारण पूरे प्रदेश को अव्यवस्थित कर देता है, बंगाल इसका ज्वलंत उदाहरण है! हड़ताली डॉक्टर्स से अनुरोध है कि भीषण गर्मी में कष्ट पा रहे मरीजों के हित में काम पर लौटें।
डॉ. कुमार विश्वास@DrKumarVishwas

एम्स के डॉक्टरों से हाथ जोड़ कर निवेदन है कि हड़ताल पर ना जाएं। गंभीर रोगों से पीड़ित और अक्सर सब जगह से निराश हो चुके लोग दूरदराज के इलाकों से एम्स पहुंचते हैं। बड़े इंतजार के बाद बारी आती है। इस भयंकर गर्मी में उन्हें निराश ना करें। देश आपके साथ है, पर इस बारे में भी सोचिए।
दिव्य कुमार सोती@DivyaSoti

जिस कांग्रेस ने 'देशद्रोह कानून' हटाने का वादा किया था, उसी की छत्तीसगढ़ सरकार ने एक शख्स को 'देशद्रोह' की धारा लगा कर गिरफ्तार किया...!! आरोप सिर्फ बिजली कटौती की झूठी खबर फैलाने का है। मानक गुप्ता@manakgupta

पहले गोरखपुर में एनसेफलाइटिस और अब बिहार में चमकी बुखार। बच्चे मर रहे हैं। इन बीमारियों पर सर्जिकल स्ट्राइक कब होगा? रोहित सरदाना@sardanarohit

रचनाकर्म

क्रिकेट की काली दुनिया का सच

ब्रजबिहारी

इन दिनों इंग्लैंड और वेल्स में चल रहे 12वें विश्वकप क्रिकेट टूर्नामेंट में आज भारत और पाकिस्तान के बीच मैच है, जिसे हर चार साल बाद होने वाले इस आयोजन का सबसे बड़ा मुकाबला माना जा रहा है। भारतीय टीम हर लिहाज से पाकिस्तान से ज्यादा मजबूत नजर आ रही है। लेकिन ऐसे में अगर आज पाकिस्तान उसे हरा देता है तो भारत के ज्यादातर क्रिकेट प्रशंसक यही कहेंगे कि मैच फिक्स था। आखिर ऐसा कहने की नौबत क्यों आती है? देखा जाए तो लगभग 20 साल बीतने के बावजूद क्रिकेट की दुनिया पर मैच फिक्सिंग का साया दूर नहीं हुआ है। कई क्रिकेट प्रशंसकों ने तो इसी वजह से मैच देखने भी बंद कर दिए हैं, क्योंकि अपने हीरो को चंद पैसों के लिए बिकते देखना उनके लिए कठिन होता है। इस शानदार खेल की इस हालत के लिए सट्टेबाजी की दुनिया पर राज करने वाले बुकी, पंटर, खिलाड़ी, अंपायर से लेकर पुलिस, प्रशासनिक अधिकारी व राजनेता तक जिम्मेदार हैं। हालांकि कुछ खिलाड़ियों और अन्य आरोपियों पर कार्रवाई होती रही है, लेकिन आज तक मैच फिक्सिंग की जिम्मेदार किसी ताकतवर शख्सियत तक कानून के हाथ नहीं पहुंच पाए हैं। आखिर क्या वजह है कि मैच फिक्सिंग बार-बार अपना सिर उठाती रहती है? क्या क्रिकेट में सट्टेबाजी को वैध कर देना ही आखिरी उपाय है? आखिर इतना ज्यादा पैसा कमाने वाले खिलाड़ी आखिर क्यों मामूली लाभ के लिए इस जाल में फंस जाते हैं? वरिष्ठ पत्रकार चंद्रमोहन पुप्पाला ने अपनी पुस्तक 'नो बॉलः द मर्की वर्ल्ड ऑफ मैच फिक्सिंग' में ऐसे ही सवालों के जवाब ढूंढ़ने की कोशिश की है। हालांकि सट्टेबाजी का खेल उतना ही पुराना है जितना क्रिकेट का इतिहास, लेकिन पहली बार वर्ष 2000 में दक्षिण अफ्रीका के मशहूर खिलाड़ी और तत्कालीन कप्तान हैंसी क्रोनिए का मामला सामने आने के बाद आम लोगों को यह पता चला कि मैच फिक्सिंग भी कोई चीज है। यह एक ऐसी दुनिया है जिसमें खिलाड़ी पैसों की एवज में मैच हारने के लिए खुद और साथियों को खराब खेलने के लिए मनाता है। ऐसे में बुकीज व सट्टेबाजों को थोड़े से पैसों के बदले अथाह रकम कमाने का मौका मिलता है।

चंद्रमोहन पुप्पाला ने सट्टेबाजी की इस दुनिया पर गहराई से शोध करने के बाद पुस्तक लिखी है। उनकी लेखन शैली सरल और प्रवाहमयी है। पुस्तक पढ़ने के बाद अगर किसी पाठक को यह लगे कि अब क्रिकेट जैसे खेल को देखने पर समय जाया करना बेकार है, तो इसका पूरा श्रेय लेखक को जाता है, जिन्होंने यह साबित करने में कामयाबी पाई है कि मैच फिक्सिंग और स्पॉट फिक्सिंग का अंधेरा दूर करने के लिए कोई कोशिश नहीं हो रही है। आखिर क्रिकेट प्रशंसक कैसे भूल सकते हैं कि जिस मोहम्मद अजहरुद्दीन पर मैच फिक्सिंग के कारण आजीवन प्रतिबंध का दाग लगा, वही बाद में जनप्रतिनिधि बनकर लोकसभा में पहुंच गए। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड ने उन्हें सम्मानित करने का भी फैसला कर लिया। सिर्फ अजहर ही क्यों, मैच फिक्सिंग में कई बड़े-बड़े खिलाड़ियों के नाम सामने आए, लेकिन आश्चर्यजनक ढंग से उनके खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं हुई। इस पुस्तक में दिल्ली पुलिस के पूर्व पुलिस प्रमुख नीरज कुमार के हवाले से बताया गया है कि कुछ संदिग्ध लोगों के खिलाफ जांच नहीं करने के लिए ऊपर से दबाव था। यह ऊपर का दबाव क्या होता है, हम सभी जानते हैं।

अब तो मैच फिक्सिंग ने स्पॉट फिक्सिंग का रूप धारण कर लिया है और इंडियन प्रीमियर लीग (आइपीएल) तक को अपने शिकंजे में ले लिया है। जाहिर है, क्रिकेट जैसे रोमांचक खेल पर फिक्सिंग का दाग लगाने वाले असली खिलाड़ियों तक कानून की आंच जब तक नहीं पहुंचेगी, तब तक छोटे-मोटे दोषियों को सजा देने से कोई फायदा नहीं होने वाला है। लेखक का मानना है कि क्रिकेट को इस बुराई से बचाने का एक ही उपाय है कि इसमें सट्टेबाजी को कानूनी मान्यता दे दी जाए। कई लोगों को इस पर आपत्ति हो सकती है, पर पुस्तक पढ़ने के बाद ऐसे लोगों का भी मन बदल सकता है।

> **मैच फिक्सिंग क्यों बार-बार अपना सिर उठाती रहती है? अपार दौलत कमाने वाले खिलाड़ी क्यों मामूली रकम के लिए इसमें फंस जाते हैं? क्या क्रिकेट में सट्टेबाजी को वैध कर देना ही आखिरी उपाय है? यह किताब ऐसे ही सवालों के जवाब तलाशने की कोशिश करती है...**

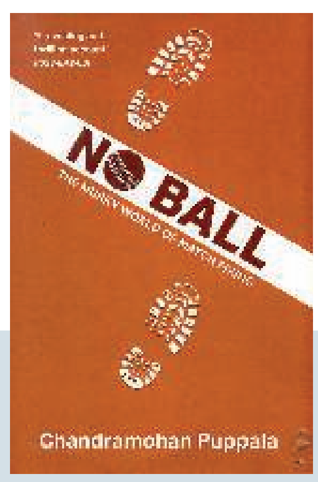

पुस्तक : नो बॉल : द मर्की वर्ल्ड ऑफ मैच फिक्सिंग
लेखक : चंद्रमोहन पुप्पाला
प्रकाशक : पैन मैकमिलन इंडिया, दिल्ली
मूल्य : 399 रुपये

औरंगजेब के जीवन की पड़ताल

अजय कुमार राय

मुगल बादशाह औरंगजेब तीन सौ वर्षों से विवादों के घेरे में है। उसकी छवि हिंदू विरोधी, उन्मादी, मूर्ति भंजक, भाइयों के हत्यारे, पिता को जेल में डालने वाले क्रूर शासक की बनी हुई है। पत्रकार अफसर अहमद ने अपने नई पुस्तक 'औरंगजेब- बचपन से सत्ता संघर्ष तक : नायक या खलनायक' में इस बादशाह के जीवन और मुगल सल्तनत के उस दौर के सभी पहलुओं की परत-दर-परत पड़ताल की है और उसकी प्रचलित छवि से इतर धारणा स्थापित करने का प्रयास किया है।

लेखक ने इस किताब को छह खंडों में विभाजित किया है, जिसका यह पहला भाग है। इसकी भाषा आसान और प्रवाहमयी है। बारह अध्यायों में लिखी गई यह पुस्तक औरंगजेब के बचपन से लेकर सत्ता-संघर्ष तक की घटनाओं का एक दस्तावेज है। औरंगजेब का जन्म गुजरात के दाहोद में 24 अक्टूबर, 1618 को हुआ था। शाहजहां और मुमताज महल की वह छठी संतान था। उसका शासन वर्ष 1658 से लेकर उनकी मृत्यु वर्ष 1707 तक चला। जब औरंगजेब की मृत्यु हुई, तब तक मुगलिया सल्तनत भौगोलिक और आर्थिक आधार पर दुनिया की सबसे बड़ी राज्य व्यवस्था के रूप में स्थापित हो चुकी थी।

यह पुस्तक बताती है कि औरंगजेब ने अपने भाइयों का कत्ल जरूर किया, मगर तब, जब बाकी तीनों भाई उसके खून के प्यासे हो चुके थे। लेखक का मानना है कि वह संस्कृत भाषा से लगाव रखता था और उसे अपने पिता शाहजहां को कैद करने का अफसोस भी था। इस प्रकार से अफसर अहमद ने औरंगजेब के बारे मेमं कई ऐसे तथ्य पेश किए हैं, जिससे औरंगजेब के बारे में जो नजरिया है, उससे इतर चीजों को समझने में मदद मिलती है।

लेखक ने औरंगजेब द्वारा अपने पिता, बहन, भाइयों और बेटे को लिखे गए पत्रों और उस वक्त के तथा उसके कुछ समय बाद के लेखकों, इतिहासकारों की मूल कृतियों को भी इस पुस्तक का आधार बनाया है। इसमें पाठकों को कुछ नए संदर्भ मिल सकते हैं। कुल मिलाकर यह पुस्तक छात्रों और शोधार्थियों के लिए बेहद उपयोगी साबित हो सकती है।

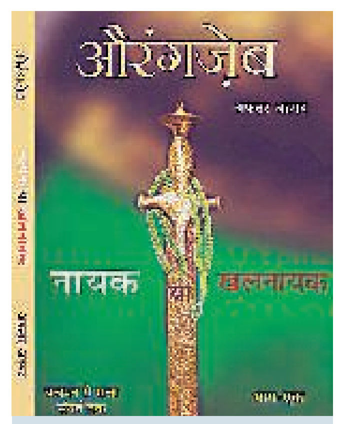

पुस्तक : औरंगजेब- बचपन से सत्ता संघर्ष तक : नायक या खलनायक
लेखक : अफसर अहमद
प्रकाशक : इवोको पब्लिकेशंस
मूल्य : 250 रुपये

जागरण जनमत

कल का परिणाम

कोलकाता में मारपीट की घटना के विरोध में डॉक्टरों का हड़ताल पर जाना सही है?

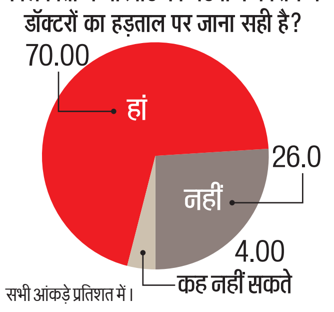

सभी आंकड़े प्रतिशत में।

आज का सवाल

क्या आप ई. श्रीधरन के इस कथन से सहमत हैं कि दिल्ली मेट्रो में सियासी दखल घातक होगा?

अपनी राय और अधिक लोगों तक पहुंचाने के लिए अपने मोबाइल के मैसेज बॉक्स में जाकर **POLL** लिखें, स्पेस देकर **Y**, **N** या **C** लिखकर 57272 पर भेजें
Y –हां, **N**–नहीं, **C**–कह नहीं सकते

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है।

जनपथ

झटके पर झटका लगे किंतु न संभले पाक,
दुनिया भर के सामने कटवाए वह नाक।
कटवाए वह नाक शर्म तब भी ना आए,
ताक रहे इमरान सभी को बस मुंह बाए।
रहो अकेले आप न कोई बाजू फटके,
विश्वमंच पर खाव मियां झटके पर झटके।
– ओमप्रकाश तिवारी

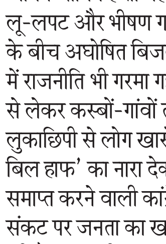

आशीष व्यास
संपादक, नई दुनिया, मध्य प्रदेश

aasheesh.vyas @naidunia.com

मध्य प्रदेश डायरी

बिजली संकट ने लगाया राजनीतिक करंट!

बिजली को लेकर यदि देश भर में कहीं सबसे ज्यादा घमासान मचा है तो वह है मध्य प्रदेश। धरना-प्रदर्शन, विवाद-बयान, आरोप-प्रत्यारोप की खबरें कहीं से आ रही हैं तो वह है मध्य प्रदेश। भारतीय जनता पार्टी और कांग्रेस यदि किसी एक मुद्दे पर खुलकर आमने-सामने हैं तो वह है मध्य प्रदेश। लू-लपट और भीषण गर्मी के बाद बूंदाबांदी के बीच अघोषित बिजली कटौती से इस राज्य में राजनीति भी गरमा गई है। जिला मुख्यालयों से लेकर कस्बों-गांवों तक बिजली की लुकाछिपी से लोग खासे परेशान हैं। 'बिजली बिल हाफ' का नारा देकर राजनीतिक वनवास समाप्त करने वाली कांग्रेस सरकार बिजली संकट पर जनता का खासा आक्रोश भी झेल रही है। राज्य की राजधानी भोपाल के पॉश इलाके से शुरू होने वाला असंतोष इंदौर, जबलपुर, ग्वालियर, उज्जैन, सागर जैसे संभागीय मुख्यालयों तक में साफ तौर पर महसूस किया जा रहा है।

विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष गोपाल भार्गव का मानना है, 'यह कुशासन है, क्योंकि कांग्रेस ने चुनाव में वचन दिया था कि सरकार बनने पर बिजली बिल आधा करेंगे, लेकिन अब तो बिजली ही आधी हो गई!' ऊर्जा मंत्री प्रियव्रत सिंह का दावा है कि 'अघोषित कटौती जैसी कोई बात ही नहीं है। प्रदेश में 14 हजार मेगावॉट बिजली पैदा हो रही है, जबकि मांग इससे कम है।' लेकिन फिर मंत्रीजी बंद कमरे में अधिकारियों को यह कहते भी सुनाई देते हैं- 'आप लोग हालात को संभाल नहीं पा रहे हैं, लोग फोन करके मेरी हालत खराब करते हैं!'

पुरानी है रियायत की सियासत : बिजली से जुड़े राजनीतिक संदर्भों को ध्यान से पढ़ा-समझा जाए तो पता चलता है कि बिजली पर राजनीति की शुरुआत देश भर में सबसे पहले मध्य प्रदेश से ही हुई है। यहां बिजली बोर्ड में सरकारी दखल बढ़ा, चुनाव जीतने के लिए मुफ्त बिजली का मंत्र देकर सत्तारूढ़ होने का मंत्र भी राज्य सरकारों को यहीं से मिला। बिजली देने का वादा पूरा न होने पर सत्ता से बाहर कर देने का रास्ता भी इसी राज्य ने दिखाया है। दसअसल 1980 के दशक तक मध्य प्रदेश सहित पूरे देश की लगभग सभी बिजली कंपनियां (बिजली बोर्ड) मुनाफे में थीं। जितनी बिजली थी, उसके अनुसार सप्लाई भी निर्बाध थी। वर्ष 1985 में पहली बार मध्य प्रदेश से ही बिजली बोर्ड में सरकारी दखल बढ़ा। तत्कालीन अर्जुन सिंह सरकार अनुसूचित जाति- जनजाति वर्ग को 'मुफ्त बिजली' देने का वादा कर सत्ता में दोबारा आ गई। मध्य प्रदेश की पावर- पॉलिटिक्स को देखकर अन्य राज्यों में भी बिजली को चुनावी हथकंडे के रूप में देखा जाने लगा। वर्ष 1998 से 2003 के बीच बिजली उत्पादन को बढ़ाए बगैर ही तत्कालीन मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह ने किसानों को मुफ्त बिजली देने का वादा कर दिया। परिणामस्वरूप मांग में बढ़ोतरी और आपूर्ति कम होने के चलते प्रदेश को भीषण बिजली कटौती का सामना करना पड़ा। कांग्रेस की सरकार सत्ता में वापसी नहीं कर पाई। बाद में बिजली आपूर्ति तो बढ़ी, लेकिन मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के 200 रुपये में बिजली के वादे ने रही सही कसर पूरी कर दी।

घायल-आक्रोश से बंगाल विरोध! लोकसभा चुनाव में पश्चिम बंगाल में 18 सीटें जीतने से उत्साहित पश्चिम बंगाल के भाजपा के प्रभारी कैलाश विजयवर्गीय के इंदौरी समर्थकों ने उनके भव्य स्वागत की योजना बना ली। मौका भुनाते हुए विजयवर्गीय ने भी स्वागत कार्यक्रम को किसान आक्रोश रैली में बदल दिया। रैली में किसानों का 'आक्रोश' हो न हो, बंगाल सरकार के खिलाफ इतना आक्रोश था कि कार्यकर्ताओं ने चीते पर बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी का चेहरा लगाकर, विजयवर्गीय को उनकी गर्दन दबोचते हुए एक पोस्टर लगा दिया! बवाल आगे बढ़ने से पहले पुलिस हरकत में आई और पोस्टर पर आपत्ति जताते हुए उसे ढंकवा दिया। अब सामने था स्वागत मंच। वैसे तो अभी तक मंच पर चढ़कर धक्कामुक्की और गिर पड़ने का रिवाज कांग्रेस में ही रहा है, लेकिन इस बार भाजपाइयों ने भी नई परंपरा शुरू की। 40 लोगों की क्षमता वाले मंच पर 100 लोग चढ़ गए। स्वागत भाषण चल ही रहा था कि मंच टूट गया और मंच पर बैठे सांसद, दो विधायक सहित आठ लोग गिर पड़े! एक विधायक के हाथ में फ्रैक्चर हो गया तो कुछ अन्य के पैर में चोट आ गई! बंगाल की बुनियाद हिलाने के उत्साह में घायल हुआ आक्रोश फिलहाल चर्चा का विषय बना हुआ है।

बाबाजी लौट आए : लोकसभा चुनाव परिणामों के बाद से लापता बाबा वैराग्यनंद अब लौट आए हैं! आते ही बाबाजी ने समाधि की अनुमति भी मांग ली है! वैराग्यनंद ने भोपाल कलेक्टर को सूचना दी कि वे 16 जून को दोपहर 2 बजकर 11 मिनट पर जल समाधि लेने वाले हैं। भोपाल लोकसभा सीट से कांग्रेस के उम्मीदवार रहे दिग्विजय सिंह के समर्थन में मिर्ची यज्ञ करवाकर बाबा चर्चा में आए थे। लेकिन ज्यादा चर्चा तब हुई थी, जब दिग्विजय सिंह के चुनाव नहीं जीत पाने पर उन्होंने जल समाधि लेने की घोषणा कर दी थी! उल्लेखनीय है कि दिग्विजय की हार के बाद कुछ लोगों ने बाबा को फोन कर समाधि लेने की याद दिलाई थी। इसके बाद एक ऑडियो भी वायरल हुआ था, जिसमें बाबा एक युवक को फटकार लगा रहे थे। कुछ लोगों ने बाबा को ढूंढकर लाने वाले को ईनाम देने की घोषणा भी कर दी थी। उम्मीद थी कि लापता बाबा भोपाल नहीं लौटेंगे, लेकिन बाबा ने समाधि की अनुमति मांगकर राजधानी की राजनीतिक सरगर्मियों को नई तेजी दे दी है।

देश का पहला चाइल्ड फ्रेंडली कोर्ट : सुप्रीम कोर्ट के आदेश पर बीते मंगलवार को उज्जैन में देश का पहला चाइल्ड फ्रेंडली कोर्ट खुल गया। दीवारों पर रंग-बिरंगे चित्र, झूले-खिलौनों के बीच बच्चे भयमुक्त माहौल में बयान दे पाएंगे। इतना सबकुछ बच्चों के लिए। लेकिन इस पर खुश हुआ जाए या दुखी? इस सवाल का जवाब इस सच्चाई में छिपा हुआ है कि मध्य प्रदेश में बच्चों के उत्पीड़न के मामले देश भर में सबसे ज्यादा हैं। हाल ही में उज्जैन में ही एक मासूम को दुष्कर्म के बाद शिप्रा नदी में फेंक दिया गया था। वहीं, राजधानी में भी लगातार घटनाएं बढ़ रही हैं। संवेदनशील समाज की सोच अब यह है कि धर्म-ध्यान की धरती उज्जैन में चाइल्ड फ्रेंडली कोर्ट बनाने के बजाय यदि सभी मिलकर यह सोच पाते कि आखिर बच्चों को कोर्ट आना ही क्यों पड़े, तो शायद ज्यादा बेहतर होता?

जेपी इन्फ्रा के कर्जदाता 20 जून को करेंगे बैठक

नई दिल्ली, प्रेट्र : जेपी इन्फ्राटेक के कर्जदाता 20 जून को बैठक कर भविष्य के कदमों पर चर्चा करेंगे। इन कर्जदाताओं में बैंक और घर खरीदार शामिल हैं। कंपनी के अंतरिम समाधानकर्ता (आइआरपी) अनुज जैन ने शेयर बाजारों को दी जानकारी में कहा कि 20 जून को कर्जदाताओं की बैठक प्रस्तावित है। सूत्रों के मुताबिक एक बड़े कर्जदाता बैंक ने कंपनी के अधिग्रहण के लिए एनबीसीसी की बोली के खिलाफ वोटिंग की।

भारत वर्ष 2030 तक ऊर्जा जरूरतों में 40 फीसद नवीन ऊर्जा के उपयोग का लक्ष्य हासिल कर लेगा।
— आरके सिंह, ऊर्जा मंत्री

न्यूज गैलरी

आरबीआइ ने दिया एटीएम को दीवार से चिपकाने का निर्देश

मुंबई : भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआइ) ने बैंकों से कहा कि वे एयरपोर्ट जैसे अत्यधिक सुरक्षा वाले स्थानों में स्थापित एटीएम को छोड़कर बाकी जगह स्थापित अपने एटीएम को सितंबर अंत तक दीवार, पिलर या फर्श के साथ पूरी तरह से चिपका दें। आरबीआइ ने यह निर्देश एटीएम की सुरक्षा बढ़ाने के मकसद से दिया। आरबीआइ ने 2016 में कमेटी ऑन करेंसी मूवमेंट गठित की थी। इस समिति की सिफारिशों के आधार पर आरबीआइ ने निर्देश जारी किए हैं। इसके साथ ही एटीएम में पैसे डालने के लिए डिजिटल वन टाइम कंबिनेशन (ओटीसी) लॉक का इस्तेमाल किए जाने का भी निर्देश दिया गया। (प्रेट्र)

इफको का शुद्ध लाभ 10 फीसद घटा

नई दिल्ली : उर्वरक सहकारिता इफको ने कहा कि पिछले वित्त वर्ष में आय बढ़ने के बावजूद उसका शुद्ध लाभ 10 फीसद घटकर 841.58 करोड़ रुपये रहा। वित्त वर्ष 2017-18 में उसका शुद्ध लाभ 937.17 करोड़ रुपये था। आलोच्य अवधि में सहकारिता कंपनी का राजस्व 34 फीसद बढ़कर 27,851.74 करोड़ रुपये रहा। (प्रेट्र)

मलेशिया के पाम ऑयल पर शुल्क बढ़ाने की मांग

नई दिल्ली : मलेशियाई पाम ऑयल की भारतीय बाजार में अत्यधिक उपलब्धता पर चिंता जताते हुए खाद्य तेल व्यापारियों के संगठन एसईए ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मांग की कि मलेशिया से खरीदे जाने वाले पाम ऑयल पर आयात शुल्क बढ़ाया जाए। संगठन के मुताबिक इससे भारतीय किसानों के हितों की रक्षा होगी। (प्रेट्र)

शाओमी की सप्लायर होलीटेक ने भारत में लगाया पहला संयंत्र

नई दिल्ली : स्मार्टफोन निर्माता कंपनी शाओमी की ग्लोबल कंपोनेंट आपूर्तिकर्ता होलीटेक टेक्नोलॉजी ने भारत में अपना पहला उत्पादन संयंत्र उत्तर प्रदेश के ग्रेटर नोएडा में खोला है। होलीटेक इस संयंत्र में शाओमी के लिए कंपैक्ट कैमरा मॉड्यूल, कैपेसिटिव टच स्क्रीन मॉड्यूल, थिन फिल्म ट्रांजिस्टर, प्रिंटेड सर्किट और फिंगरप्रिंट मॉड्यूल का उत्पादन करेगी। इस संयंत्र के माध्यम से 6,000 लोगों को रोजगार मिलेगा। शाओमी ने कहा कि उसने होलीटेक को पिछले वर्ष पहली तिमाही में भारत में उत्पादन की संभावनाएं तलाशने के लिए आमंत्रण दिया था। होलीटेक यह संयंत्र आंध्र प्रदेश में लगाने वाली थी। (प्रेट्र)

गुजारिश ▸ संगठनों ने आयकर छूट की सीमा सालाना 10 लाख रुपये करने की रखी मांग

न्यूनतम मजदूरी 20 हजार, पेंशन छह हजार तय करे सरकार

बजट से आस

साल में कम से कम 200 दिन रोजगार भी सुनिश्चित करने का किया आग्रह

नई दिल्ली, प्रेट्र : विभिन्न कारोबारी संगठनों ने सरकार से कामगारों के लिए न्यूनतम 20,000 रुपये मासिक मजदूरी, न्यूनतम 6,000 मासिक पेंशन और साल में कम से कम 200 दिनों के अनिवार्य रोजगार की मांग की है। बजट-पूर्व सलाह के क्रम में शनिवार को कारोबारी संगठनों ने वित्त राज्यमंत्री अनुराग ठाकुर से मुलाकात की। इस दौरान उन्होंने आगामी बजट में आयकर छूट की सीमा भी बढ़ाने की मांग रखी। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण पांच जुलाई को चालू वित्त वर्ष के लिए बजट पेश करेंगी। शनिवार को सीतारमण नीति आयोग की बैठक में हिस्सा ले रही थीं, जिसके चलते संगठनों ने ठाकुर से मुलाकात की।

टैक्स छूट के तहत कारोबारी संगठनों ने वेतन और पेंशनभोगी वर्ग के लिए सालाना 10 लाख रुपये तक की आय को टैक्स से मुक्त रखने की मांग की है। वहीं, वरिष्ठ नागरिकों के लिए उन्होंने सालाना आठ लाख रुपये तक की आय के अलावा आवास, चिकित्सा और शिक्षा जैसे मदों पर किए गए खर्च को आयकर से मुक्त रखने का आग्रह किया है।

नई दिल्ली में शनिवार को वित्त मंत्रालय में डिजिटल इकोनॉमी और स्टार्ट-अप को लेकर बजट पूर्व बैठक में मौजूद वित्त राज्यमंत्री अनुराग ठाकुर। एएनआइ

बैठक में करीब दर्जनभर केंद्रीय कारोबारी संगठनों के शीर्ष प्रतिनिधियों ने शिरकत की। उन्होंने लाभ कमाने वाले केंद्रीय सार्वजनिक उपक्रमों की निजीकरण और विनिवेश कोशिशों पर भी बैठक के दौरान चिंता जताई। इसके साथ ही उन्होंने रोजगार सृजन के लिए निवेश बढ़ाने का भी आग्रह किया। ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस (एटक) की महासचिव अमरजीत कौर ने कहा कि वित्त मंत्री ने हमें बजट-पूर्व चर्चा के लिए आमंत्रित किया था। मंत्रालय ने हमसे चार महत्वपूर्ण पहलुओं श्रम सुरक्षा, कौशल विकास, रोजगार और मजदूरी पर राय जाननी चाही। वहीं, इंडियन नेशनल ट्रेड यूनियन कांग्रेस (इंटक) के प्रेसिडेंट जी संजीव रेड्डी ने कहा कि संगठन ने लाभ कमाने वाली सरकारी कंपनियों के निजीकरण और विनिवेश का विरोध किया है। इसकी फिलहाल कोई जरूरत नहीं है। इसके साथ ही संगठन ने 44 श्रम कानूनों को चार कोड के तहत समाहित करने के सरकार के फैसले का भी विरोध किया है।

एक बयान में वित्त मंत्रालय ने कहा कि कारोबारी संगठनों के प्रतिनिधियों और विशेषज्ञों ने कौशल विकास और ग्रामीण युवाओं की आकांक्षाओं में तारतम्यता की सलाह दी।

उद्योग संगठनों का फोकस डाटा सुरक्षा, टैक्स मसलों पर

नई दिल्ली : बजट-पूर्व चर्चा के क्रम में शनिवार को नैसकॉम, आइएएमएआइ और एमएआइटी जैसे उद्योग संगठनों ने वित्त राज्यमंत्री अनुराग ठाकुर से मुलाकात की। संगठनों ने डिजिटल इकोनॉमी को मजबूती देने और सेक्टर के टैक्स से जुड़े मसलों पर चर्चा की। एक बयान में कहा गया कि संगठनों ने अर्थव्यवस्था के आकलन, वित्त, जलवायु और इस तरह की अन्य घटनाओं की भविष्यवाणी में बिग डाटा टेक्नोलॉजी के इस्तेमाल की वकालत की। प्रतिनिधियों का कहना था कि बिग डाटा टेक्नोलॉजी के इस्तेमाल से एसएमई सेक्टर को गति देने के अलावा प्रशासन संबंधी गतिविधियों को भी मजबूती दी जा सकती है। बैठक में वित्त मंत्रालय, इलेक्ट्रॉनिक्स व आइटी मंत्रालय, टेलीकम्यूनिकेशंस विभाग और सीबीडीटी के वरिष्ठ अधिकारी भी मौजूद थे। डिजिटल अर्थव्यवस्था और स्टार्ट-अप सेक्टर के प्रतिनिधियों ने बिग डाटा, डाटा माइनिंगऔर भारतीय अर्थव्यवस्था के समक्ष चुनौतियों के अलावा सभी संबंधित पहलुओं पर चर्चा की।

निर्यात क्षेत्र में कर्ज उपलब्धता तुरंत बढ़ाने की मांग

सेक्टर के लिए टैक्स संरचना में भी बदलाव का फियो ने किया आग्रह। फाइल

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली।

निर्यात की धीमी रफ्तार पर चिंता जताते हुए फियो ने कहा है कि बदल रहे वैश्विक कारोबारी माहौल में गिरावट को रोकने के लिए सरकार को अविलंब प्रयास करने होंगे। निर्यात संगठनों के फेडरेशन का मानना है कि निर्यातकों के लिए कर्ज की पहुंच बढ़ाने और कर्ज की लागत को कम करने जैसे उपाय तुरंत करने की जरूरत है। सरकार अब से लेकर अगले माह संसद में पेश होने वाले बजट में इन उपायों को लागू कर निर्यात की धीमी रफ्तार को बढ़ा सकती है।

फियो के प्रेसिडेंट गणेश कुमार गुप्ता का कहना है कि निर्यातक लंबे समय से कर्ज उपलब्धता में कमी की समस्या का सामना कर रहे हैं। वैश्विक स्तर पर हो रहे बदलाव निर्यातकों की समस्या को और गंभीर बना रहे हैं। गुप्ता ने तेजी से बदल रहे हालात पर चिंता जताते हुए कहा, 'वैश्विक कारोबारी अनिश्चितता से न केवल देश में आने वाला निवेश प्रभावित होगा बल्कि मुद्रा दरों में उतार-चढ़ाव भी बढ़ेगा।'

फियो प्रेसिडेंट ने एक बयान में कहा कि कृषि उत्पादों के निर्यात पर इंटरेस्ट इक्विलाइजेशन यानी ब्याज दरों में बराबरी की मदद और विदेशी पर्यटकों को की जाने वाली बिक्री को निर्यात के दायरे में शामिल करने जैसे कदम भी निर्यातकों को राहत प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त गुप्ता की राय में निर्यात से संबंधित इन्फ्रास्ट्रक्चर और मार्केटिंग को बजटीय सहायता मिलना भी ऐसे मुद्दे हैं जिन पर सरकार को तत्काल प्रभाव से ध्यान देने की जरूरत है। इन मुद्दों पर सरकार आने वाले बजट में कोई निर्णय ले सकती है। गौरतलब है कि इस वर्ष मई में निर्यात की दर 3.93 फीसद रह गई है। निर्यात वाले कुल 30 उत्पादों में से 17 में इस महीने में गिरावट देखी गई है।

कल से बुरे फंसेंगे कालाधन, बेनामी संपत्ति वाले

नई दिल्ली, आइएएनएस : टैक्स चोरों और कालाधन व बेनामी संपत्ति रखने वालों का बुरा दिन सोमवार से शुरू हो रहा है। आयकर विभाग द्वारा जो संशोधित दिशानिर्देश सोमवार से लागू होना है, उसके तहत कालाधन और बेनामी संपत्ति के गंभीर अपराध को 'नॉन-कंपाउंडेबल' की श्रेणी में रख दिया गया है। इसका मतलब यह है कि कोई कंपनी या व्यक्ति अब टैक्स चोरी के मामले को महज टैक्स, जुर्माना और ब्याज भुगतान कर मामले से निजात नहीं पा सकता है। केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड (सीबीडीटी) ने सभी संबंधित प्राधिकारों को उन 13 तरह के मामलों की सूची सौंप दी है, जिनके तहत अपराध को सोमवार और उसके बाद से 'नॉन-कंपाउंडेबल' की श्रेणी में डाला गया है। इसके साथ ही बोर्ड ने अपराधों को दो कैटेगरी में भी बांट दिया है।

सीबीडीटी के मुताबिक 'ए' कैटेगरी में स्रोत पर कर की कटौती (टीडीएस) को प्रमुखता से रखा गया है। स्रोत पर कर संग्रह (टीसीएस) के भुगतान में विफल रहने के अपराध को भी बोर्ड ने इसी कैटेगरी में रखा है। 'बी' कैटेगरी में जान-बूझकर टैक्स चोरी करने का प्रयास,

सोमवार से लागू होगा संशोधन। प्रतीकात्मक

▸ **सोमवार से लागू होगा नया दिशानिर्देश, महज टैक्स भुगतान से नहीं मिलेगी मुक्ति**

अकाउंट्स व दस्तावेज पेश करने में विफल रहना और सत्यापन में फर्जी दस्तावेज पेश करने जैसे अपराध शामिल हैं। बोर्ड ने कहा है कि इनमें से ए कैटेगरी के अपराधों में तो टैक्स भुगतान, जुर्माना और ब्याज देकर छूटने का विकल्प संभव है। लेकिन बी कैटेगरी के अपराधों में अब यह संभव नहीं होगा। 'ए' कैटेगरी के अपराधों में भी तीन बार से ज्यादा दोषी पाए जाने पर उसे नॉन-कंपाउंडेबल की श्रेणी में डाल दिया जाएगा। खासतौर पर कालाधन कानून के तहत दोषी पए जाने वाले किसी भी मामले की कंपाउंडिंग नहीं होगी। सीबीडीटी का नया दिशानिर्देश वर्ष 2014 में जारी दिशानिर्देशों की जगह लेगा।

अमेरिकी उत्पादों पर शुल्क बढ़ाने की अधिसूचना जारी

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

वित्त मंत्रालय ने अमेरिका से आयातित 29 उत्पादों पर ड्यूटी बढ़ाने की अधिसूचना जारी दी है। बढ़ी हुई दरें रविवार से प्रभावी हो जाएंगी। वित्त मंत्रालय के राजस्व विभाग की तरफ से जारी अधिसूचना के मुताबिक अमेरिका से आयात होने वाले इन उत्पादों को तीन श्रेणी में बांटा गया है। आयात शुल्क में वृद्धि के बाद भारत को इनके आयात से 21.70 करोड़ डॉलर (1,500 करोड़ रुपये से ज्यादा) का अतिरिक्त राजस्व मिलने की उम्मीद है।

पिछले साल जब अमेरिका ने भारतीय स्टील और अल्यूमिनियम उत्पादों पर आयात शुल्क में वृद्धि की थी, तभी भारत ने जवाबी कार्रवाई में इन 29 उत्पादों पर ड्यूटी बढ़ाने की घोषणा की थी। उस वक्त भारत ने अमेरिका को तीन महीने में वक्त दिया था। लेकिन बाद में द्विपक्षीय बातचीत में यह मुद्दा लंबा खिंचने के बाद ड्यूटी बढ़ाने पर फैसला टलता रहा। अमेरिका ने इसी महीने की शुरुआत में भारत को जीएसपी रियायतों के दायरे से बाहर करने का फैसला लिया। उसके बाद भारत ने अमेरिकी उत्पादों पर शुल्क के फैसले को और नहीं टालने का निर्णय किया।

29 अमेरिकी उत्पादों पर बढ़ी ड्यूटी, रविवार से प्रभावी होंगी नई दरें

बस्तर में है लौह अयस्क का विशाल भंडार

जेएनएन, जगदलपुर : दुनिया के सबसे बड़े लौह अयस्क भंडार क्षेत्रों की शीर्ष-10 सूची में शामिल बैलाडीला में छत्तीसगढ़ का 70 फीसद लौह अयस्क का भंडार है। यह भंडार कुल 14 डिपॉजिट में है। प्रदेश के दूसरे बड़े भंडार क्षेत्र रावघाट को भी मिला लिया जाए तो यह आंकड़ा 80 फीसदी से अधिक पहुंच जाता है।

बस्तर संभाग के चार जिलों दंतेवाड़ा, कोंडागांव, कांकेर और नारायणपुर में कुल मिलाकर 215 करोड़ टन लौह अयस्क मौजूद है। दक्षिण बस्तर स्थित बैलाडीला में जहां केन्द्र सरकार की नवरत्न कंपनी एनएमडीसी का अभी तक एकाधिकार है वहीं उत्तर बस्तर के रावघाट में एक अन्य सरकारी कंपनी स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड (सेल) जल्द खनन के लिए अपनी औद्योगिक इकाई स्थापित करेगी।

भविष्य के लिए निवेश के वक्त बाजार की हालत नहीं, अपनी जरूरत देखिए

निवेश की गतिविधि के केंद्र में कौन होना चाहिए - निवेशक या खुद निवेश? जब मैं इंटरनेट पर या वैल्यू रिसर्च की वेबसाइट पर निवेशकों द्वारा पूछे गए सवालों की ओर देखता हूं तो मुझे लगता है कि यह किसी एक के बारे में नहीं, बल्कि दोनों का संगम है।

मैं ऐसे दो उदाहरण रखता हूं, जिससे आप समझ पाएंगे कि मेरे कहने का मतलब क्या है। एक निवेशक ने पूछा, 'शेयर बाजारों की फिलहाल जो हालत है, उसे देखते हुए क्या स्मॉलकैप या मिडकैप शेयरों में निवेश करना उचित रहेगा? अगर मैं निवेश करता भी हूं तो बाजार की परिस्थितियां कितने समय तक स्मॉलकैप या मिडकैप के अनुकूल रहने वाला है?' यह बेहद वाजिब सा लगने वाला सवाल है और निवेश से जुड़े मंचों और कार्यक्रमों में अमूमन इसी तरह के सवाल पूछे जाते हैं। अब इस सवाल के साथ दिक्कत क्या है, उसे एक दूसरे उदाहरण से समझिए। एक सवाल आया, 'मैं 40 वर्ष का हूं। पीएफ कटौती को छोड़कर मैंने सेवानिवृत्ति के लिए अभी तक निवेश शुरू नहीं किया है। जब मैं सेवानिवृत्त होऊंगा, तब मुझे मासिक 75,000 रुपये की जरूरत होगी।' हालांकि सवाल करने वाले ने अपनी कुछ व्यक्तिगत जानकारियां भी साझा कीं, जिसका जिक्र मैं अभी यहां नहीं कर रहा हूं।

इन दोनों उदाहरणों से आप समझ गए होंगे कि मैं असल में कहना क्या चाह रहा हूं। ये सवाल वैल्यू रिसर्च को ईमेल के माध्यम से भेजे गए, और कहने को महज दो सवाल हैं। लेकिन मैं समझता हूं कि ये दोनों सवाल बताते हैं कि मोटे तौर पर सामान्य निवेशकों के मन में निवेश के प्रति सोच और नजरिया क्या रहता है। जिसने पहला सवाल किया, उसे लगता है कि निवेश संबंधी कोई भी निर्णय बाहरी परिस्थितियों के हिसाब से ही लेना चाहिए। जिसने दूसरा सवाल किया, उसे लगता है कि बचत और निवेश का मुख्य मकसद व्यक्तिगत जिंदगी की वित्तीय समस्याओं का समाधान करना है।

सीधी सी बात है कि अगर आप बहुत अमीर नहीं हैं और आपके पास यूं ही कहीं भी लगा देने के लिए पैसे नहीं हैं, तो बेहतर है कि दूसरा सवाल करने वाले के नजरिये से सोचें। किसी भी निवेशक के लिए सबसे जरूरी यह है कि वह खुद के बारे में चिंतन करे। और उसे यह काम बदस्तूर करते रहना चाहिए। इसकी वजह यह है कि पहले पता होना चाहिए कि निवेश किसके लिए है और निवेशक इससे चाहता क्या है। जब तक यह नहीं पता हो, तब तक किसी भी निवेश को उचित नहीं माना जा सकता है।

धीरेंद्र कुमार, सीईओ वैल्यू रिसर्च

बोनस

निवेश से पहले कई निवेशक अक्सर पूछते हैं कि तात्कालिक माहौल में फलां स्टॉक या सेक्टर में निवेश करना कितना उचित है। यह सवाल वाजिब है। लेकिन कुछ निवेशक ऐसे भी होते हैं जो यह जानना चाहते हैं कि उनकी जरूरतों के हिसाब से किस स्टॉक या सेक्टर में निवेश किया जाए। धनकुबेर कहीं भी निवेश कर सकते हैं और किसी भी सेक्टर में थोड़ा-बहुत नफा-नुकसान से उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता। लेकिन जो धनकुबेर नहीं है, उसके लिए बेहतर यही है कि वह अपनी जरूरतों के हिसाब से निवेश करे।

गौर से देखें तो बहुत से म्यूचुअल फंड्स और स्टॉक्स बेहद अच्छे और काम के निकल सकते हैं। लेकिन हो सकता है कि वही स्टॉक्स खास तरह के निवेशकों की वित्तीय जरूरतें पूरी करने के लिए बिल्कुल उपयुक्त नहीं हों। ध्यान रखिए, मैं यह कह रहा हूं कि जब तक बचतकर्ता या निवेशक की जिंदगी के बारे में जानकारी नहीं हो, तब तक उसके लिए किसी भी निवेश को सही या गलत की कसौटी पर परखा नहीं जा सकता है। हालांकि गलत निवेश को हमेशा ही परखा जा सकता है। निवेश के ऐसे बहुत से प्रकार या उपकरण हैं, जो किसी के लिए भी और किसी भी परिस्थिति में उपयुक्त नहीं हैं। उनके बारे में मैं बाद में बताऊंगा।

निवेश या बचत के पहलू से खुद को जानने का पहला कदम यह है कि आप अपने वित्तीय लक्ष्यों का निर्धारण कर लें। यह अच्छा होगा कि आप यह तय करें कि उन लक्ष्यों की प्राप्ति में कितना वक्त लग सकता है। इसके साथ ही यह भी कि उस समय-सीमा को ऊपर-नीचे किए जाने की गुंजाइश है या नहीं। और सबसे महत्वपूर्ण यह कि इस पूरी प्रक्रिया में टैक्स संबंधी देनदारियों की जानकारी होनी चाहिए। इन सबके बाद बेहतर यह होगा कि हर तरह के वित्तीय लक्ष्य के लिए तय करें कि किस तरह के निवेश की जरूरत होगी। उसके बाद खास तरह के निवेश में उपकरणों में से किसी एक को चुना जा सकता है।

इसलिए सबसे पहला और जरूरी कदम यह है कि खुद की जिंदगी के बारे में विवेचना करें। उसके बाद लक्ष्यों और फिर उन लक्ष्यों के हिसाब से निवेश के प्रकार की बारी आती है। हालांकि निवेश के लक्ष्यों के अलावा भी कुछ पहलू हैं। मसलन आपकी या आपके जीवनसाथी की आमदनी कितनी स्थिर है, आपका स्वास्थ्य कैसा है, आप पर कितने लोग निर्भर हैं या नहीं हैं या आपकी पैतृक संपत्ति है कि नहीं। यकीन मानिए, अगर आपके पास इन सवालों के ठीक-ठीक जवाब हैं, तो फिर इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि अगले छह महीनों में स्मॉलकैप या मिडकैप शेयरों का क्या हाल होने वाला है। आपके पास ये जानकारियां हैं, तो आप निवेश और बचत के बारे में समय पर उचित निर्णय ले सकते हैं।

निवेश के वक्त बाजार की हालत नहीं बल्कि खुद की जरूरत क्यों देखनी चाहिए, इसका एक और पहलू है। यह ज्यादा गहरा और महत्वपूर्ण है। जो निवेशक अपेक्षाकृत अस्थिर प्रकार की संपत्तियों में निवेश करते हैं, जोखिम के वक्त उन सबकी चिंता और तनाव का स्तर अलग-अलग होता है। इसे बेहतर तरीके से वही समझ सकता है जिसने अस्थिर संपत्तियों में निवेश किया हो, अस्थिरता के दौरान भी निवेश को बरकरार रखे हुए हो और उस दौर के निकल जाने के बाद रिकवरी देख चुका हो। निवेश सलाहकार आमतौर पर हर निवेशक से पूछते ही हैं कि जोखिम लेने की उसकी क्षमता कितनी है। लेकिन इसका जवाब वही दे सकता है जिसने वास्तविक जिंदगी में इसका अनुभव किया हो। जिंदगी के कई अन्य मोड़ पर भी इसी तरह के अनुभव सामने आते हैं। 'क्या आतंकी हमले का आप बहादुरी से सामना कर सकते हैं' - ऐसे सवालों का तब तक जवाब नहीं दिया जा सकता, जब तक वह स्थिति सामने नहीं आई हो।

रेलवे की आधुनिक तकनीक ने छीना आधी आबादी का हक

निशांत यादव, लखनऊ

जर्मनी की लिंक हॉफमैन बुश (एलएचबी) तकनीक ने रेलवे के नेटवर्क को तो तेज कर दिया, लेकिन इस तकनीक ने आधी आबादी और दिव्यांग यात्रियों का हक छीन लिया है। पावर कार लगाने के बाद एलएचबी रैक वाली ट्रेनों में महिला और दिव्यांग बोगियों की व्यवस्था समाप्त कर दी गई है। अब महिला यात्री धक्का-मुक्की के बीच पुरुष यात्रियों के बीच सफर कर रही हैं, जबकि दिव्यांग यात्रियों को तो जनरल बोगी में भी बैठने की जगह नहीं मिल पा रही है। शनिवार को ट्रेन संख्या 11180 लखनऊ-एलटीटी एक्सप्रेस और 13307 गंगा सतलज एक्सप्रेस में महिला बोगी न होने पर महिलाओं को परेशानी के बीच सफर करना पड़ा।

यह है नियम : नियम है कि हर ट्रेन में गार्ड की बोगी महिलाओं और दिव्यांगों के लिए आरक्षित होती है। यह व्यवस्था अभी पुष्पक एक्सप्रेस सहित पारंपरिक बोगियों में लागू है, जबकि 12541/42 गोरखपुर-एलटीटी एक्सप्रेस जैसी पहले की एलएचबी क्लास बोगियों में भी महिलाओं और दिव्यांगों के लिए स्थान आरक्षित है। अब पावर कार वाले एलएचबी के नए रैक आ रहे हैं। ऐसे में ट्रेन में लगने वाले दो पावर कार में केवल गार्ड केबिन और लगेज का ही स्थान है। शेष जगह जेनरेटर ने ले लिया है। इसके अलावा ट्रेनों में जनरल क्लास के दीन दयालु कोच लगाए जा रहे हैं, जिनमें महिलाओं और दिव्यांग यात्रियों के लिए स्थान सुरक्षित ही नहीं है। एलएचबी क्लास वाली ट्रेनों की खासियत यह है कि इनकी स्लीपर और एसी क्लास में सीटों की संख्या 10 प्रतिशत अधिक होती है, लेकिन दो पावर कार होने से बोगियों में जनरल क्लास के यात्रियों की क्षमता कम हो गई। इन ट्रेनों की बोगियों की गति सीमा भी 160 किलोमीटर प्रति घंटे होती है।

नए रैक में महिला और दिव्यांग बोगी की व्यवस्था लागू करने के लिए उच्चस्तर पर प्रयास किए जाएंगे, जिससे महिला यात्रियों का सफर आसान हो सके।
-पंकज कुमार सिंह, मुख्य जनसंपर्क अधिकारी, पूर्वोत्तर रेलवे

कांग्रेस पार्षद के भाइयों ने महिला को पीटा

जागरण संवाददाता, श्री मुक्तसर साहिब

कांग्रेस पार्षद के भाइयों ने पैसे के लेनदेन के विवाद में एक महिला को सड़क पर घसीट-घसीट कर पीटा। घटना से प्रदेश में आक्रोश फैल गया है। मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिंदर ने भी कड़ा संज्ञान लिया है। उन्होंने ट्वीट कर कहा कि आरोपितों को सख्त सजा मिलेगी। इस बीच, पुलिस ने आरोपित कांग्रेस पार्षद राकेश चौधरी को गिरफ्तार कर लिया है। अस्पताल में भर्ती पीड़ित महिला की सुरक्षा में दो दर्जन पुलिसकर्मी तैनात किए गए हैं।

शुक्रवार सुबह महिला को अमानवीय तरीके से पीटने के मामले में गिरफ्तार पार्षद के भाइयों समेत छह आरोपितों रूप लाल, सुरेश चौधरी, सनी चौधरी, शेख उर्फ रिशू, जैबों उर्फ सलीम व गुड्डी को शनिवार को सीजेएम अतुल कंबोज की अदालत में पेश किया गया। अदालत ने पांच आरोपितों को दो दिन का रिमांड दिया है। आरोपित महिला को फरीदकोट जेल में न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया है। आरोपित हसन लाल, सनी चौधरी की पत्नी रेनू व पार्षद राकेश चौधरी की पत्नी ज्योति अभी भी फरार हैं। पुलिस का कहना है कि उनकी तलाश की जा रही है।

- सीएम कैप्टन बोले- महिला को पीटने वालों को मिलेगी सख्त सजा
- रुपये के लेन-देने को लेकर कांग्रेस पार्षद के भाइयों ने घर से निकाल कर की थी पिटाई
- पहले गिरफ्तार पांच आरोपित रिमांड पर, पीड़ित महिला की सुरक्षा बढ़ी

कांग्रेस पार्षद ने वीडियो वायरल कर दी सफाई, यह सब गुस्से में हो गया : उधर, कांग्रेस पार्षद राकेश चौधरी ने अपनी वीडियो वायरल कर मामले में सफाई दी है। कहा, यह सब गुस्से में हुआ। वीडियो में वह कह रहा है कि उसका भाई कौन सी तलवार लेकर गया था। जिस महिला के साथ झगड़ा हुआ है वह उसकी भाभी के गले पड़ी थी। ऐसा होने पर गुस्सा तो आ ही जाता है।

महिला के बेटे ने बनाई थी मारपीट की वीडिया : शुक्रवार सुबह वार्ड नंबर 29 के कांग्रेस पार्षद राकेश चौधरी के भाइयों, मां व भांजों ने मिलकर मीना नामक महिला को पैसे के लेनदेने के मामले में घर से बाहर निकालकर बुरी तरह से पीटा था। लात-घूंसे बरसाते रहे लेकिन कोई छुड़ाने नहीं आया। महिला के दस वर्षीय बच्चे ने इसकी वीडियो बना ली थी और उसे सोशल मीडिया पर वायरल कर दी थी। इसके बाद थाना सिटी पुलिस ने दस में से छह आरोपितों को उसी दिन गिरफ्तार कर लिया था, जबकि चार आरोपित फरार हो गए थे।

विरोध में उतरे विभिन्न संगठन, अस्पताल के बाहर धरना : उधर, नौजवान भारत सभा, पंजाब स्टूडेंट यूनियन, डेमोक्रेटिक मुलाजिम फेडरेशन, किरती किसान यूनियन सहित अलग-अलग जत्थेबंदियों व राजनीतिक पार्टियों के नेताओं ने अस्पताल पहुंचकर घायल महिला का हाल जाना और आरोपितों को सख्त सजा देने की मांग उठाई।

सत्कार कमेटी के सदस्य अस्पताल के बाहर बैठ गए हैं। संगठनों ने कांग्रेस के पूर्व विधायक सुखदर्शन सिंह मराड़ पर आरोपितों को शह देने का आरोप लगाया है। आप के विधायक अमन अरोड़ा व कोटकपूरा से विधायक कुलतार संधवा व काका बराड़ अस्पताल पहुंच महिला का हाल चाल जाना। उन्होंने कहा कि उनकी पार्टी महिला को वकील मुहैया कराएगी। पूर्व विधायक करण कौर बराड़ ने कहा कि आरोपित पार्षद राकेश चौधरी गुंडा किस्म का व्यक्ति है, जिसके संबंध में कैप्टन अमरिंदर सिंह को पता है।

नौकर के नाम थीं करोड़ों रुपये की बेशकीमती जमीनें

नईदुनिया, भोपाल

- मध्य प्रदेश में आयकर ने की 25 करोड़ की बेनामी संपत्ति अटैच

मध्य प्रदेश में आयकर विभाग की बेनामी विंग ने भोपाल के आसपास हुजूर तहसील के कांकड़िया और दौलतपुरा गांवों में करीब 25 करोड़ रुपये मूल्य की संपत्ति अटैच की है। ये बेशकीमती जमीनें ऐसे व्यक्ति के नाम पर दर्शाई गईं थीं, जिसे महज 300 रुपये महीने का वेतन मिलना दिखाया गया है। मामले में आयकर अधिकारियों ने दो लोगों के खिलाफ प्रकरण दर्ज किया है। साथ ही मामला दिल्ली स्थित एडजुडिकेटिंग अथॉरिटी को भेज दिया है। यह कार्रवाई बेनामी लेनदेन (निषेध) अधिनियम की धारा 6ए और 6(1) के तहत की है।

तीन महीने पहले विभाग ने उक्त संबंध में छानबीन के बाद संबंधित लोगों को नोटिस भेजकर प्रॉपर्टी को लेकर जानकारी तलब की थी। लेकिन, मामले में समाधानकारक जानकारी नहीं मिली। इसलिए आयकर विभाग की बेनामी विंग ने बेनामी संपत्ति के 50 खसरों को अंतिम रूप से अटैच करते हुए दिल्ली स्थित एडजुडिकेटिंग अथॉरिटी को प्रकरण भेज दिया है। भोपाल के आसपास गांवों में मौजूद इस भूमि का बाजार मूल्य करीब 25 करोड़ रुपये से अधिक बताया जा रहा है।

जिसके नाम संपत्ति उसकी मासिक आय 300 रुपये : मामले का सबसे रोचक पहलू यह है कि करोड़ों रुपये की यह संपत्ति कल्याण सिंह नामक आदिवासी के नाम पर दर्शाई गई थी, उसकी आय महज 300 रुपये महीने बताई गई है। इस बीच कल्याण सिंह के नाम पर बड़ी रकम के लेनदेन का ब्योरा भी मिला, जिसके बारे में भी वह जानकारी नहीं दे सका। विभाग की बेनामी यूनिट ने मामले में विकास शर्मा व शशि शंकर शर्मा के खिलाफ प्रकरण दर्ज किया है। कल्याण सिंह को इनका कर्मचारी बताया जा रहा है। मामले में आयकर विभाग ने रजिस्ट्रार पंजीयन एवं तहसीलदार कार्यालय को सभी 50 खसरों का ब्योरा भेजते हुए भूमि की खरीद-फरोख्त पर रोक लगाने का आग्रह किया है।

26 कर्मचारियों समेत 35 लड़ाके मारे गए उत्तर-पश्चिमी सीरिया में हुई झड़पों और हवाई हमलों में। सीरियन ऑब्जर्वेटरी फॉर ह्यूमन राइट्स के मुताबिक हामा प्रांत के उत्तर में सीरियाई शासन और रूसी हवाई हमले में विद्रोही लड़ाके मारे गए। इस दौरान सरकार समर्थक बल के 26 सैनिकों की भी मौत हो गई।

दुनिया को टकराव के मुहाने पर क्यों ले आया है टैंकर विस्फोट

न्यूयॉर्क टाइम्स से

- अमेरिका ने ईरान पर लगाया है टैंकरों पर हमले का आरोप
- यूएई ने भी विस्फोट में ईरान का हाथ होने की बात कही

वाशिंगटन : ओमान की खाड़ी में दो तेल टैंकरों पर हुए रहस्यमय विस्फोट ने दुनिया को टकराव के मुहाने पर लाकर खड़ा कर दिया है। अमेरिका का आरोप है कि होर्मुज जलडमरूमध्य (स्ट्रेट) में टैंकरों पर हुए इस हमले को ईरान ने अंजाम दिया है। वहीं ईरान का कहना है कि इस स्ट्रेट की सुरक्षा की जिम्मेदारी उसकी है और उसने ऐसा कोई काम नहीं किया है। हमले के बारे में दिए जा रहे सुबूत मनगढ़ंत हैं। ईरान ने अपनी सफाई में यह भी कहा है कि टैंकरों के चालक दलों को बचाने में उसके सुरक्षा अधिकारियों ने तत्परता दिखाई थी।

संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) के विदेश मंत्री शेख अब्दुल्ला बिन जायद अल नहयान ने भी अमेरिका के सुर में सुर मिलाया है। उनका कहना है कि टैंकरों पर हुए हमले में ईरान का हाथ स्पष्ट है। अंतरराष्ट्रीय समुदाय को यहां से गुजरने वाले जहाजों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए कदम उठाना चाहिए।

क्यों अहम है होर्मुज? : इस घटना ने क्यों पूरी दुनिया का ध्यान अपनी ओर खींचा है, इसे जानने के लिए होर्मुज स्ट्रेट की महत्ता को समझना होगा। दुनियाभर में करीब एक तिहाई कच्चे तेल की आवाजाही इसी जलडमरूमध्य से होती है। इसके अलावा प्राकृतिक गैस का करीब पांचवां हिस्सा भी यहीं से होकर जाता है। ऐसे में इस स्ट्रेट को निशाना बनाकर पूरी दुनिया में कच्चे तेल की आपूर्ति को प्रभावित किया जा सकता है।

अमेरिका क्यों है परेशान? : जिन दो टैंकरों पर हमले की बात कही जा रही है, उनका दूर-दूर तक अमेरिका से संबंध नहीं है। फिर भी इस मामले में अमेरिका के हस्तक्षेप की बड़ी वजह है। दूसरे विश्व युद्ध के समय से ही अमेरिका ने फारस की खाड़ी से पेट्रोलियम की सुरक्षित आवाजाही सुनिश्चित करने का भरोसा दिया है। 1990-91 में खाड़ी युद्ध के दौरान इस क्षेत्र में सैन्य उपस्थिति के जरिये अमेरिका ने फिर अपनी प्रतिबद्धता जता दी थी। भले ही अमेरिका के टैंकर शामिल नहीं हों, लेकिन इस रास्ते के बंद होने से अमेरिकी हितों पर भी दुष्प्रभाव पड़ेगा।

ट्रंप के निशाने पर है ईरान : ईरान को लेकर डोनाल्ड ट्रंप भी हमलावर रहे हैं। ऐसे में वह ईरान को घेरने का कोई मौका नहीं छोड़ना चाहते हैं। इजरायल और अरब देशों की तरह ट्रंप भी मानते हैं कि ईरान क्षेत्र की शांति भंग कर रहा है। 2015 में उन्होंने ईरान के साथ हुए परमाणु समझौते से भी अमेरिका को बाहर कर लिया था। इस समझौते में अमेरिका ने परमाणु कार्यक्रमों पर नियंत्रण के बदले ईरान की आर्थिक मदद का भरोसा दिया था। ट्रंप ने ईरान पर फिर प्रतिबंध लगा दिए हैं। इन प्रतिबंधों का लक्ष्य है कि ईरान का तेल निर्यात बाधित हो। ईरान की सेना को वह आतंकी संगठन का दर्जा भी दे चुके हैं।

ओमान की खाड़ी में तेल टैंकर में लगी आग को बुझाते हुए ईरानी सेना की बोट। फाइल फोटो

कमला हैरिस ने किया हड़ताली कर्मियों का समर्थन...

अमेरिकी सीनेटर और राष्ट्रपति पद के लिए डेमोक्रेटिक उम्मीदवारी की दावेदार कमला हैरिस नेवादा राज्य के लास बेगास में फास्ट फूड रेस्तरां की विश्व की सबसे बड़ी चेन मैकडोनाल्ड्स के हड़ताली कर्मचारियों के बीच पहुंची और उनकी मांग का समर्थन किया। मैकडोनाल्ड्स के कर्मचारी 15 डॉलर (लगभग एक हजार रुपये) न्यूनतम वेतन की मांग को लेकर देशभर में प्रदर्शन कर रहे हैं। रायटर

घृणा फैलाने में जुटे हैं सैकड़ों अमेरिकी पुलिस अधिकारी

सैन फ्रांसिस्को, आइएएनएस : अमेरिका के करीब 400 वर्तमान व पूर्व पुलिस अधिकारी फेसबुक पर नफरत फैलाने वाले समूहों का हिस्सा हैं। इन समूहों में इस्लाम विरोधी और नस्ली विचारधारा को बढ़ावा दिया जाता है। रिवील नाम के गैर-लाभकारी संगठन की एक रिपोर्ट में यह बात सामने आई है।

रिपोर्ट में कहा गया है कि इस तरह के समूहों से जुड़े पुलिस अधिकारी जेल, स्कूल, एयरपोर्ट और अन्य अहम जगहों पर तैनात हैं। जिन समूहों में इनकी सक्रियता है, उनमें से कुछ खुलकर इस्लाम विरोधी हैं। वहीं कुछ समूह सरकार के विरोध पर चर्चा करते हैं। 150 पुलिस अधिकारी हिंसक सरकार विरोधी समूहों से जुड़े पाए गए हैं। यह रिपोर्ट सामने आने के बाद 50 से ज्यादा विभाग आंतरिक स्तर पर इस बात की जांच कर रहे हैं। विभाग इस बात की भी जांच कर रहे हैं कि सोशल मीडिया पर अधिकारियों की विचारधारा से उनके कामकाज पर क्या असर पड़ रहा है। विभागीय नियमों के उल्लंघन के कारण एक अधिकारी को बर्खास्त भी किया जा चुका है। चैपमैन यूनिवर्सिटी के एसोसिएट प्रोफेसर पीटर सिमी ने कहा, 'इन समूहों में होने वाली चर्चा से व्यक्ति के निर्णय पर फर्क पड़ता है। दुनिया के बारे में हमारी जैसी धारणा होती है, हम वैसे ही फैसले लेते हैं। ऐसा मुश्किल है कि व्यक्ति अपने विचार और फैसले को अलग-अलग रख सके।'

- फेसबुक में नफरत फैलाने वाले समूहों में सक्रिय हैं करीब 400 अधिकारी

हांगकांग में प्रत्यर्पण कानून पर लगी रोक

दिखा असर ▶ चौतरफा दबाव में कैरी लैम ने अनिश्चितकाल के लिए टाल दिया बिल

प्रस्तावित बिल को हांगकांग की स्वायत्तता के लिए खतरा मान रहे हैं लोग

हांगकांग, रायटर : हफ्ते भर से जारी विरोध प्रदर्शन के बाद हांगकांग की नेता कैरी लैम ने विवादित प्रत्यर्पण कानून को अनिश्चित समय के लिए टाल दिया है। इस कानून में आरोपितों व संदिग्धों को मुकदमा चलाने के लिए सीधे चीन प्रत्यर्पित करने का प्रावधान था। कई लोग चीन समर्थक नेता लैम द्वारा प्रस्तावित इस कानून को हांगकांग की स्वायत्तता और यहां के नागरिकों की स्वतंत्रता पर खतरा मान रहे हैं। दरअसल 1997 में ब्रिटेन ने चीन को हांगकांग इसी शर्त पर सौंपा था कि 'वन कंट्री, टू सिस्टम' के तहत उसकी स्वायत्तता बरकरार रहेगी।

फरवरी में प्रस्तावित प्रत्यर्पण कानून का शुरुआत से ही विरोध शुरू हो गया था। बीते रविवार को लाखों लोगों ने उक्त विवादित कानून को हटाने की मांग करते हुए उग्र विरोध प्रदर्शन किया था, जो हफ्ते भर जारी रहा। प्रदर्शनकारियों को हटाने के लिए पुलिस ने आंसू गैस और रबर बुलेट का इस्तेमाल किया था। इससे पूरे क्षेत्र में तहलका मच गया और प्रदर्शनकारी लैम के इस्तीफे की भी मांग करने लगे। लैम के सहयोगी भी उन पर बिल वापस लेने का दबाव बना रहे थे। इसी के चलते आखिरकार उन्हें बिल को अनिश्चित काल के लिए टालना पड़ा। हालांकि विरोध के बाद भी वह बिल रद ना करने की बात पर अड़ी हुई थी। इस्तीफा देने के सवाल पर उन्होंने कहा कि जनता को उन्हें एक और मौका देना चाहिए।

बिल रद करने के लिए फिर से होगी रैली : बिल वापस लेने के लिए इस रविवार को फिर से व्यापक रैली की तैयारी की जा रही है। इस रैली में प्रदर्शनकारियों पर हिंसक कार्रवाई के लिए पुलिस को जिम्मेदार ठहराए जाने की भी मांग की जाएगी।

चीन की बढ़ सकती है चिंता : हांगकांग में प्रत्यर्पण कानून के टल जाने से चीन सरकार की चिंता बढ़ सकती है। चीन पहले ही आर्थिक सुस्ती और अमेरिका से जारी ट्रेड वार के संकट से जूझ रहा है।

क्यों हुआ प्रदर्शन : 1984 में ब्रिटेन और हांगकांग के बीच एक समझौता हुआ था, जिसमें हांगकांग शहर को चीन को लौटा दिया गया। 1 जुलाई 1997 से हांगकांग पर चीन का शासन चलने लगा। इसके लिए हांगकांग में एक देश-दो सरकार का सिद्धांत लागू किया गया। हालौंकि हांगकांग को चीन से उतनी आजादी नहीं मिल सकी जितनी वहां के लोग चाहते थे। हांगकांग का शासन 1200 सदस्यों की चुनाव समिति के मुख्य कार्यकारी अधिकारी द्वारा चलाया जाता है। हांगकांग के लोग चाहते हैं कि ये प्रतिनिधि जनता के जरिए चुने जाने चाहिए। 2007 में यह निर्णय लिया गया कि 2017 में होने वाले चुनावों में लोगों को मताधिकार का प्रयोग करने का हक मिलेगा। 2014 की शुरुआत में इसके लिए कानूनों में जरूरी बदलाव शुरू हुए।

2014 के 'अंब्रेला आंदोलन' की हुई शुरुआत : जनवरी 2013 में हांगकांग की एक प्रोफेसर बेनी ताई ने एक आर्टिकल लिखा, जिसमें कहा गया कि सरकार मताधिकार के अंतरराष्ट्रीय मानकों का पालन नहीं कर रही है। इसके लिए उन्होंने एक अहिंसक आंदोलन करने का आह्वान किया। आंदोलन के लिए ऑक्यूपाई सेंट्रल विद लव एंड पीस नाम का एक संगठन बनाया गया।

जून 2014 में इस संगठन ने एक जनमत संग्रह भी कराया। जिसमें करीब आठ लाख लोगों ने वोट दिया। ये हांगकांग के कुल वोटरों का 20 प्रतिशत है। 31 अगस्त, 2014 को सरकार ने वोटिंग के नए कानून बनाए, जिसे हांगकांग के लोगों ने सिरे से खारिज कर दिया। इसके बाद 22 सितंबर 2014 को कई स्टूडेंट यूनियनों ने इसका विरोध करना शुरू किया। 26 सितंबर 2014 को इस आंदोलन से लोग जुड़े और सरकारी मुख्यालय के सामने इकट्ठा होकर प्रदर्शन करने लगे। ये लोग पीले कलर के बैंड और छाते अपने साथ लेकर आए थे इसीलिए इसका नाम 'येलो अंब्रेला प्रोटेस्ट' रखा गया।

देशव्यापी विरोध के बाद शनिवार को प्रेस कांफ्रेंस करके विवादित प्रत्यर्पण कानून को स्थगित करने की घोषणा करतीं हांगकांग की चीफ एक्जीक्यूटिव कैरी लैम। एएफपी

बराबरी के आधार पर ही भारत से बात करेगा पाक : कुरैशी

बिश्केक, प्रेट्र : पाकिस्तान के विदेश मंत्री शाह मेहमूद कुरैशी ने कहा कि उनका देश भारत से 'समानता के आधार पर' और 'सम्मानजनक स्थिति में' ही बात करेगा। अब यह भारत सरकार के ऊपर है कि वह पाकिस्तान के साथ सभी मुद्दों को सुलझाने के लिए क्या रुख अपनाती है। हालांकि कुरैशी ने यह इल्जाम भी लगाया कि अपना वोट बैंक बरकरार रखने के लिए मोदी सरकार अभी भी 'चुनावी मनोवृत्ति' से काम कर रही है।

19वें शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) सम्मेलन में शामिल होने किर्गिस्तान की राजधानी बिश्केक गए कुरैशी ने शनिवार को जियो न्यूज को बताया कि पाकिस्तानी प्रधानमंत्री इमरान खान और भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का आमना-सामना हुआ और दुआ-सलाम हुई। उनकी मुलाकात हुई, दोनों ने हाथ मिलाया और एक-दूसरे का अभिवादन किया।

उन्होंने भारत सरकार पर आरोप लगाया कि अपना वोट बैंक बरकरार रखने के लिए वह चुनावी माइंडसेट में है। अपने संसदीय क्षेत्र को प्रभावित करने के लिए और वोट बैंक को बरकरार रखने के लिए भारत अभी भी चुनाव की सोच से बाहर नहीं आया है। लेकिन पाकिस्तान को जो कहना था, उसने कह दिया है। इसलिए अब भारत को फैसला लेना है। हमें ना तो जल्दी है और ना ही कोई परेशानी है। जब भारत खुद को इस बात के लिए तैयार कर ले, वह हमें भी तैयार पाएगा। लेकिन हम बातचीत बराबरी के दर्जे और इज्जत के साथ ही करेंगे। पाकिस्तानी विदेश मंत्री कुरैशी ने कहा कि ना तो हमें किसी के पीछे भागने की जरूरत है, ना ही कोई अकड़ दिखाने की ख्वाइश है। पाकिस्तान का रुख बहुत ही वास्तविक, सोचा-समझा हुआ है। उन्होंने कहा कि अब फैसला भारत को करना है। वह द्विपक्षीय वार्ता करना चाहता है या नहीं।

पाक के मंत्री ने 'कैट' फिल्टर के साथ की लाइव स्ट्रीमिंग

इस्लामाबाद, प्रेट्र : सोशल मीडिया पर पाकिस्तान के खैबर पख्तूनख्वा प्रांत के सूचना मंत्री शौकत यूसुफजई और उनके साथी मंत्रियों का मजाक उड़ रहा है। यूसुफजई की कॉन्फ्रेंस का फेसबुक पर प्रसारण (लाइव स्ट्रीमिंग) किया जा रहा था। इस दौरान उस पर 'कैट' फिल्टर लगा रह गया। फेसबुक में लाइव स्ट्रीमिंग के दौरान फिल्टर लगाने का विकल्प मिलता है। 'कैट' फिल्टर लगे होने पर वीडियो में दिख रहे लोगों के चेहरे पर बिल्ली के मूंछ और कान दिखाई देने लगते हैं। मंत्री के कॉन्फ्रेंस की लाइव स्ट्रीमिंग के दौरान भी गलती से 'कैट' फिल्टर लगा रह गया। जैसे ही स्ट्रीमिंग शुरू हुई, लोगों ने मजाक उड़ाना शुरू कर दिया। बाद में भी इसे लोगों ने खूब वायरल किया और तरह-तरह के कमेंट किए। कुछ लोग लिख रहे थे कि इन बिल्लियों को किसने बाहर छोड़ दिया। कुछ ट्विटर यूजर बिल्ली की शक्ल में यूसुफजई को मासूम भी बता रहे थे।

ब्राजील में पेंशन खर्च में कटौती का विरोध

दक्षिण अमेरिकी देश ब्राजील में राष्ट्रपति जायर बोल्सनारो की दक्षिणपंथी सरकार द्वारा उच्च शिक्षा और पेंशन खर्च में कटौती किए जाने के फैसले के विरोध में हजारों लोग सड़कों पर उतर आए। साओ पाउलो में लोगों ने इसको लेकर प्रदर्शन किया। कई स्थानों पर पुलिस और प्रदर्शनकारियों के बीच हिंसक झड़पें भी हुईं। पुलिस ने भीड़ को काबू करने के लिए टीयर गैस भी छोड़ी। प्रदर्शनकारियों का कहना है कि पेंशन के अलावा उच्च शिक्षा के बजट में 30 प्रतिशत तक की कटौती की जा रही है। रायटर

अमेरिकी-मेक्सिको सीमा पर लू लगने से गई थी बच्ची की जान

ह्यूस्टन, प्रेट्र : अमेरिकी अधिकारियों को मेक्सिको सीमा के पास सात साल की भारतीय बच्ची गुरप्रीत कौर का शव मिला था। कौर की मां उसे छोड़कर पानी ढूंढने गई थी। इसी दौरान चिलचिलाती धूप में लू लगने से बच्ची की मौत हो गई थी। पीमा काउंटी के मुख्य चिकित्सा अधिकारी का कहना है कि हाइपरथर्मिया के चलते कौर के शरीर का तापमान सामान्य से बहुत अधिक बढ़ गया था। बता दें कि अमेरिका के सीमा सुरक्षा अधिकारियों ने एरिजोना प्रांत के ल्यूकविले शहर से 27 किलोमीटर दूर कौर का शव बरामद किया था। उन्होंने इस घटना के लिए मानव तस्करों का जिम्मेदार ठहराया था। कौर चार लोगों के साथ यात्रा कर रही थी। मानव तस्करों ने उन्हें सीमा पर छोड़कर अमेरिका में दाखिल होने को कहा था। दो भारतीय महिलाओं से पूछताछ में अमेरिकी अधिकारी को यह जानकारी मिली थी। महिलाओं ने यह भी बताया था कि वे अमेरिका में कैसे दाखिल हुईं और किस तरह एक महिला और दो बच्चे उनसे बिछड़ गए। दोनों को हिरासत में लेने के बाद अमेरिकी गश्त अधिकारियों ने लापता लोगों की तलाश शुरू की। कुछ घंटे बाद बच्ची का शव बरामद किया गया था।

आइटी कंपनी पर नियंत्रण के लिए निगरानी ठीक नहीं : सुंदर पिचाई

- गूगल के सीईओ बोले-सरकारी निगरानी ठीक है और वह जांच में सहयोग को तैयार

वाशिंगटन, प्रेट्र/आइएएनएस : अमेरिकी सरकार की ओर से अविश्वास जांच का सामना कर रही इंटरनेट कंपनी गूगल के सीईओ सुंदर पिचाई ने बड़ी आइटी कंपनियों के नियमन और नियंत्रण पर पहली बार खुलकर अपनी राय दी है। भारतीय मूल के सुंदर पिचाई ने एक इंटरव्यू में कहा कि टेक्नोलॉजी वाली बड़ी कंपनियों के काम पर सरकार की नजर होनी चाहिए, लेकिन केवल उन पर नियंत्रण के लिए निगरानी करने का कोई मतलब नहीं है। निगरानी के नाम पर परेशान करना ठीक नहीं है। उन्होंने यह भी कहा है कि वे जांच में पूरी तरह से सहयोग करने को तैयार हैं।

सुंदर पिचाई ने सीएनएन बिजनेस को दिए अपने इंटरव्यू में कहा कि यह जांच भले ही कुछ कंपनियों के लिए नई हो लेकिन गूगल के लिए यह कोई नई बात नहीं है। गूगल पहले से ही यूरोप में इस तरह की जांच का सामना कर रहा है। गूगल कंपनी इतनी बड़ी हो गई है कि उसकी निगरानी करने में कोई हर्ज नहीं है। यह सही कदम है और हम इसमें पूरा सहयोग करेंगे। लेकिन मुझे केवल इस बात की फिक्र है कि केवल नियमितीकरण करने के लिए निगरानी से बेवजह की परेशानियां खड़ी हो जाती हैं।

सुंदर पिचाई ने पहली बार आइटी कंपनियों की जांच को लेकर कुछ कहा है। दरअसल अमेरिकी न्याय विभाग (डीओजी) ने गूगल के विज्ञापन देने के तरीके और सर्च के नतीजों में भेदभाव को लेकर जांच शुरू की है। बताया जा रहा है कि गूगल, फेसबुक, एपल और अमेजन की बाजार में धमक की जांच और जिम्मेदारियों को लेकर अब डीओजी और संघीय व्यापार आयोग में बंटवारा होगा।

बता दें कि यूरोप में गूगल पर इसी मामले को लेकर जुर्माना भी लगाया जा चुका है। यूरोपीय संघ ने प्रतिस्पर्धा कानून के उल्लंघन को लेकर गूगल पर इसी साल 1.49 अरब यूरो यानी करीब 117 अरब रुपये का जुर्माना लगाया है। गूगल पर यह जुर्माना ऑनलाइन विज्ञापन में पक्षपात को लेकर लगा है। इससे पहले भी वर्ष 2017 में यूरोपीय आयोग ने गूगल पर इसी बात को लेकर 2.7 अरब डॉलर का जुर्माना लगाया था जो कि गूगल पर लगने वाला सबसे बड़ा जुर्माना था।

एक कार्यक्रम के दौरान सभा को संबोधित करते गूगल के सीईओ सुंदर पिचाई। फाइल/एपी

तेहरान की जेल में बंद महिला ने शुरू की भूख हड़ताल

लंदन, जून: देशद्रोह के मामले में तेहरान की जेल में बंद ब्रिटिश-ईरानियन महिला ने भूख हड़ताल शुरू कर दी है। इस दौरान वह मात्र पानी पर रहेंगी। उन्होंने न्यायालय को इसके बारे जानकारी दे दी है। उनके पति ने शनिवार को ईरान सरकार से पत्नी को तुरंत रिहा करने और ब्रिटिश दूतावास को स्वास्थ्य की जांच के लिए अनुमति देने की भी मांग की है। महिला ने इससे पहले जनवरी में भी रिहाई की मांग को लेकर भूख हड़ताल की थी

तीन साल से जेल में बंद 40 वर्षीय नाजनीन जगारी रैटक्लिफ को 16 अप्रैल को ईरान सरकार को धोखा देने के आरोप में गिरफ्तार किया गया था। उस समय वह अपनी मासूम बेटी के साथ परिवार से मिलने के लिए ईरान से जा रही थीं। उनके पति रिचर्ड रैटक्लिफ ने शनिवार को बताया कि उनकी पत्नी पर लगाये गये आरोप गलत हैं। नाजनीन चेतावनी दी थी कि यदि उसे बेटी का पांचवां जन्मदिन जेल में मनाना पड़ा तो वह कुछ करेगी।

नेपाल में उत्तर कोरिया की बढ़ रही गतिविधियों पर अमेरिका ने जताई चिंता

काठमांडू, प्रेट्र : नेपाल में उत्तर कोरिया की बढ़ती व्यावसायिक गतिविधियों पर अमेरिका ने चिंता जताई है और कहा है कि नेपाल को उत्तर कोरिया को प्रश्रय नहीं देना चाहिए। अमेरिका ने कहा कि चूंकि नेपाल संयुक्त राष्ट्र का सदस्य है, इसलिए उसे विश्व समुदाय द्वारा उत्तर कोरिया पर लगाए गए प्रतिबंधों का पालन करना चाहिए।

नेपाल के तीन दिन के दौरे पर आए उत्तर कोरिया में अमेरिका के विशेष दूत मार्क लैंबर्ट ने नेपाल की सत्तारूढ़ पार्टी नेपाल कम्युनिस्ट पार्टी (एनसीपी) के नेता पुष्प कमल दहल, सांसदों व सरकार के वरिष्ठ अधिकारियों से उक्त आशय की अपील की। शनिवार को हिमालयन टाइम्स ने कहा कि लैंबर्ट ने नेपाल में उत्तर कोरिया की बढ़ती व्यावसायिक गतिविधियों पर गहरी चिंता जताई। उन्होंने आशंका जताई कि उत्तर कोरिया साइबर अपराध हमले के लिए नेपाल की धरती का दुरुपयोग कर सकता है। उन्होंने नेपाल के सांसदों के साथ एक बैठक में कहा कि संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद ने उत्तर कोरिया पर कई प्रतिबंध लगा रखे हैं। ऐसे में संयुक्त राष्ट्र का सदस्य होने के नाते नेपाल को संयुक्त राष्ट्र के फैसले का सम्मान करना चाहिए। बता दें कि नेपाल 1955 में संयुक्त राष्ट्र का सदस्य बना था। इससे पहले अमेरिकी विदेश मंत्री माइक पोंपियो ने भी नेपाल के विदेश मंत्री प्रदीप कुमार ग्यावाली के दिसम्बर में अमेरिकी दौरे के दौरान इस मुद्दे को उठाया था।

डोनाल्ड ट्रंप। फाइल

नेपाल के कई स्कूलों में चीनी भाषा अनिवार्य

काठमांडू, प्रेट्र : चीन की सरकार ने नेपाल में चीनी भाषा मंदारिन पढ़ाने वाले शिक्षकों के वेतन का खर्च उठाने का प्रस्ताव दिया है। इस प्रस्ताव का फायदा लेने के लिए नेपाल के कई निजी स्कूलों ने मंदारिन की पढ़ाई अनिवार्य कर दी है। एक मीडिया रिपोर्ट में यह बात सामने आई है। नेपाल के स्कूलों में पाठ्यक्रम तय करने वाले सरकारी विभाग करिकुलम डेवलपमेंट सेंटर (सीडीसी) के मुताबिक, नेपाल के स्कूलों में विदेशी भाषा पढ़ाने की अनुमति है। हालांकि स्कूल किसी विदेशी भाषा को अनिवार्य नहीं कर सकते हैं। स्कूलों को इस नियम की जानकारी है, बावजूद इसके बिना वेतन दिए मंदारिन का शिक्षक मिलने के लालच में स्कूल इसकी अनदेखी कर रहे हैं। सीडीसी के नियम में यह भी कहा गया है कि विदेशी भाषा की पढ़ाई स्कूल में पढ़ाई के लिए निर्धारित समय में नहीं होगी।

किरायेदारों के लिए अमेरिका में बिल पारित

न्यूयॉर्क, एएफपी : अमेरिका में न्यूयॉर्क राज्य के विधायकों ने कम आय वाले परिवारों को आसमान छूते किराये से बचाने के उद्देश्य से एक विधेयक पारित किया। अचल संपत्ति के मालिकों और आवास अधिकार के अधिवक्ताओं के बीच एक साल तक चली लंबी लड़ाई का फल अब जा कर मिला है। नवंबर में हुए चुनाव के बाद संभव यह हो पाया है, जिसमें डेमोक्रेट्स को राज्य विधानसभा में पूर्ण बहुमत मिला था।

न्यूयॉर्क के मेयर बिल डे ब्लासियो ने कहा कि किरायेदार अपने हितों की सुरक्षा के लिए दशकों तक अल्बानी का चक्कर लगाते रहे। हम उनके साथ खड़े रहे, जी-जान से लड़े और अब आखिरकार उनका इंतजार खत्म हो गया। डेमोक्रेटिक गवर्नर एंड्रयू क्यूमो ने इस विधेयक पर हस्ताक्षर कर उसे कानून का रूप दे दिया है। इस विधेयक में उन नियमों को समाप्त कर दिया गया है, जिसके तहत भवन का मालिकान हक बदलने पर भवन मालिकों को किराए में वृद्धि करने की अनुमति मिल जाती है। कानून के तहत किरायेदारों को मरम्मत के लिए किराये वृद्धि के रूप में अधिक शुल्क भी नहीं देना पड़ेगा।

ब्रिटेन में वीजा के लिए आवेदन करने वालों में भारतीय अव्वल

- अमेरिका के साथ नाइजीरिया, रूस, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, चीन और दक्षिण अफ्रीका के लोगों ने भी किया आवेदन

लंदन, प्रेट्र : ब्रिटेन के टेक्नोलॉजी सेक्टर में सेवाएं देने के लिए भारत और अमेरिका के पेशेवर और उद्यमी सबसे ज्यादा इच्छुक हैं। दोनों देशों के नागरिकों ने इसके लिए सबसे ज्यादा संख्या में वीजा के लिए आवेदन किया है। ब्रिटेन के गृह मंत्रालय की शाखा टेक नेशन से यह बात सामने आई है। यह शाखा तकनीक क्षेत्र में कार्य करने के इच्छुक लोगों के लिए वीजा जारी करती है।

टेक नेशन ने पाया है कि ब्रिटेन के टेक्नोलॉजी सेक्टर में भारतीयों की बड़ी संख्या काम कर रही है, जो साल दर साल बढ़ती जा रही है। 2018-19 में इस क्षेत्र में 650 भारतीयों ने वीजा के लिए आवेदन किया जबकि इससे पूर्व के वर्ष में 450 पेशेवरों ने वीजा मांगा था। यह एक साल में 45 प्रतिशत की बड़ी बढ़ोतरी है। सर्वाधिक वीजा मांगने वालों में भारतीय जहां सॉफ्टवेयर इंजीनियर हैं, वहीं अमेरिकी बिजनेस डेवलपर हैं। इन दोनों देशों के अलावा नाइजीरिया, रूस, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, चीन और दक्षिण अफ्रीका के लोगों ने भी बड़ी संख्या में वीजा के लिए आवेदन किया है। टेक नेशन टीयर 1 ग्रेड के वीजा आवेदनों की स्वीकृति प्रक्रिया देखता है और उनका रिकॉर्ड रखता है। यह खासतौर से डिजिटल टेक्नोलॉजी से जुड़े आवेदनों को देखता है। टैलेंट वीजा के मामले देखने के लिए गृह मंत्रालय में अलग शाखा है।

अपनी ताजा नीति में ब्रिटेन अब पूरी दुनिया की प्रतिभाओं को अपने यहां आमंत्रित कर रहा है। वह हाल के दशकों में धीमी हुई तरक्की की रफ्तार को अब गति देना चाह रहा है। वह तकनीक क्षेत्र के पेशेवरों के अतिरिक्त विद्वान शिक्षकों को भी आमंत्रित कर रहा है जिससे देश में शिक्षा का स्तर ऊंचा बना रहे और वहां आने वाले विदेशी छात्रों की संख्या में बढ़ोतरी जारी रहे। नीतिगत आधार पर ब्रिटेन भारत की प्रतिभाओं को ज्यादा मौका दे रहा है और तरक्की की रफ्तार बढ़ाने में उनका सहयोग ले रहा है।

ये भी जानिए
पूर्व भारतीय कप्तान महेंद्र सिंह धौनी पाकिस्तान के खिलाफ भारत के सबसे सफल विकेटकीपर हैं। उन्होंने कुल 44 शिकार किए, जिसमें 35 कैच और नौ स्टंप शामिल हैं।

विश्व कप का सबसे बड़ा मुकाबला आज

पाकिस्तान के खिलाफ तीन तेज गेंदबाज उतार सकता है भारत, नंबर चार पर विजय शंकर को भी मिल सकता है मौका

मैदान रिपोर्ट
ओल्ड ट्रैफर्ड क्रिकेट स्टेडियम की दर्शक क्षमता लगभग 24000 है। यहां इस विश्व कप का पहला मैच है। यहां पर एक सेमीफाइनल सहित इस विश्व कप के छह मैच होने हैं। भारत यहां पर दो मैच खेलेगा। यह ऐसा स्टेडियम है जहां पर हर स्टैंड से शानदार क्रिकेट दिखाई देता है।

मौसम रिपोर्ट
इसमें कोई शक नहीं कि बारिश इस मैच में अहम फैक्टर होगी। यह क्रिकेट प्रेमियों का मजा किरकिरा भी कर सकती है। शनिवार की सुबह यहां बारिश नहीं हुई, लेकिन दोपहर होते-होते बारिश शुरू हो गई, जिसने आइसीसी के चेहरे की खुशी गायब कर दी। रविवार को भी दोपहर बात बारिश की संभावना है। ऐसे में आपको कम ओवरों का मैच भी देखना पड़ सकता है।

टिकट रिपोर्ट
24000 टिकटों के लिए करीब आठ लाख लोगों ने आइसीसी को आवेदन दिया था। इसी से समझ में आता है कि यह मैच प्रशंसकों के लिए कितना महत्वपूर्ण है। यही नहीं, आइसीसी ने भी बाकी लीग मैचों के मुकाबले इस मैच की टिकट के दाम ज्यादा रखे हैं। हालत यह है जिन लोगों को पहले टिकट मिल गए थे, उन्होंने इसे एक लाख रुपये तक में दोबारा बेचा है।

पाकिस्तान के साथ मैच से पूर्व अभ्यास सत्र में भाग लेते भारतीय कप्तान विराट कोहली ● एएफपी

भारत को पाकिस्तान के खिलाफ संभलकर रहने की जरूरत है। आप इस मैच को जीतने के दावेदार हैं, यह सोचकर कतई मैदान में नहीं घुसें। मुझे लगता है कि उन्होंने 2017 चैंपियंस ट्रॉफी फाइनल में ऐसा करके दिखाया था। यह एक बेहद ही रोमांचक मुकाबला होने वाला है।
सौरव गांगुली, पूर्व भारतीय कप्तान

विश्व कप में दैनिक जागरण
अभिषेक त्रिपाठी ● मैनचेस्टर

फुटबॉल के लिए प्रसिद्ध मैनचेस्टर अब युद्ध का मैदान बनने जा रहा है और इसमें आमने-सामने होंगे भारत और पाकिस्तान के योद्धा। इसमें कोई शक नहीं है कि यह इस विश्व कप का सबसे बड़ा मुकाबला होगा और कोई भी इसे मिस नहीं करना चाहेगा। घुमड़ते बादलों के बीच दोनों टीमों ने भी इसके लिए कसकर अभ्यास कर लिया है और अब जरूरत है उस अभ्यास को हकीकत में बदलने की। जो भी टीम इस हाईटेंशन मुकाबले में अपने दिमाग पर काबू करते हुए अच्छा प्रदर्शन करेगी वह यह मुकाबला जीत जाएगी। भारत-पाक के बीच क्रिकेट मुकाबला विश्व कप में हो या किसी अन्य टूर्नामेंट में, इसमें प्रशंसकों का रोमांच चरम पर होता है। इसमें नायक और विलेन तय होते हैं। अब देखना होगा कि रविवार को कौन नायक होगा और कौन विलेन?

बाउंसर का अभ्यास और धौनी के छक्के

मैनचेस्टर : पाकिस्तान के तेज गेंदबाजों के संभावित बाउंसरों के हमले से बचने के लिए भारतीय टीम ने शनिवार को जमकर अभ्यास किया। टीम ने नेट पर बायें हाथ के तेज गेंदबाज बुलाए थे और भारत के सभी बल्लेबाज उनके खिलाफ बाउंसर का अभ्यास कर रहे थे। पाकिस्तान के बायें हाथ के गेंदबाज रविवार के मैच में ऐसा ही कर सकते हैं। विश्व कप में पाकिस्तान के खिलाफ अपना आखिरी मैच खेलने वाले महेंद्र सिंह धौनी ने भी इस अहम मैच के लिए तगड़ा अभ्यास किया। उन्होंने ज्यादा से ज्यादा छक्के मारने का प्रयास किया। वह इस मैच में टीम इंडिया के ट्रंप कार्ड साबित हो सकते हैं क्योंकि उनका दिमाग भारतीय कप्तान के काफी काम आएगा।

पिच रिपोर्ट

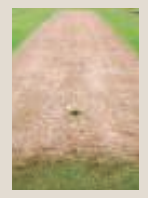

रुक-रुक कर हो रही बारिश से पिच को धूप नहीं लग पाई है। इस पिच पर घास नहीं है, लेकिन नमी के कारण तेज गेंदबाजों को मदद मिल सकती है। यह पिच बल्लेबाजी के लिए अच्छी लग रह है, लेकिन परिस्थितियां सीम और स्विंग दोनों के माकूल होंगी। ऐसे में भारत के मध्य क्रम को अहम भूमिका अदा करनी होगी।

टीम भारत : विराट कोहली (कप्तान), लोकेश राहुल, रोहित, शंकर, धौनी, हार्दिक, केदार जाधव, कुलदीप यादव, युजवेंद्रा सिंह चहल, भुवनेश्वर कुमार, जसप्रीत बुमराह, मुहम्मद शमी, दिनेश कार्तिक, रवींद्र जडेजा, शिखर धवन।
टीम पाकिस्तान : सरफराज अहमद (कप्तान), फखर जमां, इमाम उल हक, बाबर आजम, हैरिस सोहेल, हसन अली, शादाब खान, हफीज, मुहम्मद हसनैन, शाहिन शाह अफरीदी, वहाब रियाज, मुहम्मद आमिर, शोएब मलिक, इमाम वसीम और आसिफ अली।

सरफराज अहमद ● रायटर

पाकिस्तान की टीम का 2019 विश्व कप में प्रदर्शन
- वेस्टइंडीज से सात विकेट से हारे
- इंग्लैंड को 14 रनों से हराया
- श्रीलंका के खिलाफ मैच रद
- ऑस्ट्रेलिया से 41 रनों से हारे

जब भी भारत-पाक की टीम विश्व कप में भिड़ती हैं, यह फाइनल जैसा होता है। स्टेडियम में 24000 के बैठने की जगह हैं, लेकिन आठ लाख लोगों ने टिकट के लिए आवेदन किया। आप समझ सकते हैं इस मैच की कितनी अहमियत है। **इंजमाम**, मुख्य चयनकर्ता, पीसीबी

भारत का 2019 विश्व कप में प्रदर्शन
- दक्षिण अफ्रीका को छह विकेट से हराया
- ऑस्ट्रेलिया को 36 रनों से हराया
- न्यूजीलैंड के खिलाफ मैच रद

भारत व पाक का विश्व कप में सफर

विश्व कप	भारत	पाकिस्तान
1975	ग्रुप स्तर	ग्रुप स्तर
1979	ग्रुप स्तर	सेमीफाइनल
1983	विजेता	सेमीफाइनल
1987	सेमीफाइनल	सेमीफाइनल
1992	ग्रुप स्तर	विजेता
1996	सेमीफाइनल	क्वा. फाइनल
1999	सुपर सिक्स	उप विजेता
2003	उप विजेता	ग्रुप स्तर
2007	ग्रुप स्तर	ग्रुप स्तर
2011	विजेता	सेमीफाइनल
2015	सेमीफाइनल	क्वा. फाइनल

टीम संयोजन पर नजर : भारतीय टीम ने शनिवार को जमकर अभ्यास किया। भारतीय कप्तान विराट कोहली भुवनेश्वर कुमार और जसप्रीत बुमराह के अलावा मुहम्मद शमी को भी अंतिम एकादश में जगह दे सकते हैं क्योंकि आसमान में बादल छाए हैं और पिच में नमी है। ऐसी परिस्थिति में चाइनामैन गेंदबाजी कुलदीप यादव को बाहर बैठना पड़ सकता है। इसका एक कारण टीम के पास फखर जमां और इमाम उल हक जैसे बायें हाथ के ओपनर बल्लेबाज हैं। इसके अलावा पाकिस्तानी टीम आसिफ अली के अलावा बायें हाथ के बल्लेबाज हैरिस सोहेल को खिला सकती है। ऐसी स्थिति में पाकिस्तान के पास तीन बायें हाथ के बल्लेबाज होंगे तो कुलदीप को बाहर किया जा सकता है। शिखर धवन के चोटिल होने के कारण ओपनिंग में रोहित शर्मा और केएल राहुल का उतरना तय है। इसके अलावा चौथे नंबर पर ऑलराउंडर विजय शंकर को खिलाया जा सकता है क्योंकि शनिवार को उन्होंने जहां अभ्यास पिच पर काफी देर गेंदबाजी की तो वहीं नेट पर बल्लेबाजी का अभ्यास किया। ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ शानदार प्रदर्शन के बाद आमिर का पहला स्पैल निश्चित रूप से उनकी टीम के लिए काफी अहम होगा। राहुल और रोहित पारी के शुरू में बहुत कम फुटवर्क दिखाते हैं, जिससे उन्हें थोड़ा ज्यादा सतर्क रहना होगा। कोहली का पाकिस्तान के खिलाफ शानदार रिकॉर्ड रहा है। उन्होंने एडिलेड में 2015 में शतक जड़ा था। अभी तक विश्व कप में उन्होंने सैकड़ा नहीं बनाया है और मैच की अहमियत को देखते हुए वह सैकड़ा जड़ने के प्रबल दावेदार हैं।

पाकिस्तान का तेज गेंदबाजी आक्रमण मजबूत : पाकिस्तान के पास मुहम्मद आमिर, शाहीन आफरीदी, हसन अली और वहाब रियाज जैसे अच्छे तेज गेंदबाज हैं। पाकिस्तान ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ पिछले मैच में बिना स्पेशलिस्ट स्पिनर के उतरी थी और उसने मुहम्मद हफीज और शोएब मलिक से स्पिन गेंदबाजी कराई थी। पाकिस्तान कप्तान सरफराज अहमद एक तेज गेंदबाज कम करके लेग स्पिनर शादाब खान को मौका दे सकते हैं। अब देखना होगा कि हसन, शाहीन और शादाब जैसे युवा खिलाड़ी भारत के खिलाफ इतने दबाव में दुनिया की नंबर दो टीम के बल्लेबाजों को कैसी गेंदबाजी करते हैं। शोएब मलिक का प्रदर्शन इस टूर्नामेंट में खास नहीं रहा है, लेकिन उन्हें भारत के खिलाफ अपने आखिरी मैच में मौका मिल सकता है।

आइसीसी ने किया अतिरिक्त प्रयास

मैनचेस्टर : आइसीसी ने इस मैच को बारिश से बचाने के लिए कुछ अतिरिक्त प्रयास किया है। हालांकि यह कितना सफल होगा यह रविवार को पता चलेगा। आइसीसी ने बारिश के कारण गीली आउटफील्ड को सुखाने के लिए 12 हैवी हैलोजन वाला स्टैंड मैदान में लगाया, जिससे आउटफील्ड को सुखाया जा सके। हालांकि बारिश उस पर पानी फेरती नजर आई।

पिच सुखाने के लिए अलग (लाल घेरे में) इंतजाम किए गए। जागरण

आपस में भिड़ जाते हैं खिलाड़ी

जब मोरे को चिढ़ाने के लिए मेढक बने मियांदाद

विवाद -1 चार मार्च को भारत-पाकिस्तान के बीच 1992 के विश्व कप मैच के दौरान मोरे-मियांदाद का झगड़ा आज भी प्रशंसकों को याद है। उस मैच में मियांदाद ने मशहूर मेढक कूद लगाई थी। सिडनी में हुए मैच में किरण मोरे ने मियांदाद के खिलाफ बार-बार अपील क्या की, मियांदाद को गुस्सा आ गया। उन्होंने सचिन तेंदुलकर के उस ओवर में मिड ऑफ पर शॉट लगाया और रन के लिए तेजी से दौड़ पड़े, लेकिन खतरे को भांपते हुए क्रीज में लौट गए। इस बीच आए थ्रो पर मोरे ने बेल्स उड़ाई, तो मियांदाद आपा खो बैठे और विकेट के आगे मेढक कूद लगाई। मोरे कुछ इसी तरह अपील करते थे। हालांकि मियांदाद पाकिस्तान को वह मैच जिता नहीं पाए। भारत ने वह मैच 43 रनों से जीत लिया।

1992 में कुछ इस तरह मोरे को चिढ़ाया था मियांदाद ने। ट्विटर

आमिर सोहेल बनाम तेज गेंदबाज वेंकटेश प्रसाद

विवाद -2 1996 विश्व कप में वेंकटेश प्रसाद और आमिर सोहेल के बीच नोकझोंक हुई। बेंगलुरु में भारत और पाकिस्तान आमने-सामने थे। पाकिस्तान की टीम भारत के 287 रनों का पीछा करने उतरी। इस दौरान जब आमिर सोहेल बल्लेबाजी कर रहे थे तो उन्होंने वेंकटेश प्रसाद की गेंद पर चौका लगाने के बाद उन्हें बल्ले से सीमा रेखा की ओर इशारा किया, लेकिन अगली ही गेंद पर जब वेंकटेश प्रसाद ने सोहेल को क्लीन बोल्ड किया और उनका मिडल स्टंप उखाड़ दिया तब प्रसाद ने सोहेल को गुस्से में कहा कि घर जाओ।

आलू कहने पर भड़के थे पाक के इंजमाम उल हक

विवाद -3 1997 में कनाडा के टोरंटो में भारत के खिलाफ मैच में पाकिस्तान के बल्लेबाज इंजमाम उल हक ने एक दर्शक को पीट दिया था। दर्शक दीर्घा में एक व्यक्ति लगातार उन्हें आलू-आलू कहकर पुकार रहा था और हक ने आपा खो दिया। इस वाकये को याद करते हुए खुद सौरव गांगुली ने कहा कि इंजमाम बेहद शांत स्वभाव के इंसान हैं, लेकिन एक व्यक्ति उन्हें लगातार आलू-आलू कहता था, जिसके चलते उन्होंने आपा खो दिया था।

शोएब अख्तर को सहवाग ने दिया करारा जवाब

विवाद -4 2003 विश्व कप में भारत के खिलाफ मैच में पाकिस्तान के शोएब अख्तर बाउंसर डाल रहे थे और उन्हें पुल शॉट खेलने के लिए उकसा रहे थे। सहवाग को इस शॉट को खेलने में परेशानी हो रही थी। अख्तर जब लगातार कमेंट कर रहे थे तो वीरू ने उन्हें सचिन तेंदुलकर को यह गेंद डालने को कहा। अख्तर की इस गेंद पर सचिन ने आसानी से छक्का जड़ दिया। वीरू इसके बाद अख्तर के पास पहुंचे और कहा, बाप-बाप होता है और बेटा-बेटा।

गौतम गंभीर बनाम शाहिद अफरीदी

विवाद -5 साल 2007 में जब पाकिस्तान की टीम भारत दौरे पर आई थी तब पांच वनडे मैचों की सीरीज का तीसरा मुकाबला कानपुर के ग्रीन पार्क स्टेडियम में खेला गया, जिसमें गौतम गंभीर और शाहिद अफरीदी के बीच जमकर बहस हुई। गंभीर, शाहिद की गेंद पर सिंगल के लिए दौड़ रहे थे। दोनों की टक्कर हुई और गंभीर को लगा कि अफरीदी ने जानबूझकर ऐसा किया है। उसके बाद दोनों में बहस होने लगी।

गौतम गंभीर बनाम कामरान अकमल

विवाद -6 2010 एशिया कप के दौरान पाकिस्तानी विकेटकीपर कामरान अकमल बल्लेबाजी कर रहे गौतम गंभीर के खिलाफ बेवजह अपील कर उन्हें परेशान कर रहे थे। तब गंभीर और अकमल के बीच खूब बहस हुई। आखिरकार धौनी को बीच बचाव करना पड़ा।

हरभजन सिंह बनाम शोएब अख्तर

विवाद -7 2010 एशिया कप में भारत को पाकिस्तान के खिलाफ मैच में आखिरी सात गेंद में जीत के लिए सात रन बनाने थे। ऐसे में शोएब अख्तर ने हरभजन सिंह को परेशान करने वाली गेंद डालने के बाद जैसे ही उन्हें उकसाया, इन दोनों के बीच मैदान पर जमकर बहस शुरु हो गई। हरभजन ने इसके बाद मुहम्मद आमिर की गेंद पर छक्का जड़कर भारत को जीत दिला दी। जीत दिलाने के बाद हरभजन ने अख्तर को अपना आक्रामक रुख दिखाया।

विश्व कप में पाकिस्तान के खिलाफ रिकॉर्ड 6-0

पहली जीत : 1992 के हीरो सचिन तेंदुलकर
भारत और पाकिस्तान की टीमें विश्व कप में छह बार भिड़ी हैं और हर बार टीम इंडिया को जीत मिली। विश्व कप में पहली बार दोनों टीमें 1992 में भिड़ीं, जिसमें टीम इंडिया को जीत मिली है। यह सिलसिला आज भी जारी है। सिडनी में हुए मैच में टॉस जीतकर भारत ने पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया और सचिन तेंदुलकर के नाबाद 54 रनों की मदद से सात विकेट के नुकसान पर 216 रन बनाए। जवाब में पाकिस्तान की टीम 173 रनों पर ही सिमट गई। पाकिस्तान की ओर से आमिर सोहेल ने 62 रन बनाए थे। भारत की ओर से कपिल देव, मनोज प्रभाकर और जवागल श्रीनाथ ने दो-दो विकेट लिए थे। युवा तेंदुलकर को 'मैन ऑफ द मैच' चुना गया।

दूसरी जीत : 1996 में सिद्धू ने जीत दिलाई
1996 विश्व कप में दोनों टीमें क्वार्टर फाइनल में भिड़ीं। इस बार भी भारतीय टीम ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी की और सलामी बल्लेबाज नवजोत सिंह सिद्धू के 93 रनों की बदौलत 287 रन बनाए। पाकिस्तान ने बेहतरीन शुरुआत की, लेकिन अनिल कुंबले और वेंकटेश प्रसाद के तीन-तीन विकेट की बदौलत पाकिस्तानी टीम 248 रनों पर पवेलियन लौट गई। भारत यह मुकाबला 39 रनों से जीता और सिद्धू मैन ऑफ द मैच बने।

तीसरी जीत : 1999 में वेंकटेश का जलवा
मैनचेस्टर में हुए इस मुकाबले में भारत ने एक बार फिर दमदार प्रदर्शन किया और 47 रनों से जीत दर्ज की। भारत ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी की और छह विकट खोकर 227 रन बनाए। राहुल द्रविड़ ने टीम की ओर से सबसे अधिक 61 रन बनाए। जवाब में पाकिस्तान की पूरी टीम महज 180 रनों पर सिमट गई। पाकिस्तान की ओर से इंजमाम उल हक ने 41 रन बनाए। मैन ऑफ द मैच वेंकटेश प्रसाद ने धमाकेदार प्रदर्शन करते हुए पांच विकेट चटकाए।

चौथी जीत : 2003 में फिर सचिन बने महान
2003 विश्व कप में सेंचुरियन में खेले गए मुकाबले में सौरव गांगुली की कप्तानी में भारतीय टीम ने फाइनल तक का सफर तय किया, लेकिन ऑस्ट्रेलिया से हार गई। इस विश्व कप में भारत ने पाकिस्तान को भी छह विकेट से शिकस्त दी थी। पाकिस्तान ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए सईद अनवर (101) के शतक की बदौलत सात विकेट खोकर 273 रन बनाए। भारत ने पाकिस्तान के गेंदबाजों को मुंहतोड़ जवाब देते हुए 45.4 ओवर में चार विकट खोकर लक्ष्य को हासिल कर लिए। मैन ऑफ द मैच तेंदुलकर ने 98 रनों की अहम पारी खेली।

पांचवीं जीत : 2011 में सचिन मैन ऑफ द मैच
2011 में दूसरी बार विश्व कप का खिताब जीतने से पहले इस संस्करण के सेमीफाइनल में भारत का सामना पाकिस्तान से हुआ, जहां मेजबान टीम ने 29 रनों से जीत दर्ज की। मोहाली में भारत ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए नौ विकेट खोकर 260 रन बनाए। पाकिस्तान की टीम जवाब में 231 रनों पर ही ढेर हो गई। इस मुकाबले में भी तेंदुलकर ने शानदार बल्लेबाजी करते हुए 85 रनों की पारी खेली और मैन ऑफ द मैच चुने गए।

छठी जीत : 2015 में भारत की एकतरफा जीत
2015 विश्व कप में भारत ने पाकिस्तान के खिलाफ 76 रनों से एकतरफा जीत दर्ज की। भारत ने टॉस जीता और पहले बल्लेबाजी करते हुए मैन ऑफ द मैच विराट कोहली (107) के शतक के दम पर सात विकेट खोकर 300 रन बनाए। पाकिस्तान की टीम जवाब में 224 रनों पर सिमट गई। इस मैच में भारत की ओर से मुहम्मद शमी ने चार विकेट लिए थे।

फिंच का हल्ला बोल

जागरण न्यूज नेटवर्क, नई दिल्ली

टक्कर
- ऑस्ट्रेलियाई कप्तान ने खेली 153 रन की पारी, ऑस्ट्रेलिया ने दी श्रीलंका को 87 रनों से शिकस्त

कप्तान आरोन फिंच (153) और स्टीव स्मिथ (73) की बेहतरीन पारियों के दम पर गत विजेता ऑस्ट्रेलिया ने शनिवार को आइसीसी विश्व कप के अपने पांचवें मैच में श्रीलंका को 87 रनों से शिकस्त दे दी। ऑस्ट्रेलिया ने पहले बल्लेबाजी करते हुए सात विकेट पर 334 रन बनाए। जवाब में श्रीलंका की टीम 45.5 ओवर में 247 रनों पर पवेलियन लौट गई।
इससे पहले, श्रीलंका ने टॉस जीतकर गेंदबाजी करने का फैसला किया, लेकिन उसके गेंदबाज ऑस्ट्रेलियाई बल्लेबाजी के सामने असरदार साबित नहीं हो सके। फिंच और स्मिथ ने तीसरे विकेट के लिए 173 रनों की साझेदारी की। इन दोनों के अलावा अंत में ग्लेन मैक्सवेल ने तेजी से नाबाद 46 रन बनाकर ऑस्ट्रेलिया को मजबूत स्कोर दिया।

फिंच ने शुरू से ही अपने पैर विकेट पर जमाए और अपने सलामी जोड़ीदार डेविड वार्नर के साथ मिलकर पहले विकेट के लिए 80 रन जोड़े। दोनों ने शुरुआत धीमी की थी, लेकिन एक मजबूत स्कोर की नींव जरूर रख दी थी। फिंच की अपेक्षा वार्नर ज्यादा धीमे खेले। उन्होंने 48 गेंदों पर दो चौकों की मदद से 26 रन बनाए। धनंजय डिसिल्वा ने उन्हें बोल्ड कर श्रीलंका को पहली सफलता दिलाई।

उस्मान ख्वाजा (10) ज्यादा देर टिक नहीं सके। डिसिल्वा ने 100 के कुल स्कोर पर उन्हें पवेलियन भेज दिया। यहां से फिंच और स्मिथ ने पारी को आगे बढ़ाया और रनगति भी तेज की। 23 ओवर में टीम का स्कोर दो विकेट पर 100 रन था और इन दोनों ने यहां से तेजी से रन बटोर अगले तकरीबन 20 ओवर में 173 रन जोड़े। फिंच 273 के कुल स्कोर इसुरु उदाना का शिकार हो गए। उन्होंने 132 गेंदों पर 15 चौके और पांच छक्कों की मदद से शतकीय पारी खेली। कप्तान के जाने के पांच रन बाद लसित मलिंगा ने स्मिथ को बोल्ड कर ऑस्ट्रेलिया को चौथा झटका दिया। उन्होंने 59 गेंदों पर सात चौके और एक छक्का मारा।

अब टीम को आगे ले जाने की जिम्मेदारी मैक्सवेल पर आ गई थी जिसमें वह सफल रहे। पांच रनों से अर्धशतक से चूकने वाले मैक्सवेल ने 25 गेंदों पर पांच चौके और एक छक्का जड़ा, जिसकी मदद से ऑस्ट्रेलिया बड़ा स्कोर बनाने में सफल हुई। एलेक्स कैरी (04) और पैट कमिस (00) रन आउट हुए। मिशेल स्टार्क पांच रनों पर नाबाद लौटे। श्रीलंका के लिए उदाना और डिसिल्वा ने दो-दो विकेट अपने नाम किए। मलिंगा ने एक विकेट लिया।

श्रीलंका के खिलाफ हुए मैच में शॉट खेलते ऑस्ट्रेलिया के कप्तान आरोन फिंच। एपी

भारत बनाम पाकिस्तान मैच युद्ध की तरह

जैफ थॉमसन
इनस्विंगर

भारत बनाम पाकिस्तान भिड़ंत मेरे लिए क्रिकेट जगत का सबसे बड़ा मैच है। यह सिर्फ एक मैच नहीं है, बल्कि एक युद्ध है। ऐसे उच्च तीव्रता के मैच का पूर्वावलोकन करने से पहले बैठकर मौसम की रिपोर्ट का पता करना थोड़ा अजीब है। मौसम के ठंडा रहने की उम्मीद है और दोपहर के बाद बारिश खेल का मजा खराब कर सकती है। मौसम की रिपोर्ट बताती है कि मैच के दौरान कोटे के पूरे 100 ओवर होने की संभावना कम है। मुझे नहीं पता कि मैचों का कार्यक्रम किसने बनाया है, लेकिन यह निश्चित है कि उन्होंने बड़े मौके को गंवा दिया।

मेरा मतलब है कि क्या आप इस बात पर विश्वास कर सकते हैं कि दोनों टीमों के थिंक टैंक एक-दूसरे की ताकत और कमजोरियों के अनुसार रणनीति बनाने के बजाय इस बात पर चर्चा करने में ज्यादा व्यस्त होंगे कि यदि मैच नहीं होता है तो किसको ज्यादा फायदा या नुकसान होगा। कितनी शर्म की बात है। ये दोनों टीमें एक-दूसरे के खिलाफ ज्यादा नहीं खेलती हैं और दोनों देशों के प्रशंसक एवं पूरी दुनिया इस दिन का इंतजार करती है, उसके बावजूद सबसे बड़ी बात जिस पर हम चर्चा कर रहे हैं वह मौसम है। इससे भी ज्यादा बदतर यह कि कोई रिजर्व दिन भी नहीं है ताकि मैच को फिर से खेला जा सके। हालांकि, परंपरागत रूप से ओल्ड ट्रैफर्ड अप्रत्याशित मौसम के लिए जाना जाता है, इसलिए यहां के मैदान में दुनिया के इस हिस्से के अन्य मैदानों की तुलना में पानी को बाहर निकालने की बेहतर सुविधा है। वापस मैच पर आते हैं। मुहम्मद आमिर, वहाब रियाज, शाहीन अफरीदी को पिच से मदद मिलेगी, लेकिन भारत का बल्लेबाजी क्रम स्तरीय है।

पाकिस्तान के खिलाफ मैच का कोई दबाव नहीं : कोहली

अभिषेक त्रिपाठी, मैनचेस्टर

तैयारी
- मौसम और परिस्थिति के हिसाब से चुनेंगे अंतिम एकादश

भारत और पाकिस्तान की डेढ़ अरब जनता पिछले तीन दिन से यही सोच रही है कि रविवार को क्या होगा, लेकिन भारतीय टीम के कप्तान विराट कोहली पाकिस्तान के खिलाफ होने वाले मैच से पहले दबाव में नहीं हैं। उन्होंने तो यहां तक कहा कि विपक्षी टीम के बदलने से कोई एक मुकाबले का महत्व खास या कम नहीं हो जाता। उन्होंने कहा कि ड्रेसिंग रूम के माहौल में कोई बदलाव नहीं आया है।

कोहली ने कहा कि पाकिस्तान के खिलाफ यह विश्व कप मुकाबला हमेशा नहीं चलता रहेगा। यह शुरू और खत्म भी होगा। अगर नतीजा भारत के पक्ष में नहीं भी गया तो तो 50 ओवर का यह टूर्नामेंट जारी रहेगा। मैं कुछ ज्यादा बड़ा बदलाव नहीं देख रहा हूं। अगर आप अच्छा क्रिकेट खेलें, विपक्षी टीम के मुकाबले अपने बेसिक्स सही रखें तो आप मैच जीत सकते हैं। अगर हम अपनी प्रतिभा का अच्छा इस्तेमाल कर पाए तो मेरी नजर में इतना काफी होगा। हमारा ध्यान इन्हीं चीजों पर होगा। अब चूंकि यह लंबा टूर्नामेंट है तो हम अपने प्रदर्शन में निरंतरता रखना चाहेंगे।

ड्रेसिंग रूम में माहौल नहीं बदला : कोहली ने कहा कि ड्रेसिंग रूम का मूड और माहौल नहीं बदला है। विपक्षी टीम बदलने से किसी मैच की महत्ता नहीं बदल जाती। हम मूलभूत काम बेहतर करना चाहते हैं। जब उनसे पाकिस्तान के खिलाफ मैच से पहले दबाव के बारे में पूछा गया तो उन्होंने कहा कि अगर आप किसी दिन अच्छा ना खेलें तो विपक्षी टीम जीत सकती है। एक फैन के लिए भारत और पाकिस्तान का मुकाबला अलग होता है। खिलाड़ी अपने मनोभावों को नियंत्रित रखते हैं। हम प्रोफेशनल हैं और किसी भी टीम के खिलाफ अपने प्लान को सही तरीके से मैदान पर उतारने की कोशिश करते हैं।

आमिर से कोई प्रतिद्वंद्विता नहीं : उन्होंने कहा कि क्रिकेट एक टीम स्पोर्ट्स है और कोई एक खिलाड़ी मैच पर बहुत ज्यादा असर नहीं डालता। कोहली ने कहा कि भारतीय टीम की गेंदबाजी यूनिट काफी अच्छी मानसिक स्थिति में है। उन्होंने पहले दो मैचों में अच्छा प्रदर्शन किया है। मैं पाकिस्तान के खिलाफ मुकाबले से पहले उनकी तैयारियों को लेकर फिक्रमंद नहीं हूं। मुहम्मद आमिर ने दो साल पहले चैंपियंस ट्रॉफी के फाइनल में कोहली को दो बार आउट किया था, लेकिन एक बार नोबॉल हो गई थी। जब उनसे उस प्रतिद्वंद्विता के बारे में पूछा गया तो उन्होंने कहा कि मैं आमिर के साथ होने वाली व्यक्तिगत प्रतिस्पर्धा पर अपना ध्यान केंद्रित नहीं कर रहा। मैं टीआरपी के लिए कुछ नहीं कहूंगा। आपको किसी भी गेंदबाज की ताकत की कद्र करनी चाहिए। आपको किसी भी गेंदबाज के खिलाफ रन बनाने की अपनी क्षमता पर भरोसा होना चाहिए। मैं सिर्फ लाल और सफेद गेंद पर अपना ध्यान केंद्रित करता हूं। अन्य 10 खिलाड़ी भी हैं जो मैच पर अपना प्रभाव डाल सकते हैं। चैंपियंस ट्रॉफी में आमिर ने शिखर धवन, रोहित शर्मा और कोहली को पहले नौ ओवर के अंदर ही निपटा दिया था और भारतीय टीम वह मैच 180 रनों से हारी थी।

आमिर के फॉर्म में उसके बाद से थोड़ी गिरावट आई, लेकिन ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ पांच विकेट लेकर उन्होंने भारतीय बल्लेबाजों की चिंता बढ़ा दी है। कोहली ने यह भी नहीं बताया कि क्या वह अगले मैच में गेंदबाजी क्रम में कोई परिवर्तन करेंगे या नहीं। हालांकि उन्होंने सिर्फ इतना कि वह परिस्थिति और मौसम के अनुसार बदलाव करेंगे।

भारत को धवन की कमी खलेगी

सुनील गावस्कर
कलम से

नॉटिंघम से मैनचेस्टर तक ड्राइव करते वक्त कहीं भी बारिश नहीं मिली। हालांकि, कई जगह काले बादल जरूर दिखाई दिए और यहां तक कि लंकाशायर में तो धूप भी खिली रही। मौसम को देखते हुए कुछ खेल की उम्मीद बंधी है और हम सभी खेल प्रेमियों के लिए यह अच्छी खबर है। हां, यह सही है कि मुकाबला भारत-पाकिस्तान के बीच है, मगर इससे ज्यादा अहम यह है कि अंततः हमें कुछ खेल देखने को मिलेगा। इंग्लैंड और वेस्टइंडीज के बीच मैच में इंग्लैंड ने दिखा दिया कि आखिर क्यों वे खिताब के प्रबल दावेदार है।

पाकिस्तान दो मैच हार चुका है और एक मैच बारिश से धुल चुका है। ऐसे में उन्हें टूर्नामेंट में बने रहने के लिए भारत के खिलाफ हर हाल में जीतना होगा। हालांकि, उनके लिए यह आसान नहीं होगा, क्योंकि उनकी बल्लेबाजी में निरंतरता नहीं है। आमिर को छोड़कर उनके गेंदबाज भी मुश्किल खड़ी नहीं कर पा रहे हैं। दो साल पहले चैंपियनशिप ट्रॉफी फाइनल में आमिर ने भारत की बल्लेबाजी को ध्वस्त कर दिया था। पाकिस्तान को उम्मीद होगी कि आमिर फिर से ऐसा ही प्रदर्शन करे।

भारत को शिखर धवन की कमी खलेगी। यह विजय शंकर जैसे खिलाड़ियों की लिए एक मौका है, जो यह साबित करना चाहते हैं कि वह इस जंग के लिए तैयार हैं। वह दिखा चुके हैं कि वह एक अच्छे बल्लेबाज के साथ अच्छे फील्डर भी हैं। मगर उन्हें धैर्य रखने की जरूरत है। भारत तीसरे तेज गेंदबाज के तौर पर मुहम्मद शमी को खिला सकता है। टीम में सिर्फ चहल ही एकमात्र स्पिनर होंगे। यह एक ऐसा मैच है जिसमें आप बहुत ज्यादा बदलाव नहीं चाहते हैं। सिर्फ चोट और मौसम ही बदलाव की वजह से हो सकती हैं।

डिजिटल प्लेटफॉर्म पर कदम रखेंगे छेत्री

मुंबई, आइएएनएस : भारतीय फुटबॉल टीम के कप्तान सुनील छेत्री वेब सीरीज बॉम्बर्स के साथ डिजिटल प्लेटफॉर्म पर कदम रखेंगे। यह वेब सीरीज फुटबॉल पर आधारित है। छेत्री ने कहा कि यह कहानी ऐसे किरदारों के बारे में है जो अपने जीवन में दिशा भटक जाते हैं और फुटबॉल उन्हें एकसाथ लाता है। इसमें फुटबॉल उन्हें अपनी जीवन को सवारने का एक मौका देता है।

हमारे लिए बोलिविया के खिलाफ मुकाबला कठिन था। हाफ-टाइम पर कोच (टीटे) ने हमें गेंद पर ध्यान केंद्रित करने और अधिक नियंत्रण बनाने के लिए कहा। हम यह करने में कामयाब रहे। पहले गोल ने मैच का रुख बदल दिया।
-फिलिप कौटिन्हो, ब्राजीलियन फुटबॉलर

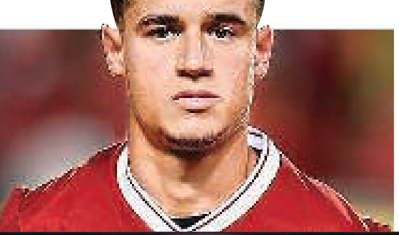

न्यूज गैलरी

हॉकी में भारत ने उरुग्वे को 4-1 से शिकस्त दी

हिरोशिमा : भारतीय महिला हॉकी टीम ने शानदार प्रदर्शन करते हुए शनिवार को यहां एफआइएच सीरीज फाइनल्स के अपने पहले मैच में उरुग्वे को 4-1 से करारी शिकस्त दी। विश्व की नौवें नंबर की टीम भारत के लिए इस मैच में रानी रामपाल, गुरजीत कौर, ज्योति और लालरेमसिआमी ने गोल दागे। पहले क्वार्टर में भारत ने बेहतरीन शुरुआत की और कप्तान रानी ने 10वें मिनट में ही अपनी टीम को बढ़त दिला दी। भारत के लिए दूसरा क्वार्टर भी बेहतरीन रहा। 21वें मिनट में भारत को पेनाल्टी कॉर्नर मिला, गुरजीत ने गेंद को गोल में डालने में किसी प्रकार की गलती नहीं की। उरुग्वे की टीम पर दबाव बनता गया, जिसका लाभ भारतीय टीम ने तीसरे और चौथे क्वार्टर में भी उठाया। 40वें मिनट में ज्योति ने गोल करके स्कोर 3-0 कर दिया, फिर 50वें मिनट में लालरेमसिआमी ने भारत का स्कोर 4-0 कर दिया। उरुग्वे के लिए एकमात्र गोल 51वें मिनट में मारिया एचे ने किया। टूर्नामेंट में भारत का अगला मैच रविवार को पोलैंड के खिलाफ होगा। (आइएएनएस)

भारतीय जूनियर महिला टीम 6-0 से जीती

ब्रानोविची (बेलारूस) : चेतना के दो गोल से भारत की जूनियर महिला हॉकी टीम ने शनिवार को यहां बेलारूस डेवलपमेंट टीम को 6-0 से शिकस्त दी। इस जीत से टीम ने पांच मैचों की सीरीज का बेलारूस दौरा दो जीत, दो हार और एक ड्रॉ के साथ खत्म किया। चेतना ने दो गोल किए, जबकि गगनदीप, मरियाना कुजुर, अजमिना और लालरिंडीकी एक-एक गोल दागे। (प्रेट्र)

अदिति अशोक संयुक्त नौवें स्थान पर

ग्रैंड रैपिड्स (अमेरिका) : भारतीय महिला गोल्फर अदिति अशोक मेजर एलपीजीए क्लासिक गोल्फ टूर्नामेंट के दूसरे दौर के 16 होल के खेल तक छह अंडर के स्कोर के साथ संयुक्त रूप से 16वें स्थान पर हैं। अदिति शुक्रवार को उन 28 खिलाड़ियों में शामिल थीं जो दूसरे दौर का अपना खेल पूरा नहीं कर सकीं। बारिश के कारण पहले दिन का खेल प्रभावित हुआ था। पहला दौर एक अंडर-71 का कार्ड खेलने वाली अदिति का कुल स्कोर सात अंडर का है। वहीं, डेकाटूर में खेले जा रहे एक अन्य टूर्नामेंट 'फोर्सिथ क्लासिक' में भारतीय खिलाड़ी शर्मिला निकोलट पहले दौर के बाद संयुक्त रूप से 42वें स्थान पर है। (प्रेट्र)

फुटबॉल डायरी ▸ उद्घाटन मुकाबले में बोलिविया को 3-0 से हराया, फिलिप कौटिन्हो ने दागे दो गोल

ब्राजील का विजयी आगाज

साओ पाउलो, एएफपी : फिलिप कौटिन्हो के दो गोल की मदद से मेजबान ब्राजील ने कोपा अमेरिका में बोलिविया को 3-0 से हराकर विजयी शुरुआत की। इस दौरान कौटिन्हो ने स्टार फुटबॉलर नेमार की कमी महसूस नहीं होने दी। बार्सिलोना के लिए खेलने वाले कौटिन्हो ने खेल के 50वें मिनट में पेनाल्टी किक के जरिये पहला गोल दागा और इसके तीन मिनट बाद ही उन्होंने हेडर के जरिये गोल करके ब्राजील को दोहरी बढ़त दिलाई। वहीं स्थानापन्न एवर्टन ने निर्धारित समय से पांच मिनट पहले बेहतरीन गोल किया, जिसकी बदौलत साओ पाउलो में खिताब की प्रबल दावेदार टिटे की टीम ने ग्रुप-ए में आसान जीत दर्ज की।

एक महिला द्वारा दुष्कर्म के आरोपों का सामना कर रहे नेमार चोटिल होकर टूर्नामेंट से बाहर हो गए थे, जिसकी वजह से इस टूर्नामेंट की चमक फिकी नजर आ रही थी, लेकिन कौटिन्हो ने अपने घरेलू समर्थकों को उनकी कमी महसूस नहीं होने दी। मुकाबले के दौरान कई मौकों पर ब्राजील के दर्शकों ने टिटे की टीम का मजाक उड़ाया।

सफेद जर्सी में उतरी टीम : इस मुकाबले के दौरान ब्राजील की टीम अपनी परंपरागत पीली जर्सी के बजाय सफेद जर्सी में नजर आई। 60 साल से भी ज्यादा समय बाद ब्राजील की टीम किसी प्रतियोगी मुकाबले में पहली बार सफेद जर्सी में नजर आई। 1957 में पिछली बार ब्राजील की टीम सफेद जर्सी में नजर आई थी।

दुष्कर्म मामले में रोनाल्डो ने कोर्ट में जमा कराए कागजात

लास एंजिलिस, एएफपी : इटालियन क्लब जुवेंटस के स्टार स्ट्राइकर क्रिस्टियानो रोनाल्डो ने अमेरिकी महिला द्वारा दुष्कर्म के आरोपों से जुड़े पेपर कोर्ट में जमा करा दिए। इस बात की जानकारी रोनाल्डो के वकील ने दी। पांच बार के बैलन डि ओर विजेता रोनाल्डो पर कैथरीन मायोर्गा नामक महिला ने उसके साथ उसके साथ 2009 में दुष्कर्म के आरोप लगाए थे। हालांकि मैनचेस्टर युनाइटेड और रीयल मैड्रिड के 34 वर्षीय पूर्व खिलाड़ी रोनाल्डो ने अपने पर लगे आरोपों को सिरे से खारिज किया था। खबरें थी कि रोनाल्डो और मायोर्गा के बीच कोर्ट के बाहर ही वित्तीय निपटारा हो गया था, लेकिन मीटू मुहिम के जरिये उन्होंने पुलिस में रोनाल्डो के खिलाफ शिकायत दर्ज कराई थी।

ओजिल की शादी पर विवाद

इस्तांबुल, एएनआइ : जर्मनी के पूर्व मिडफील्डर मेसुत ओजिल की हाल ही में हुई एक खर्चीली शादी में तुर्की के राष्ट्रपति रजब तैयब इरदुगान की मौजूदगी ने विवाद खड़ा कर दिया है। तुर्की मूल के जर्मन फुटबॉलर ओजिल ने सात जून को इस्तांबुल के एक आलीशान होटल में अपनी दोस्त और अदाकारा एमिनी गुल्से से शादी की जिसमें इरदुगान के अलावा कई नामी हस्तियां शरीक हुईं। 23 जून को इस्तांबुल में मायोराल चुनाव होने हैं। इरदुगान को ओजिल का सबसे करीबी माना जाता है जो राजनीति में आने से पहले एक पेशेवर फुटबॉलर हुआ करते थे। इरदुगान के साथ 2018 में एक फोटो आने के बाद ओजिल पहली बार राजनीति को लेकर सुर्खियों में आए थे।

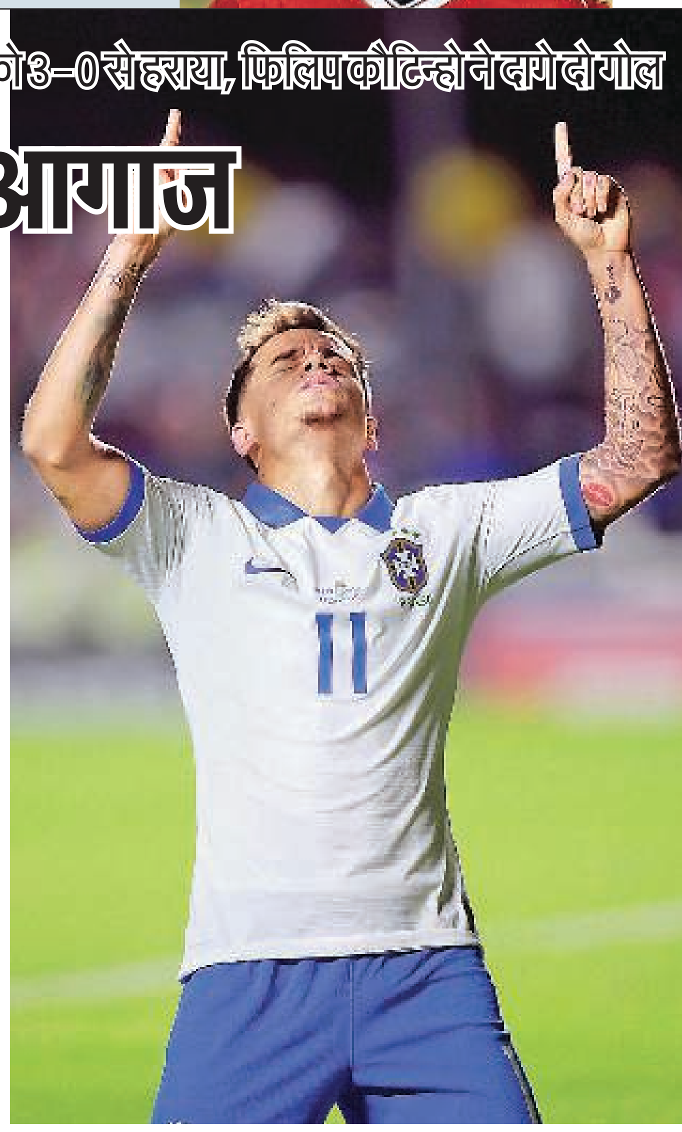

गोल करने के बाद जश्न मनाते फिलिप कौटिन्हो। एएफपी

इंग्लैंड के कप्तान मोर्गन और रॉय का होगा स्कैन

साउथैंप्टन, एएफपी : वेस्टइंडीज के खिलाफ विश्व कप मुकाबले में शुक्रवार को चोटिल हुए इंग्लैंड के कप्तान इयोन मोर्गन और सलामी बल्लेबाज जेसन रॉय का स्कैन होगा। मेजबान टीम उम्मीद कर रही होगी कि दोनों खिलाड़ी मंगलवार को अफगानिस्तान के खिलाफ होने वाले मुकाबले से पहले ठीक हो जाएं। वेस्टइंडीज के खिलाफ दोनों खिलाड़ियों को चोट लगी। इंग्लैंड ने मैच आठ विकेट से अपने नाम किया। लक्ष्य का पीछा करने के दौरान मोर्गन और रॉय बल्लेबाजी करने नहीं आए। मोर्गन को पीठ में, जबकि रॉय को पैर में चोट लगी है। रॉय के मैदान से बाहर होने के बाद इंग्लैंड क्रिकेट बोर्ड (ईसीबी) ने कहा कि उनकी आगे जांच करने की जरूरत है। मेजबान टीम के कप्तान को 40वें ओवर में पीठ में तकलीफ हुई। मोर्गन ने कहा कि हम देखेंगे कि अगले 48 घंटों में क्या होता है। उम्मीद है कि हमें कोई गहरी चोट ना लगी हो। जब दो खिलाड़ी चोटिल होते हैं तो चिंता होती है, लेकिन हमें घबराने की जरूरत नहीं है। इंग्लैंड की टीम फिलहाल, तालिका में चार मैचों में छह अंकों के साथ दूसरे स्थान पर काबिज है।

विश्व कप डायरी

रूट टीम को जोड़कर रखते हैं: मोर्गन

साउथैंप्टन, एएनआइ : इंग्लैंड के कप्तान इयोन मोर्गन ने जो रूट की प्रशंसा करते हुए इस स्टार बल्लेबाज को ऐसा 'गोंद' करार दिया जो टीम को एकजुट रखता है। रूट ने शुक्रवार को विश्व कप में दूसरा शतक जड़ा, जिससे इंग्लैंड ने यहां वेस्टइंडीज पर आठ विकेट की शानदार जीत हासिल की और इससे कप्तान मोर्गन ज्यादा प्रभावित थे। मोर्गन ने मैच के बाद कहा कि मैं बहुत खुश हूं। वह हमारे लिए इतना अहम खिलाड़ी है कि वह ऐसी गोंद की तरह है जो हर चीज को एक साथ मिलाकर रखता है। वह कभी भी एक गेंद में एक रन से कम नहीं बनाता।

जोफ्रा आर्चर और मार्क वुड की शानदार गेंदबाजी के बाद जो रूट (नाबाद 100) की शानदार शतकीय पारी की बदौलत इंग्लैंड ने साउथैंप्टन के रोज बाउल में वेस्टइंडीज को आठ विकेट से शिकस्त दी थी।

आचार संहिता के उल्लंघन पर ब्रेथवेट को फटकार

दुबई, एएफपी : आइसीसी की आचार संहिता के पहले स्तर का उल्लंघन करने के लिए वेस्टइंडीज के ऑलराउंडर कार्लोस ब्रेथवेट को एक नकारात्मक अंक (डिमेरिट प्वाइंट) दिया गया। ब्रेथवेट को इंग्लैंड के खिलाफ शुक्रवार को खेले गए मैच में खिलाड़ियों एवं खिलाड़ी समर्थन कर्मियों के लिए बनाई गई आचार संहिता के अनुच्छेद 2.8 का उल्लंघन करने का दोषी पाया गया। मेजबान टीम के खिलाफ खेले गए मैच के 43वें ओवर में ब्रेथवेट ने अंपायर के निर्णय पर दुख जाहिर किया था जिसके कारण उन्हें एक नकारात्मक अंक दिया गया है। ब्रेथवेट ने अपनी गलती मानते हुए मैच रेफरी डेविड बून के निर्णय को स्वीकार किया जिस कारण किसी प्रकार के आधिकारिक सुनवाई की जरूरत नहीं हुई। मैदान पर मौजूद अंपायर सुंदरम रवि एवं कुमार धर्मसेना, तीसरे अंपायर रॉड टकर और चौथे अधिकारी पॉल विल्सन ने खिलाड़ी पर आरोप लगाए। पहले स्तर का उल्लंघन करने पर ज्यादा से ज्यादा खिलाड़ी को आधिकारिक रूप से सचेत किया जाता है, उसकी मैच फीस में 50 प्रतिशत कटौती की जाती है या उसे एक नकारात्मक अंक दिया जाता है।

स्टोइनिस पर अगले दो सप्ताह में निर्णय लिया जाएगा

लंदन, आइएएनएस : ऑलराउंडर मार्कस स्टोइनिस बांग्लादेश के खिलाफ होने वाले मैच के लिए ऑस्ट्रेलियाई टीम के साथ नॉटिंघम जाएंगे और वहीं निर्णय लिया जाएगा कि वह टीम के साथ विश्व कप के बाकी बचे मैचों के लिए रहेंगे या नहीं। ऑस्ट्रेलिया की टीम टूर्नामेंट में अपना अगला मुकाबला 20 जून को खेलेगी। पाकिस्तान के खिलाफ हुए पिछले मुकाबले में भी स्टोइनिस चोटिल होने के कारण नहीं खेले थे। मिशेल मार्श को इसी कारण इंग्लैंड बुलाया गया। 29 वर्षीय स्टोइनिस श्रीलंका के खिलाफ द ओवल मैदान पर शनिवार को हुए मैच में बाहर बैठे थे। स्टोइनिस ने शुक्रवार को हालांकि अभ्यास किया था। टूर्नामेंट में उनका प्रदर्शन कुछ खास नहीं रहा है, उन्होंने अब तक केवल 19 रन बनाए हैं और चार विकेट लिए हैं। कप्तान आरोन फिंच ने मार्श पर भरोसा दिखाया जिन्होंने टीम के साथ ट्रेनिंग करना भी शुरू कर दिया है। फिंच ने कहा कि हां, इसलिए मार्श यहां हैं। अगर स्टोइनिस अगले कुछ दिनों में ठीक नहीं होते हैं तो एहतियात बरतने के लिए हमने मार्श को बुलाया है।

भारत ने जीते दो कांस्य पदक

डेन बोश, प्रेट्र : तीरंदाज ज्योति सुरेखा वेनम की मदद से भारत ने यहां शनिवार को तीरंदाजी विश्व चैंपियनशिप के कंपाउंड महिला वर्ग में दो कांस्य पदक हासिल किए। ज्योति ने तुर्की की विश्व की दूसरे नंबर की खिलाड़ी येसिम बोस्टन को शूट ऑफ में 10-9 से हराकर कांस्य पदक अपने नाम किया। एक समय दोनों खिलाड़ियों का स्कोर पांच दौर के बाद 145-145 था जिसके बाद नतीजा पाने के लिए शूट ऑफ का सहारा लिया गया। ज्योति ने कहा, 'हम पदक जीतकर खुश हैं।'

इसके अलावा ज्योति सुरेखा वेनम ने मुस्कान किरार और राज कौर की महिला कंपाउंड टीम ने पिछड़ने के बाद वापसी करते हुए तुर्की को तीन अंकों से हराकर दिन का पहला कांस्य पदक भारत के नाम कराया था। भारतीय टीम की जीत में एशियन गेम्स की रजत पदक विजेता ज्योति ने अहम भूमिका निभाई। खराब शुरुआत के बाद उन्होंने आठ में से छह परफेक्ट-10 के निशाने लगाए, जिससे भारत यह मुकाबला 229-226 से जीतने में कामयाब रहा। मुकाबले के पहले दौर में भारतीय टीम 55-57 से पिछड़ रही थी। दूसरे दौर में ज्योति ने लय हासिल की और भारत 58-53 से आगे हो गया। तीसरे दौर में दोनों टीमों के बीच कड़ी टक्कर देखने को मिली और स्कोर 58-58 का रहा। भारतीय टीम ने चौथे दौर में भी 58 का स्कोर किया, जबकि तुर्की की टीम 57 अंक ही हासिल कर सकी।

वहीं, विश्व चैंपियनशिप में भारतीय पुरुष रिकर्व पहली बार स्वर्ण पदक जीतने के इरादे से उतरेगी। 14 वर्षों के बाद फाइनल में पहुंची भारतीय टीम के सामने रविवार को खेले जाने वाले मुकाबले में चीन की चुनौती होगी।

2011 विश्व कप जीत के बाद 2003 का मैच यादगार : सचिन

नई दिल्ली, आइएएनएस : भारत और पाकिस्तान के बीच विश्व कप में होने वाले मैच के क्या मायने होते हैं इस बात को क्रिकेट के भगवान से बेहतर कौन जान सकता है। भारत और पाकिस्तान के बीच विश्व कप में अब तक छह मैच खेले जा चुके हैं, जिनमें से सचिन ने पांच मैचों में हिस्सा लिया है। सचिन ने वर्ष 1992, 1996, 1999, 2003 और 2011 में विश्व कप में पाकिस्तान के खिलाफ हुए मैच खेले हैं।

सचिन का कहना है कि वर्ष 2011 में विश्व कप जीतने के बाद उनकी जिंदगी में 2003 विश्व कप में पाकिस्तान के खिलाफ खेला गया मैच उनके पसंदीदा विश्व कप मैचों में से एक है। सचिन ने उस मैच में 98 रनों की पारी खेली थी। सचिन ने कहा कि 2011 में विश्व कप जीतने के बाद अगर कोई यादगार पल है तो वो है 2003 में पाकिस्तान के खिलाफ सेंचुरियन में खेला गया मैच।

वह कहते हैं, उस मैच को लेकर जो माहौल बना था और हम जिस तरह से खेले और जीते थे वो शानदार था। साथ ही हमने जिस तरह से उस जीत का जश्न मनाया था और उसके बाद हम टूर्नामेंट में जिस तरह से आगे बढ़े थे वो बेहतरीन था, इसमें कोई शक नहीं है, वो विशेष है। सचिन ने उस मैच में 75 गेंदों पर 98 रनों की पारी खेली थी। सचिन ने उस मैच में बेहतरीन बल्लेबाजी की थी।

विविध

गरीबी का पंक्चर जोड़ पिता ने दौड़ाई बच्चों के भविष्य की गाड़ी

जागरण विशेष ▸ तीन रुपये से शुरू की दुकान, तीनों बच्चों को बनाया काबिल

राजीव त्रिवेदी, हमीरपुर

- 40 वर्ष से कर रहे हैं सड़क किनारे पंक्चर जोड़ने का काम
- एक बेटा, दो बेटी, सभी को पढ़ा-लिखाकर बनाया आत्मनिर्भर
- बेटा एयरफोर्स में, एक बेटी उप्र पुलिस में तो दूसरी शिक्षिका

कानपुर सागर हाईवे किनारे पंक्चर सही करते नत्थू रैकवार। जागरण

पिता, जीवनदाता हैं और पालनहार भी। धूप में वह छांव हैं तो मन हारने पर विश्वास भी। मुसीबतों की बारिश में समाधान का छाता भी वही हैं। जब कदम डगमगाए तो सहारा बनकर साथ खड़े हुए और भटक गए तो सही राह दिखाई। पिता क्या हैं, यह चंद भाव हैं, लेकिन हकीकत में पिता को शब्दों में नहीं बांधा जा सकता है। हां, पिता क्या होते हैं, पंक्चर जोड़ने वाले नत्थू रैकवार की प्रेरक कहानी इसे बखूबी बयां करती है। उनके तीनों बच्चे आज सुखद जीवन की राह पर चल पड़े हैं।

नत्थू, वह शख्स हैं, जिन्होंने गाड़ी के पहियों का पंक्चर जोड़ते-जोड़ते अपने परिवार की जिंदगी का पहिया सही राह पर दौड़ा दिया। जिंदगी सही राह पर दौड़ी और तीनों बच्चे काबिल बन गए। एक देश सेवा में लगा है। दो बेटियों में एक देश के भविष्य को पढ़ा रही है तो दूसरी जनता की सुरक्षा में लगी है। कहते हैं, कोई भी काम छोटा या बड़ा नहीं होता। काम का प्रतिफल क्या होगा, यह व्यक्ति की मेहनत और नीयत पर निर्भर करता है। चाहे वह पंक्चर की दुकान ही क्यों न हो। हमीरपुर, उत्तर प्रदेश निवासी नत्थू इसी का उदाहरण हैं। उन्होंने अपनी सोच, नेक नीयत और मेहनत के बल पर पंक्चर की दुकान से अपने एक बेटे और दो बेटियों को काबिल बना दिया। नत्थू की मेहनत का फल मिला। बड़ा बेटा मिथुन कुमार एयरफोर्स में तैनात हैं। कम आय के बाद भी नत्थू ने बेटे-बेटी में अंतर नहीं किया। एक बेटी कोमल बलरामपुर जिले में शिक्षिका तो दूसरी बेटी स्वाति चित्रकूट में उत्तर प्रदेश पुलिस में तैनात है।

तीनों बच्चों की नौकरी लग जाने के बाद आज भी नत्थू टीन-टप्पर वाली अपनी वही पंक्चर की दुकान चलाते हैं। बच्चे मना करते हैं लेकिन उन्होंने काम जारी रखा। कहते हैं, जिस काम ने मुकाम दिया, उसे कैसे छोड़ दें। इसी दुकान के बूते तो बच्चों का भविष्य बना पाया हूं। जब तक शरीर में ताकत है, अपने और पत्नी लक्ष्मी के भरण-पोषण का खर्च इसी दुकान से उठाएंगे। बिटिया स्वाति कहती हैं, हम चाहते हैं कि पिता जी अब आराम करें, लेकिन वह मानते नहीं हैं। मेरे पिता सभी के लिए मिसाल हैं। वह मेरे आदर्श हैं।

नत्थू का संघर्ष चंद दिनों का नहीं बल्कि 40 वर्ष का है। मूलरूप से महोबा, उप्र के पसवारा गांव निवासी नत्थू के पिता धर्मदास रैकवार स्वास्थ्य विभाग में चौकीदार थे। इसलिए नत्थू भी हमीरपुर में भी बस गए। पढ़-लिख नहीं पाए तो घर की आर्थिक तंगी से निपटने के लिए 15-16 साल की उम्र में 90 रुपये महीने की पगार पर एक पंक्चर की दुकान में काम करने लगे। दो साल बाद उन्होंने कानपुर-सागर हाईवे किनारे टिन टप्पर लगाकर पंक्चर जोड़ने की दुकान खोली। पहला पंक्चर बनाने पर तीन रुपये मिले थे। तभी सोच लिया था कि बच्चों को पढ़ा-लिखाकर उन्हें बेहतर जिंदगी दूंगा।

जागरण विशेष की अन्य खबरें पढ़ें www.jagran.com/topics/jagran-special

अमरनाथ यात्रा : आज रवाना होगी न्यास की टोली

जासं, जम्मू : पहली जुलाई से शुरू हो रही अमरनाथ यात्रा की प्रथम पूजा में शामिल होने के लिए बाबा अमरनाथ एवं बुड्ढा अमरनाथ यात्रा न्यास की टोली रविवार को रवाना हो जाएगी। इसके लिए टोली के तीन सदस्यों का चयन कर लिया है। टीम में न्यास के उपाध्यक्ष शक्तिदत्त भी शामिल होंगे। यह टोली 17 जून सोमवार सुबह साढ़े नौ बजे ज्येष्ठ पूर्णिमा के दिन चंदनबाड़ी में होने वाली पूजा में हिस्सा लेगी। बाबा अमरनाथ श्राइन बोर्ड ने पूजा कार्यक्रम में शामिल होने के लिए बाबा अमरनाथ एवं बुड्ढा अमरनाथ यात्रा न्यास को न्योता भेजा है। उन्होंने कहा कि श्रद्धालुओं की मंगलमय यात्रा के लिए प्रथम पूजा में प्रार्थना की जाएगी।

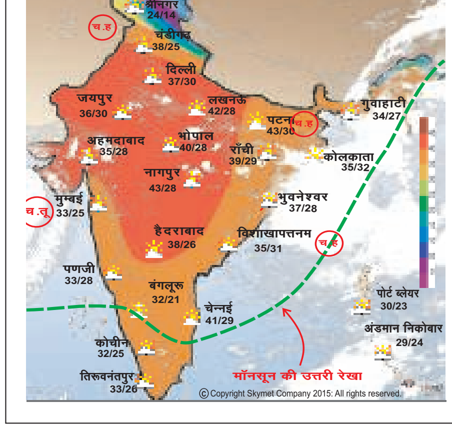

मौसम विशेष

जम्मू-कश्मीर और हिमाचल प्रदेश में पश्चिमी विक्षोभ के कारण कुछ स्थानों पर गरज और तेज हवाओं के साथ वर्षा होगी। तापमान में गिरावट होगी। पंजाब, राजस्थान, हरियाणा और दिल्ली में गरज और तेज हवाओं के साथ धूलभरी आंधी और वर्षा संभव है। तापमान में गिरावट होगी।

भारत के मुख्य शहरों का तापमानः

शहर		शहर	
मुम्बई	33/25/व	अहमदाबाद	40/28/व
कोलकाता	34/30/व	बड़ौदा	39/26/आंबा
चेन्नई	42/30/आंबा	नागपुर	42/29/व
हैदराबाद	36/27/सा	इन्दौर	38/26/सा
बंगलूरु	32/22/व	रांची	39/28/व
त्रिवेन्द्रम	34/27/व	पटना	43/31/सा
गुवाहाटी	31/27/आंबा	जमशेदपुर	36/28/आंबा
गंगटोक	19/09/आंबा	पुणे	25/23/व

छह महीने बिना मुकदमे के जेल में रहे बंद

पवन श्रीवास्तव, गाजीपुर

▸ डेढ़ वर्ष तक परिवार के किसी सदस्य से नहीं हुई मुलाकात

बाबू लाल मानव। जागरण

आपतकाल के दौरान विरोध करने पर बाबू लाल मानव को 10 अगस्त 1975 को उनके गांव करंडा से पुलिस ने गिरफ्तार कर जिला जेल में डाल दिया। छह माह तक तो बिना मुकदमा ही जेल में बंद रहे। करीब डेढ़ वर्ष तक परिवार के किसी भी सदस्य से मिलने तक की अनुमति नहीं थी। इतना ही नहीं छह जून 1976 को राशन की जांच की मांग को लेकर जेल में अनशन पर बैठ गए तो जेलर अफजाल अंसारी ने मारपीट कर पसली तक तोड़ डाली। इतना ही नहीं उन्हें गर्म सलाखों से दागा भी गया। बताते हैं, जेल में इतनी यातनाएं झेलनी पड़ीं कि अंग्रेजों की हुकूमत भी मात खा जाए।

आपातकाल के दौर का जिक्र होते ही गाजीपुर, उप्र निवासी बाबू लाल मानव का चेहरा गुस्से से लाल हो जाता है। उस समय सिर्फ सरकार के फैसले का विरोध उनके लिए किस कदर कष्टकारी था, कल्पना कर पाना भी मुश्किल है। न सिर्फ शारीरिक सितम सहना पड़ा बल्कि मानसिक वेदना और ताड़ना से भी दो-चार होना पड़ा। करंडा के बसंत पट्टी गांव के रहने वाले बाबू लाल मानव को जैसे ही पता चला कि देश में आपातकाल लग गया है, वह वाराणसी व जिले के कॉलेजों में घूम-घूमकर विरोध में जुट गए। लिहाजा, उनके खिलाफ वाराणसी व गाजीपुर के सभी थानों से वारंट जारी कर दिया गया।

वह नाग पंचमी का दिन था... : नाग पंचमी के त्योहार पर गांव के सभी लोग अपने-अपने घर मौजूद थे। तभी पुलिस टीम बाबू लाल मानव के घर धमक पड़ी। गिरफ्तारी की जानकारी होते गांव के लोग जुट गए। सबने निर्णय किया कि उन्हें नायक की तरह गाजीपुर जिला जेल तक जुलूस की शक्ल में ले चलेंगे। हालांकि पुलिस के आगे सबको विवश होना पड़ा। उन्हें तांगे द्वारा करंडा से चोचकपुर होते हुए गाजीपुर लेकर आया गया। गलत चीजों पर भला बाबूलाल भी कहां मानने वाले थे। जेल में पहुंचते ही वहां की लचर व्यवस्थाओं ने उन्हें इस तरह झकझोरा कि दूसरे दिन इसके विरोध में जेल में ही अनशन पर बैठ गए।

दर्जन भर कैदी आए थे मुझे ले जाने को... : आपबीती बयां करते हुए बाबू लाल मानव तमतमा से गए। बोले, छह जून वर्ष 1976 का दिन कभी नहीं भूल सकता। बताया कि राशन की जांच को लेकर जब भूख हड़ताल शुरू की तो जेलर अफजाल अंसारी ने बुलाने के लिए सजायफ्ता 12 कैदियों को मेरे बैरक में भेजा दिया। इसके बाद भी मैंने जाने से यह कहते हुए मना कर दिया कि मिलना हो तो जेलर खुद बैरक में आएं। ऐसे में भेजे गए कैदी मुझे जबरदस्ती उठाकर ले गए। चूंकि मैं भूख हड़ताल पर था, ऐसे में जबरदस्ती खाना खिलाने लगे। जेलर ने क्रूरता की हद पार करते हुए इस कदर और इतना मारा कि पसली की हड्डी टूट गई।

हर पेशी में इंदिरा के खिलाफ नारेबाजी... : बाबूलाल ने बताया, जब भी मुझे पेशी पर ले जाया जाता था तो मैं तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी मुर्दाबाद के नारे लगाने में तनिक भी पीछे नहीं हटता था। जेल में रहते हुए मेरे ऊपर 15 मुकदमे सरकार के खिलाफ नारेबाजी करने के लिए लाद दिए गए। अंततः मुझे लोकसभा के चुनाव के लिए पर्चा भरने को 15 फरवरी 1977 को रिहा किया गया। इमरजेंसी के दौरान का जुल्म सहने के बाद आज 'लोकतंत्र रक्षक सेनानी' के रूप में मिलने वाले पेंशन से मरीजों के बीच दूध वितरित करने का काम करता रहता हूं।

साप्ताहिक राशिफल

रविवार 16 जून, 2019 से शनिवार 22 जून, 2019 तक — पं. बी. बी. शास्त्री 'देवेश'

मेष (चू,चे,चो,ला,ली,लू,ले,लो,आ) व्यापारिक नौकरी उद्योग के कार्य में प्रगति, आत्मविश्वास की वृद्धि, कार्य करने वालों पर ध्यान रखें, साधनों की वृद्धि, उपहार सम्मान की प्राप्ति, संतान से सहयोग, मित्रों से सहयोग, ससुराल से सहयोग, यात्रा से बचें, अधिकारी से सहयोग, आय में वृद्धि, शुभ अंक 9 ।

वृष (इ,ऊ,ए,ओ,पा,वी,वू,वे,वो) व्यापारिक, उद्योग, नौकरी के कार्य में सहयोग से सफलता, सामाजिक जनों से यश उपहार, चयन के प्रति चिंता, मनोरंजन के साधन, संतान से चिंतित, चयन में देरी, खानपान पर ध्यान रखें, यात्रा का योग, धर्म में रुचि, भविष्य के प्रति योजना, आय के लिए प्रयासरत रहें, शुभ अंक 10 ।

मिथुन (का,की,कू,घ,ड,छ,के,को,हा) व्यापारिक, नौकरी, उद्योग के कार्य में सफलता, धनागम में प्रयास सार्थक, आत्मविश्वास की वृद्धि, विदेश कार्य में प्रगति, दिनचर्या व्यस्त, वाहन योग, संतान के प्रति योजना, शत्रु पक्ष प्रभावी, यात्रा में सावधानी, अधिकारी से सहयोग, व्यय अधिक, शुभ अंक 11 ।

कर्क (ही,हू,हे,हो,डा,डी,डू,डे,डो) व्यापारिक, उद्योग, नौकरी के कार्य में सफलता, अर्थसाधन में सफलता, कार्यशैली में सुधार करें, चिंता का समाधान, भूमि भवन कार्य में देरी, संतान की प्रगति, चयन में देरी, मित्रों से सहयोग, अग्नि से सावधान, ससुराल से सहयोग, भ्रमण योग, उपहार सम्मान का योग, शुभ अंक 11 ।

सिंह (मा,मी,मू,मे,मो,टा,टी,टू,टे) नौकरी, उद्योग, व्यापार के कार्य में प्रगति, अर्थ साधन अच्छा, दिनचर्या व्यस्ततम, स्वास्थ्य का ध्यान रखें, पारिवारिक जनों का विरोध, संतान से अनबन, अध्ययन में अवरोध, मित्रों से सहयोग, वाहन में सावधानी, अधिकारी से अनबन, आय में सुधार, शुभ अंक 12 ।

कन्या (टो,पा,पी,पू,ष,ण,ठ,पे,पो) व्यापारिक, नौकरी, उद्योग के कार्य में सहयोग से सफलता, अर्थ साधन अच्छा, कार्य करने वालों पर ध्यान रखें, समाज में यश, उपहार, चिंता का समाधान, संतान से सहयोग, वाद विवाद से बचें, ससुराल से सहयोग, भविष्य के प्रति योजना, भ्रमण एवं मनोरंजन योग, शुभ अंक 1 ।

तुला (रा,री,रू,रे,रो,ता,ती,तू,ते) व्यापार, नौकरी, उद्योग के कार्य में सफलता, अर्थसाधन ठीक, विदेश कार्य में प्रगति, धन आवागमन में सावधानी, चिंता का समाधान, भौतिक साधनों की वृद्धि, सतान से सहयोग, अग्नि से सावधान, खानपान पर ध्यान दें, जीवन में अंतरंगता, धर्म में रुचि, शुभ अंक 2 ।

वश्चिक (तो,ना,नी,नू,ने,नो,या,यी,यू) व्यापार, नौकरी, उद्योग के कार्य में सफलता, अर्थसाधन में प्रयास, समाज में यश, उपहार योग, कार्य करने वालों से सहयोग, सदस्य के प्रति चिंता, मनोरंजन भ्रमण योग, चयन में देरी, अग्नि से सावधान, वाद विवाद से बचें, शत्रु पक्ष से सावधान, धर्म में रुचि, शुभ अंक 4 ।

धनु (ये,यो,भा,भी,भू,धा,फा,ढा,भे) व्यापार, नौकरी, उद्योग के कार्य में प्रगति, अर्थ साधन में प्रयास, सामाजिक जनों से यश एवं उपहार, विदेश कार्य में सफलता, चिंता समाधान, संतान से सहयोग, चयन में सफलता, अग्नि से सावधान, खानपान पर ध्यान रखें, वाहन में सावधानी, भ्रमण मनोरंजन योग, शुभ अंक 5 ।

मकर (भो,जा,ज,खी,खू,खे,खो,गा,गी) व्यापार, नौकरी, उद्योग के कार्य में सफलता, धनागम ठीक, सलाह से निर्णय लें, साहस की वृद्धि, चिंता समाधान, भावुकता का योग, संतान की प्रगति, चयन में सफलता, अग्नि से सावधान, शत्रु पक्ष प्रभावी, महिला से सहयोग, अधिकारी से सहयोग, आय में प्रगति, शुभ अंक 6 ।

कुम्भ (गू,गे,गो,सा,सी,सू,से,सा,दा) नौकरी, व्यापार, उद्योग के कार्य में सफलता, धनागम में प्रयास, सामाजिक जनों से सहयोग, धन आवागमन में सावधानी, चिंताग्रस्त, वाहन योग, संतान से सहयोग, चयन में देरी, वाद विवाद से बचें, अग्नि से सावधान, भ्रमण मनोरंजन योग, रक्षा साधन कार्य में प्रगति, शुभ अंक 7 ।

मीन (दी,दू,थ,झ,ञ,दे,दो,चा,ची) व्यापारिक, नौकरी, उद्योग के कार्य में सफलता, अर्थ साधन अच्छा, उपहार यश का योग, विदेश कार्य में प्रगति, वाहन मनोरंजन साधन योग, संतान की प्रगति, शिक्षा में एकाग्रता, शत्रु से सावधान, खानपान का ध्यान रखें, ससुराल से सहयोग, अधिकारी से अनबन, शुभ अंक 8 ।

तंबाकू पर प्रतिबंध लगाने वाला पहला देश बना भूटान

2010 में आज ही भूटान तंबाकू पर पूरी तरह से प्रतिबंध लगाने वाला दुनिया का पहला देश बना था। भूटान की संसद ने टोबैको कंट्रोल एक्ट को लागू करते हुए तंबाकू की खेती, उत्पादन और बिक्री पर पूरी तरह से रोक लगा दी थी।

बहुराष्ट्रीय प्रौद्योगिकी कंपनी आइबीएम की स्थापना हुई

1911 में आज ही कंप्यूटिंग-टैबुलेटिंग-रिकॉर्डिंग कंपनी के नाम से शुरू हुई थी, जिसे 1924 में बदल कर आइबीएम (इंटरनेशनल बिजनेस मशीन) कर दिया गया। इसका मुख्यालय अमेरिका के न्यूयॉर्क शहर में है।

हिंदी सिनेमा के डिस्को डांसर मिथुन चक्रवर्ती को जन्मदिन मुबारक

हिंदी फिल्मों के प्रसिद्ध अभिनेता मिथुन चक्रवर्ती का जन्म 1950 में आज ही पश्चिम बंगाल में हुआ। 1976 में आई फिल्म मृगया से करियर की शुरुआत की। इस फिल्म में बेजोड़ अभिनय के लिए उन्हें सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का पहला राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार मिला। 1983 में आई फिल्म डिस्को डांसर ने उन्हें बड़े कलाकार को श्रेणी में लाकर खड़ा किया। हिंदी, बांग्ला समेत कई अन्य भाषाओं की लगभग 350 फिल्मों में काम किया है। 2014 से 2016 तक राज्यसभा के सदस्य रहे। प्यार झुकता नहीं, जल्लाद, गुरु और अग्निपथ उनकी कुछ बेहतरीन फिल्में रहीं।

इधर-उधर की

साइकिल से पूरा किया 64 देशों का भ्रमण

ताइपे, एजेंसी : ताइवान के रहने वाले जैकी चेन पेशे से एक इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियर थे, लेकिन चार साल पहले उन्होंने अचानक नौकरी छोड़ दी और दुनिया नापने साइकिल लेकर निकल पड़े। जैकी 54 हजार किलोमीटर का सफर तय कर 64 देशों की यात्रा कर चुके हैं, जिसमें अमेरिका, यूरोप और मध्य पूर्व के देश शामिल हैं। जैकी ने अपना सफर अमेरिका के अलास्का से शुरू किया था। फिलहाल वह अभी इजरायल के यरुशलम में हैं। जैकी की खास बात ये है कि जब भी वो किसी देश में जाते हैं तो वहां होटल में नहीं ठहरते, बल्कि अपने साथ टेंट लेकर चलते हैं, जिसे लगाकर वह आराम करते हैं। रास्तों का पता वह एप के जरिये लगाते हैं। उनका लक्ष्य एक लाख किलोमीटर का सफर तय करना है यानी इस दौरान वो कुल 100 देशों की यात्रा करेंगे।

जानलेवा है नींद न आने की बीमारी

अध्ययन ▶ दिमागी बीमारी के साथ ही हार्ट अटैक व डायबिटीज का भी बढ़ जाता है खतरा

न्यूयॉर्क टाइम्स से

एक शोध के मुताबिक अनिद्रा से परेशान रहते हैं पांच से दस फीसद प्रौढ़ व्यक्ति

वाशिंगटन : अच्छी सेहत के लिए भरपूर नींद बेहद जरूरी है। हालांकि उम्र बढ़ने के साथ-साथ नींद न आने की समस्या भी बढ़ने लगती है। अमेरिका स्थित नेशनल इंस्टीट्यूट ऑन एजिंग ने 65 व उससे अधिक उम्र के 9000 बुजुर्गों पर किए शोध के बाद पाया कि उम्र बढ़ने पर आधे से अधिक लोगों को नींद न आने और भरपूर नींद लेने में दिक्कतें आती हैं। पांच से दस फीसद प्रौढ़ लंबे समय से अनिद्रा से परेशान रहते हैं। ठीक से नहीं सो पाने के कारण उन्हें हर वक्त थकान का अनुभव होता है। लेकिन बात थकान तक ही सीमित नहीं है। नींद की कमी जानलेवा भी साबित हो सकती है। इससे हाई ब्लड प्रेशर, टाइप 2 डायबिटीज, हार्ट अटैक, डिप्रेशन, तनाव जैसी बीमारियों के साथ ही असमय मौत का भी खतरा कई गुना बढ़ जाता है। नींद न आने से सबसे अधिक व्यक्ति की मानसिक क्षमता को नुकसान होता है। इससे अल्जाइमर व डिमेंशिया जैसी दिमागी बीमारियों का खतरा भी रहता है।

नींद पूरी न होने से अल्जाइमर और डिमेंशिया होने का खतरा बढ़ जाता है। प्रतीकात्मक

पांच गुना बढ़ जाता है हाई बीपी का खतरा : पेंसिलवेनिया स्टेट यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ मेडिसिन के वैज्ञानिकों ने कई वर्षों तक 1,700 महिलाओं व पुरुषों के सोने के समय को लेकर स्वास्थ्य संबंधी आंकड़े जुटाए। आंकड़ों के अध्ययन के दौरान उन्होंने पाया कि पांच घंटे से भी कम समय तक सोने वाले बुजुर्गों में हाई बीपी का खतरा अन्य के मुकाबले पांच गुना ज्यादा बढ़ जाता है। जबकि पांच से छह घंटे की नींद लेने वाले लोगों में इसका खतरा साढ़े तीन गुना बढ़ जाता है। पांच घंटे से कम सोने वाले लोगों में डायबिटीज का खतरा भी तीन गुना अधिक बढ़ जाता है।

तनाव के कारण होती है अनिद्रा की समस्या : शोधकर्ताओं के अनुसार, नींद नहीं आने का सबसे बड़ा कारण तनाव है। तनाव की वजह से कार्टिसोल हार्मोन का स्राव बढ़ जाता है। इस हार्मोन के चलते व्यक्ति में नींद न आने की समस्या बढ़ जाती है।

दिन में न लें झपकी : विशेषज्ञों की माने तो दिन में 20 मिनट की झपकी लेने से व्यक्ति तरोताजा हो जाता है। लेकिन रात में नींद नहीं आने की परेशानी झेल रहे लोगों को इससे बचना चाहिए। शोधकर्ता एडम पी स्पीरा का कहना है, 'दिन में झपकी लेना कई लोगों के लिए फायदेमंद हैं। लेकिन कोई व्यक्ति यदि रात में अनिद्रा की समस्या से जूझ रहा है तो उसे इससे बचना चाहिए। दिन में झपकी लेने से रात में नहीं सो पाने की दिक्कत और बढ़ जाती है।'

ऐसे आएगी अच्छी नींद : रात में भरपूर नींद लेने के लिए खानपान का ध्यान रखना जरूरी है। अनिद्रा से परेशान लोगों को चाय-कॉफी के साथ ही सिगरेट और अल्कोहल से दूरी बनाए रखनी चाहिए। उन्हें घर के बाहर किसी पार्क में जाकर व्यायाम करना चाहिए। प्राकृतिक रोशनी के संपर्क में आने से व्यक्ति का बॉडीक्लॉक और सोने का समय व्यवस्थित हो जाता है। अच्छी नींद के लिए रात में हल्का भोजन करना ही सही है। इस बात का भी ख्याल रखने की जरूरत है।

आखिर कौन होगी चांद पर जाने वाली पहली महिला

वाशिंगटन, एएफपी : आखिर चांद की धरती पर जाने वाली पहली आर्टेमिस कौन होगी। आर्टेमिस यानी की चांद की देवी, ग्रीक मैथोलॉजी में आर्टेमिस को चांद के साथ ही शिकार और जंगलों की देवी भी कहा गया है। आर्टेमिस अपोलो की जुड़वा बहन भी हैं। अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा ने अपने अगले चंद्र मिशन का नाम आर्टेमिस ही रखा है। 2024 के इस मिशन में पहली बार ऐसा होगा कि जब कोई महिला चंद्रमा की सतह पर उतरेगी और पहले अंतरिक्ष यात्री नील आर्मस्ट्रांग के साथ अपना नाम भी दर्ज कराएगी। लेकिन अभी तक इस मिशन के लिए किसी भी महिला का नाम तय नहीं हो पाया है। अब सबकी नजरें इसी पर हैं कि आखिर वह महिला कौन होगी जो चंद्रमा की धरती पर अपना कदम रखेगी।

नासा का यह अभियान इसीलिए भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि मंगल मिशन पर भेजे जाने से अगली पीढ़ी के स्पेसक्रॉफ्ट्स का भी इस अभियान के जरिये परीक्षण किया जाना है। हालांकि, अभी तक कोई नहीं जानता वह महिला कौन है जो चंद्रमा पर कदम रखेंगी, पर नासा के वर्तमान रोस्टर में शामिल 12 महिला अंतरिक्ष यात्रियों में से किसी एक को यह मौका मिल सकता है। इन महिलाओं की उम्र 40 से 53 साल के बीच की है। नासा से जुड़ने से पहले ये सेना में पायलट, डॉक्टर और वैज्ञानिक रह चुकी हैं। पिछली सदी के 9वें दशक के अंत में आए हजारों आवेदनों में से इन महिलाओं का चुनाव किया गया था। अगला नील आर्मस्ट्रांग कौन होगा, यह भविष्यवाणी नहीं की जा सकती, लेकिन कई विशेषज्ञों का मानना है कि उड़ान का समय जितना नजदीक है, उसके अनुसार एक बात तो तय लगती है कि इस अभियान के लिए अलग से कोई भर्ती नहीं की जाएगी।

चंद्र मिशन

- 2024 में नासा के अंतरिक्ष यात्री उतरेंगे चंद्रमा की सतह पर
- 12 महिलाओं में से किसी एक को मिलेगा सुनहरा मौका

पूर्व अंतरिक्ष यात्री और वर्ष 1990 से 2000 तक स्पेस शटल उड़ाने वाले कमांडेंट एलीन कॉलिन ने कहा कि व्यक्तिगत रूप से वह किसी भी तरह के अंतरिक्ष यात्री के साथ उड़ान भर सकते हैं, लेकिन यदि आपके पास पर्याप्त अंतरिक्ष यात्री हैं जो पहले भी उड़ान भर चुके हैं तो ऐसे लोगों को वहां भेजना सही हो सकता है, क्योंकि उन्हें मालूम होता है कि अंतरिक्ष में उन्हें क्या करना है। नासा में वरिष्ठ अधिकारी केन बोवर्साक्स ने कहा कि कई लोग अंतरिक्ष पर जाते हैं और उनमें ऐसी क्षमता होती है कि वह वहां काम भी कर सकते हैं, लेकिन आपको पता नहीं होता है कि वह कौन हो सकता है। उन्होंने कहा 'मुझे लगता है कि अंतरिक्ष में ऐसे लोगों को भेजा जाना चाहिए जो कम से कम एक बार उड़ान भर चुके हैं। हालांकि, महिलाओं के संबंध में यह कहना बड़ा मुश्किल है, क्योंकि रोस्टर में शामिल महिलाओं से ज्यादातर ने पहले कभी अंतरिक्ष की यात्रा नहीं की है।

1958 में जब नासा की स्थापना की गई थी। तब नासा ने केवल सेना के पुरुष कर्मचारियों की ही भर्ती की थी। 1969 से 1972 तक 12 अंतरिक्ष यात्री चंद्रमा पर गए लेकिन ये सभी पुरुष ही थे। 1983 में सेली राइड पहली अमेरिकी महिला बनीं जो अंतरिक्ष पर गईं। वर्तमान में युवाओं और अनुभवी लोगों की टीम नासा के पास मौजूद है जो वर्ष 2020 तक पहली बार अंतरिक्ष की सैर सकते हैं।

नासा के रोस्टर में शामिल 12 महिला अंतरिक्ष यात्रियों में भारतवंशी सुनीता विलियम्स (दूसरी पंक्ति में सबसे बाएं) का नाम भी है। फाइल

शोध अनुसंधान

मोटापे से पुरुषों में नपुंसकता का खतरा

पुरुषों में मोटापे के कारण नपुंसकता का खतरा बढ़ जाता है। एक ताजा शोध में पाया गया है कि पिछली एक सदी में पुरुषों में नपुंसकता तेजी से बढ़ी है। इसके लिए बदलती जीवनशैली, खानपान की अनियमितता और शारीरिक गतिविधियों में कमी जैसे कारण जिम्मेदार पाए गए हैं। वैज्ञानिकों का कहना है कि पश्चिम की खानपान की शैली ने पुरुषों में मोटापा बढ़ाने का काम किया है, जो नपुंसकता के खतरे को और बढ़ा देता है। वैज्ञानिकों ने बताया कि इस परेशानी से बचने के लिए पुरुषों को शारीरिक रूप से ज्यादा से ज्यादा सक्रिय रहने और खेलों में हिस्सा लेने की कोशिश करनी चाहिए। खानपान में फल व सब्जी की मात्रा बढ़ाने और साबुत अनाज के सेवन से भी फायदा होता है। - एएनआइ

वर्चुअल बायोप्सी से होगी त्वचा कैंसर की जांच

वैज्ञानिकों ने ऐसा वर्चुअल बायोप्सी डिवाइस तैयार किया है जो स्वस्थ त्वचा और अलग-अलग बीमारियों से ग्रस्त त्वचा के बीच अंतर करने में सक्षम है। इसकी मदद से चीरफाड़ किए बिना ही त्वचा कैंसर की जांच संभव है। बिना काटे ही जांच करने के लिए इस डिवाइस में वैज्ञानिक ध्वनि तरंगों और नियर-इन्फ्रारेड प्रकाश का इस्तेमाल करते हैं। शोधकर्ता फ्रेडरिक सिल्वर ने बताया कि इस प्रक्रिया में बमुश्किल 15 मिनट का समय लगता है और मरीज को किसी तरह की असुविधा नहीं होती। इसमें ध्वनि तरंगों की मदद से घाव की सघनता और सख्ती का आकलन किया जाता है क्योंकि कैंसर कोशिकाएं सामान्य कोशिकाओं की तुलना में ज्यादा सख्त होती हैं। एक छोटा सा स्पीकर ध्वनि तरंगों की मदद से यह पता लगाने में सक्षम है कि गांठ कैंसर की है या नहीं। - आइएएनएस

धान के पौधे में फफूंद रोग की आनुवांशिक विविधता का वैज्ञानिकों ने लगाया पता

▶ शीथ ब्लाइट रोग प्रतिरोधी धान की नई किस्में विकसित करने में मिलेगी मदद

नई दिल्ली, आइएसडब्ल्यू : भारतीय वैज्ञानिकों ने धान की फसल पर लगने वाले फफूंद रोग 'राइजोक्टोनिया सोलानी' की आक्रामकता से जुड़ी आनुवांशिक विविधता का पता लगाया है। नई दिल्ली स्थित राष्ट्रीय पादप जीनोम अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिकों ने एक ताजा अध्ययन में कई जीन्स की पहचान की है जो राइजोक्टोनिया सोलानी के उपभेदों में रोगजनक विविधता के लिए जिम्मेदार हो सकते हैं। शोधकर्ताओं का कहना है कि यह आनुवांशिक जानकारी शीथ ब्लाइट रोग प्रतिरोधी धान की किस्में विकसित करने में मददगार हो सकती है।

इस शोध में राइजोक्टोनिया सोलानी के दो भारतीय रूपों बीआरएस11 और बीआरएस13 की आनुवांशिक संरचना का अध्ययन किया गया है और इनके जीन्स की तुलना एजी1-आईए समूह के राइजोक्टोनिया सोलानी फफूंद के जीनोम से की गई है। एजी1-आईए को पौधों के रोगजनक के रूप में जाना जाता है।

वैज्ञानिकों ने इन दोनों फफूंदों की आनुवांशिक संरचना में कई एकल-न्यूक्लियोटाइड बहुरूपताओं की पहचान की है तथा इनके जीनोम में सूक्ष्म खंडों के जुड़ने और टूटने का पता लगाया है। शोधकर्ताओं ने इन दोनों फफूंदों में विभिन्न जीन के उभरने और उनके विस्तार को दर्ज किया है, जिससे राइजोक्टोनिया सोलानी के भारतीय उपभेदों में तेजी से हो रहे क्रमिक विकास का पता चलता है। इस अध्ययन का नेतृत्व कर रहे नई दिल्ली स्थित राष्ट्रीय पादप जीनोम अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिक डॉ. गोपालजी झा ने बताया कि शीथ ब्लाइट के नियंत्रण के लिए प्राकृतिक स्रोतों के अभाव में इस रोग के खिलाफ प्रतिरोधक क्षमता रखने वाली चावल की किस्मों का विकास कठिन है। हम चावल की फसल और राइजोक्टोनिया सोलानी फफूंद से जुड़ी आणविक जटिलताओं को समझना चाहते हैं ताकि शीथ ब्लाइट बीमारी के नियंत्रण की रणनीति विकसित की जा सके।

राइजोक्टोनिया सोलानी फफूंद से संक्रमित धान

राइजोक्टोनिया सोलानी के कारण होने वाली शीथ ब्लाइट बीमारी धान उत्पादन से जुड़े प्रमुख खतरों में से एक है। इस फफूंद के अलग-अलग रूप विभिन्न कवक समूहों से संबंधित हैं जो चावल समेत अन्य फसलों को नुकसान पहुंचाने के लिए जाने जाते हैं। चावल की फसल में इस फफूंद को फैलने की अनुकूल परिस्थितियां मिल जाएं तो फसल उत्पादन 60 प्रतिशत तक गिर सकता है। शीथ ब्लाइट पर नियंत्रण का टिकाऊ तरीका न होना दीर्घकालिक चावल उत्पादन और खाद्यान्न सुरक्षा से जुड़ी प्रमुख चुनौती है। डॉ. झा ने बताया कि राइजोक्टोनिया सोलानी के जीन्स के अधिक अध्ययन से इस फफूंद की रोगजनक भूमिका को विस्तार से समझने में मदद मिल सकती है। इससे चावल में रोग पैदा करने से संबंधित जीन्स में अनुवांशिक जोड़-तोड़ करके शीथ ब्लाइट प्रतिरोधी धान की किस्में विकसित करने में मदद मिल सकती है।

बातचीत सार्थक बनाने के लिए फेसबुक शुरू करेगी कमेंट रैंकिंग

सैनफ्रांसिस्को, आइएनएस : किसी के द्वारा की गई सार्वजनिक पोस्ट पर बातचीत को अधिक सार्थक बनाने के लिए फेसबुक ने एक अपडेट जारी किया है, इसके तहत जिन लोगों के कमेंट यूजर्स (उपयोगकर्ताओं) के लिए सबसे ज्यादा प्रासंगिक होंगे उन्हें प्रमोट किया जाएगा। फेसबुक अब किसी की सार्वजनिक पोस्ट पर उन कमेंट्स को अधिक प्रमुखता से दिखाएगा, जो पोस्ट करने वाले व्यक्ति के वास्तविक दोस्तों द्वारा किया गया हो।

फेसबुक के प्रोडक्ट मैनेजर जस्टिन शेन ने शुक्रवार को कहा कि 'हम कम गुणवत्ता वाले कमेंट्स को प्रमुखता से न दिखाने के लिए अन्य संकेतों पर ध्यान रखेंगे। यूजर की पोस्ट पर कोई खास दोस्त भी अगर घटिया कमेंट करता है तो उसे भी प्रमुखता से नहीं दिखाया जाएगा।' इसके साथ ही उपयोगकर्ता अपनी पोस्ट पर आए कमेंट्स को मैनेज कर सकता है। फेसबुक ने कहा कि यह रैंकिंग प्रोसेस बाइ डिफॉल्ट होगी। जिन लोगों के फॉलोवर बहुत अधिक होंगे तो यह अपने आप ऑन हो जाएगी। जिन लोगों के फेसबुक पर अधिक दोस्त नहीं हैं तो यह प्रोसेस अपने आप चालू नहीं होगा।

संस्कृति की परेड

इंडोनेशिया के बाली द्वीप के देनपसार में शनिवार को शुरू हुए 41 वें बाली आर्ट फेस्टिवल के अवसर पर आयोजित कल्चर परेड में शामिल पारंपरिक पोशाक पहने युवतियों का एक दल। एक माह तक चलने वाले महोत्सव का लुत्फ उठाने बड़ी संख्या में पर्यटक यहां पहुंचते हैं। महोत्सव में महिलाएं और पुरुष आकर्षक परिधानों में नेकवालांग, रमतारी, गोंग केबर आदि पारंपरिक नृत्य की प्रस्तुति देते हैं। इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य बाली के पर्यटन को समृद्ध बनाना है। एएफपी

आर्ट से शरणार्थियों के दर्द की अभिव्यक्ति

शरणार्थियों को समर्पित यह कलाकृति 'बियॉन्ड वॉल्स' प्रसिद्ध लैंड आर्टिस्ट सायपे ने फ्रांस की राजधानी पेरिस के एफिल टावर के सामने प्रसिद्ध चैंप डे मार्स गार्डन में बनाई है। 20 जून को विश्व शरणार्थी दिवस के लिए तैयार करीब 600 मीटर की इस कलाकृति का शनिवार को अनावरण किया गया। दरअसल, एसओएस मेडिटेरेनी वह संस्था है जो समुद्री खतरों से लोगों को बचाती है। हिंसा प्रभावित लीबिया के लोग समुद्र के रास्ते दूसरे देशों में शरण लेने जा रहे हैं। इस दौरान डूबने से कई लोगों की मौत भी हो चुकी है। कलाकृति में एक-दूसरे का हाथ थामे दिखाया गया है, जिसके जरिए एक-दूसरे की मदद की अपील की गई है। एएफपी

स्क्रीन शॉट

स्कूल से साथ हैं मीजान और शारमीन सहगल

रणबीर कपूर और सोनम कपूर को संजय लीला भंसाली ने 'सांवरिया' फिल्म से बॉलीवुड में लॉन्च किया था। अब वह अपनी भांजी शारमीन सहगल और जावेद जाफरी के बेटे मीजान को 'मलाल' से लॉन्च कर रहे हैं। नए कलाकारों को एक-दूसरे को समझने में और काम करने में थोड़ी दिक्कतें महसूस होती हैं। इन दिक्कतों का सामना शारमीन और मीजान को नहीं करना पड़ा, क्योंकि दोनों एक-दूसरे को स्कूल के दिनों से जानते हैं। मीजान को भंसाली से शारमीन ने ही मिलवाया था। बकौल शारमीन, 'मैं और मीजान 17 वर्ष की उम्र से दोस्त हैं। वह मेरी जिंदगी में सबसे ज्यादा रहे हैं। मीजान 11वीं कक्षा से मेरे साथ हैं। हमने थियेटर साथ में किया है। नाटक साथ में करते थे। नाटक में मुझे उनके साथ लड़का बनाया जाता था। जब मैंने एक्टिंग का निर्णय लिया, तब वह मेरे साथ खड़े थे। मैं 'बाजीराव मस्तानी' फिल्म में असिस्ट कर रही थी। उस दौरान मीजान को मैं ऑफिस लेकर आई थी। फिल्म के लिए रणवीर सिंह का कॉस्ट्यूम ट्रायल चल रहा था। रणवीर मुंबई में नहीं थे। मैंने मीजान को कॉल करके कहा कि रणवीर नहीं हैं और उनके कपड़े तुम्हें ट्राई करने हैं। संजय सर (संजय लीला भंसाली) को इसके लिए एक हैंडसम लड़का चाहिए। तब मीजान सेट पर आ गए। संजय सर ने उन्हें देखा और जावेद सर को फोन करके कहा कि यह एक दिन बहुत बड़ा एक्टर बनेगा। 'बाजीराव मस्तानी' के बाद मैं एक्टिंग सीखने के लिए लॉस एंजेलिस चली गई और मीजान न्यूयॉर्क चले गए। मेरे साथ जाह्नवी कपूर भी एक्टिंग सीख रही थीं। मीजान वहां भी कई बार हमसे मिलने आ जाते थे।'

अक्षय कुमार ने फैंस से हाथ जोड़कर की विनती

सितारों के जीवन में उनके फैंस बहुत मायने रखते हैं। उनकी अहमियत अक्षय कुमार भी समझते हैं, इसलिए अक्षय ने अपने फैंस से हाथ जोड़कर विनती की है कि वे नकारात्मक ट्रेंड का हिस्सा न बनें। दरअसल, पिछले दिनों अक्षय के फैंस उनकी फिल्म 'सूर्यवंशी' की रिलीज तारीख बदलने की वजह से काफी नाराज थे। रोहित शेट्टी द्वारा निर्देशित अक्षय कुमार की फिल्म 'सूर्यवंशी' वर्ष 2020 में ईद के मौके पर रिलीज होने वाली थी। ईद पर ही सलमान खान और आलिया भट्ट अभिनीत फिल्म 'इंशाअल्लाह' भी रिलीज होने वाली थी। ऐसे में 'सूर्यवंशी' की रिलीज तारीख को बदल दिया गया। सलमान ने इस बात के लिए रोहित शेट्टी की तारीफ करते हुए 'सूर्यवंशी' की नई रिलीज डेट की घोषणा की थी। उन्होंने लिखा, 'मैं हमेशा उन्हें (रोहित शेट्टी को) अपना छोटा भाई समझता रहा हूं। आज उन्होंने साबित भी कर दिया है। 'सूर्यवंशी' 27 मार्च 2020 को रिलीज होगी।' इसके बाद अक्षय के फैंस नाराज हो गए। ट्विटर पर उन्होंने बायकॉट सूर्यवंशी हैशटैग करते हुए गुस्सा जाहिर किया। कई फैंस ने उन्हें अनफॉलो भी कर दिया। अब अक्षय ने फैंस के गुस्से को शांत करने के लिए एक ट्वीट किया है-'पिछले कुछ दिनों से मेरे पसंदीदा लोगों यानी आपके द्वारा निगेटिव ट्रेंड्स चलाए जा रहे हैं। मैं आपका गुस्सा समझ सकता हूं। मैं आपसे विनती करता हूं कि इस तरह के ट्रेंड को न तो शुरू करें'।

तैयारी के लिए रितिक ने देखा डेढ़ सौ घंटे का वीडियो

'काबिल' के दो सालों के बाद रितिक रोशन अब अपनी अगली फिल्म 'सुपर 30' के साथ बड़े पर्दे पर आने को तैयार हैं। इस फिल्म में वह बिहार के आनंद कुमार का किरदार निभा रहे हैं, जो गरीब पृष्ठभूमि के छात्रों को आईआईटी प्रवेश परीक्षा के लिए मुफ्त तैयारी करवाते हैं। इस किरदार के लिए रितिक ने काफी मेहनत की है। उन्होंने आनंद कुमार की दिनचर्या का लगभग डेढ़ सौ घंटे का वीडियो भी देखा है। आनंद कुमार रितिक की तैयारियों पर कहते हैं, 'फिल्म की टीम की तरफ से मेरे साथ विनोद रावत करीब दस दिनों तक रहे। उन्होंने दो-तीन एंगल से कैमरे लगा रखे थे। उन्होंने मेरे साथ लगभग डेढ़ सौ घंटे बिताए थे, जिसका वीडियो उन्होंने शूट किया था। सुबह से लेकर रात तक, मेरे उठने-बैठने और बोलचाल का अंदाज कैमरे में कैद हो रहा था। रितिक उसे प्रोजेक्टर पर देखा करते थे। कई सीन करते वक्त वह मुझसे पूछते थे कि तब क्या हुआ था। रितिक ने बहुत मेहनत की है। अक्सर मेकर्स थोड़ी-बहुत रिसर्च करके बायोपिक बना देते हैं, लेकिन इस फिल्म के दौरान टीम ने मुझे शामिल रखा।' 'सुपर 30' 12 जुलाई को रिलीज होगी।

माधुरी को याद आया बचपन

कथक में प्रशिक्षित माधुरी दीक्षित दूसरी नृत्य शैलियों में हाथ आजमाने से पीछे नहीं हटती हैं। उसकी बानगी है 'डांस दिवाने सीजन 2' का मंच, जहां उन्होंने स्टेज पर दस साल की प्रतियोगी मनस्वी के साथ भरतनाट्यम किया। माधुरी दीक्षित ने तीन साल की उम्र में कथक सीखना शुरू किया था। आठ साल की उम्र में उन्होंने अपनी पहली स्टेज परफॉर्मेंस दी थी। मनस्वी का नृत्य देखकर माधुरी दीक्षित को अपना बचपन याद आ गया।

दावा

ब्रिटेन के वैज्ञानिकों ने कहा कि टेरोडेक्टाइलस डायनासोर जैसी अद्भुत क्षमता किसी अन्य प्राणी में नहीं देखी गई

पैदा होते ही उड़ने लगता था यह डायनासोर

- जीवाश्मों के अध्ययन के आधार पर शोधकर्ताओं ने किया दावा
- अन्य सरीसृपों में अंडे से निकलने के बाद होता है पंखों का विकास
- शोध का नतीजा, डायनासोर के मां-पिता नहीं करते थे इनकी देखभाल

लंदन, प्रेट्र : वैज्ञानिकों ने विलुप्त हुए उड़ने वाले सरीसृपों के बारे में एक चौंकाने वाला अध्ययन किया है। उन्होंने बताया है कि टेरोडेक्टाइलस डायनासोर पैदा होते ही उड़ने लगता था। वैज्ञानिकों के अनुसार वर्तमान में किसी भी जीवित प्राणी के पास यह क्षमता नहीं है और जीवाश्मों के आधार पर किए गए अध्ययनों से पता चलता है कि पहले भी किसी प्राणी में इस प्रकार की अद्भुद क्षमता नहीं थी। हालांकि, चीन में पाए गए टेरोडेक्टाइलस के भ्रूण के जीवाश्मों के अध्ययन में यह पता चला था कि उनके पंख बहुत कमजोर थे और वे पूर्ण विकसित होने पर ही उड़ान भर पाते थे।

ब्रिटेन की लीसेस्टर यूनिवर्सिटी और लिंकन यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं ने इस परिकल्पना को खारिज कर दिया। उन्होंने इस डायनासोर के भ्रूण का अध्ययन किया तो पता चला कि जितने समय में टेरोडेक्टाइलस डायनासोर के पंख निकल आए थे उतने समय में तो अन्य जीवों का भ्रूण ही नहीं विकसित हो पता। बाकी सरीसृपों में अंडे से निकलने के बाद पंखों का विकास होता है, लेकिन टेरोडेक्टाइलस अंडे से बाहर निकलने के तुरंत बाद उड़ने लगता है। इस बात को अर्जेंटीना और चीन से मिले अन्य जीवाश्मों से सिद्ध भी कर दिया गया।

वर्तमान पक्षियों से कई गुना बड़ा था टेरोडेक्टाइलस डायनासोर। प्रतीकात्मक

ब्रिटेन की लीसेस्टर यूनिवर्सिटी के जीवाश्म विज्ञानी डेविड अनविन ने बताया कि टेरोडेक्टाइलस डायनासोर के मां-पिता उनकी देखभाल नहीं करते थे। उन्हें खुद ही जन्म के तुरंत बाद से खाना खोजना पड़ता था, इस लिहाज से भी उन्हें कुदरत ने इतना सक्षम बनाया कि वे जन्म के तुरंत बाद ही उड़ान भर सकें। हालांकि, जन्म के तुरंत बाद उड़ान भरना इतना सरल भी नहीं था। इस प्रक्रिया में कई टेरोडेक्टाइलस ने कम उम्र में ही अपनी जान गंवा दी।

अभी तक कई अध्ययन यह बताते हैं कि डायनासोर का व्यवहार पक्षियों और चमगादड़ों जैसा ही रहता है लेकिन शोध में इस दृष्टिकोण को भी चुनौती दी गई है। साथ ही इन जानवरों से संबंधित कई सवालों के संभावित जवाब भी दिए गए हैं। जन्म से उड़ान भरने और बढ़ने में सक्षम होने कारण इनके पंख तो बड़े होते ही थे। साथ ही वर्तमान के पंक्षियों की तुलना में भी ये कई गुना बड़े थे।

डायनासोर के जीवन की यह प्रक्रिया लंबे समय तक कैसे चलती रही होगी, यह अध्ययन का विषय है लेकिन यह भी सोचने वाली बात है कि तमाम परिवर्तनों के बाद भी इस प्रक्रिया में रुकावट क्यों नहीं आई।